तृतीय अध्याय

कवियों का साहित्यिक परिचय

इस तृतीय अध्याय के अन्तर्गत मैंने दो विभाग किए हैं । पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध । पूर्वार्द्ध में मैंने उन दिवंगत कवियों को स्थान दिया है -

§1§ दलपतराम :

सुधार विषयक कविता करने का प्रथम आदर दलपतराम को हैं । आप असली ढब की कविता करनेवालों में अंतिम और नई ढब की कविता करनेवालों में प्रथम हैं । अतः दलपतराम को आधुनिक गुजराती हिन्दी साहित्यकारों में प्रथम स्थान दिया जा सकता है । आपने हिन्दी में चार प्रबंधात्मक कृतियों का प्रदान किया है - श्रवणाख्यान, ज्ञानचातुरी, व्रजचातुरी, पुरुषोत्तमग्रंथ और प्रवीण सागर की अंतिम बारह लहरें आदि । इन कृतियों के अतिरिक्त "भाषा किरीट" नामक एक और हस्तलिखित ग्रंथ का गुजरात विद्या सभा में होना बताया जाता है । अर्वाचीन कविता के विवेचक सुंदरजी का अभिमत है कि आपके कलामानस के निर्माण में व्रजभाषा की कविता रीति का विशेष योगदान है क्योंकि उन दिनों गुजरात में उस रीति की ही शिक्षा §कच्छ के भुजनगर में महाराज लखपतसिंह द्वारा स्थापित व्रजभाषा पाठशाला§ के कारण उपलब्ध था, इतना ही नहीं किन्तु उत्तरहिन्द में उसी रीति की कविता §रीतिकालीन कविता§ को उत्तम रीति की कविता माना जाता था । .... हिन्दी कविता लिखते समय दलपतराम की कल्पना विदग्ध में विदग्ध जैसे काव्य कलारसिक वर्ग को अपना उद्देश्य समझती है । तदुपरांत हिन्दी भाषा §व्रज§ उस काल की प्रचलित गुजराती भाषा की अपेक्षा विशेष समृद्ध थी । इन दो कारणों में दलपतराम की हिन्दी कविता में जो भाषा वैभव एवं कलात्मकता प्रकट हुए हैं उतने उनकी गुजराती कविता में नहीं है ।....दलपतराम की काव्यशक्ति का उन्नत उन्मेष देखने की इच्छुकों को तो उनकी व्रजभाषा की कृतियाँ और उनमें भी विशेष करके श्रवणाख्यान का परिशीलन करना चाहिए ।"[1]

अर्वाचीन युग को जागृति व्यंजक मानसिकता को व्यक्त करनेवाली दलपतराम की दो कृतियाँ विशेष उल्लेखनीय है । 1845 में रचित "बापा नी पीपर" अर्थात् पिता का पीपलवृक्ष और दूसरी है "औद्योगिक क्रान्ति का आक्रमण" गुजरात में व्रजभाषा की ईमारत गढ़ने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

---

1. अर्वाचीन कविता : तृतीय संस्करण - पृ0 1965

§2§ नभुलाल द्विवेदी : §ई०स० 1802 – 1872§

श्री नभुलाल द्विवेदी नड़ियाद के साठोदरा नागर थे । इनका जन्म ई०स० 1802 में हुआ । आप कृष्ण और देवी के अनन्य भक्त थे । आपने संस्कृत, गुजराती, हिन्दी, उर्दू इत्यादि भाषाओं में कविता की है । आपकी भाषा में राजस्थानी और पंजाबी का भी प्रभाव दिखाई देता है । नभुवाणी नाम से आपकी कविता का एक संग्रह सन् 1903 में गुजराती प्रेस, बम्बई से प्रकाशित किया है । आपके पदों में दयाराम के पदों के समान लालित्य एवं मधुरता है । गुजराती में आपने कृष्ण की बाल लीला के सुन्दर पद लिखे हैं । आपने हिन्दी पदों में काफी दिलापल, भैरव, आसावरी, सोरठ, मल्हार, ललित, भैरवी आदि राग-रागनियों का प्रयोग किया है ।

§3§ छोटम §ई०स० 1812 – 1865§

कवि छोटम का जन्म पेटलाद तहसील के मलातज गाँव में सन् 1812 में हुआ था । ये साठोदरा नागर थे । महात्मा छोटम आजीवन ब्रह्मचारी रहे । आपने नर्मदा नदी के तट पर पुरुषोत्तम आचार्य नामक सिद्ध योगी से दीक्षा ली । आपने गुजराती में लगभग 53 ग्रन्थ लिखे हैं । आपने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में "बोधसुधा" नामक एक बृहद् हिन्दी ग्रन्थ भी लिखा था । इसके अतिरिक्त आपने हिन्दी में बहुत से पद और साखियाँ भी लिखे हैं जो § "छोटम की वाणी" "परिचित पद संग्रह" एवं अन्यान्य ग्रंथों में प्रकाशित हुई हैं । आपने नीति-विषयक सुन्दर साखियाँ भी लिखी हैं । आपने मतमतान्तर और जाति-पाँति को व्यर्थ बताया हैं और गुरु की बहुत ही प्रशंसा की है ।

§4§ श्री मगनलाल पटेल "पतील"

गज़लकार श्री पतील का जन्म गुजरात के भरूच जिले के अंकलेश्वर में 1905 में हुआ था । आपका प्रथम काव्य "नर्मदा ने प्रस्थान" 1931 में प्रसिद्ध हुआ । आपके द्वारा प्रकाशित 57 पुस्तकें हैं । आपने गुजराती में गज़ल, सॉनेट, कहानी, नाटक, रास-विवेचन, लम्बी कविता आदि लिखे हैं । जबकि हिन्दी में खंड काव्य, पद्य कथा, काव्य-संग्रह, सॉनेट, मुक्तक, काव्य नाटिका आदि लिखे हैं । आपने उर्दू भाषा में भी गज़लें लिखी हैं । हिन्दी का एक काव्य संग्रह "नयी तर्ज़" बहुत ही सुन्दर काव्य लेखन है ।

आपको चित्र एवं संगीत में विशेष रूचि रही है । आपने गुजराती, उर्दू एवं हिन्दी साहित्य में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है ।

§4§ <u>उपेन्द्राचार्य नृसिंहाचार्य :</u>

उपेन्द्राचार्य प्रसिद्ध विद्वान तथा भक्त श्री नृसिंहाचार्य के पुत्र थे । माता-पिता से प्राप्त संस्कारों के फलस्वरूप आपने सात वर्ष की आयु में योग विद्या सीख ली थी । आपने पद, गरबा, रास, कीर्तन, संवाद, आख्यान आदि की रचना की है । आपकी रचनाओं में प्रमुख हैं : "श्री उपेन्द्र-गिरागुत", "सुदामाख्यान", "शुक-जनकाख्यान", "कालीयमर्दनआख्यान" और "दुर्वासाशापआख्यान" । 1800 पंक्तियों में बद्ध "सुदामाख्यान" में पद, गीत, चौपाई, दोहा, साखी, गीति, देशी के अतिरिक्त हरिगीत, शिखरिणी आदि मात्रिक एवं वर्णिक छन्दों का प्रयोग हुआ है । इस कृति का प्रमुख लक्ष्य है अनासक्ति, कृष्ण भक्ति एवं गुरुकृपा की महिमा को प्रस्थापित करना ।

§5§ <u>मुड़िया स्वामी :</u>

श्री मुड़िया स्वामी का समय 1852 से 1929 माना जाता है । आपका मूल नाम दयानंद था । आपका जन्म 1852 के भाद्र मास की पूर्णिमा को हुआ था । बचपन से ही इनके हृदय में सत्संग एवं अध्यात्म चिंतन के प्रति आपको अधिक रुचि थी । इनकी प्रकाशित रचनाओं में गायत्री, अक्षर-चौबीस, ब्रह्म-विलास, शिष्यधर्मोपदेशिक, प्रबोध भजनावली तथा फुटकर पद हैं । इनकी भाषा सधुक्कड़ी हिन्दी है, जिस पर एक तरफ गुजराती और दूसरी तरफ पंजाबी का काफी प्रभाव है ।

§6§ <u>नृसिंहाचार्य §ई.स. 1854 - 1897§</u>

श्री नृसिंहाचार्य का समय 1854 से 1897 बताया जाता है । आपका जन्म सूरत के बड़ोद गाँव में विसनगरा नागर परिवार में 1854 में हुआ था ।

आप बाल्यकाल से ही एकान्तसेवी और वैराग्योन्मुख थे । आप संस्कृत, फारसी, हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी आदि भाषाओं के जानकार तथा वेद उपनिषद, धर्म, दर्शन आदि के अच्छे मर्मज्ञ थे । संगीत का भी आपको अच्छा ज्ञान था । अध्यात्म साधना में ये सत्संग को विशेष महत्व देते थे ।

आपके लिखे हुए 10 ग्रन्थ प्रसिद्ध है । आपकी वाणी में भाषा, छंद, संगीत एवं काव्यरूपों का वैविध्य दृष्टिगोचर होता है । अधिकांश हिन्दी पदों में व्रज और खड़ी बोली का संमिश्रण है । आपकी वाणी गरबा, गरबी, लावणी, पद, ठुमरी, साखी, होरी गजल आदि विभिन्न रूपों में निसृत हुई है । आपकी वाणी में संत, सद्गुरु, ज्ञान, नाम आदि का महात्म्य प्रतिपादन तथा माया, प्रीति, भ्रांति आदि के उन्मूलन का आग्रह किया गया है । सभी पदों तथा साखियों में बाह्याचारों का खंडन तथा स्वानुभव का प्रतिपादन किया गया है ।

§7§ <u>रत्नो भगत :</u>

श्री रत्नो भगत का जन्म सन् 1875 में भुज में हुआ था । आपकी अहीर जाति की तत्कालीन कुरीतियाँ अपने उपसदुपदेशों एवं सदाचरण से दूर करने का स्तुत्य प्रयास किया था ।

आपने हिन्दी तथा गुजराती में स्फुट पदों की रचनाएँ की हैं, जिन पर कच्छी का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है । भाषा की कुछ अव्यवस्था होते हुए भी पदों में व्यक्त भाव अत्यन्त गूढ़ एवं प्रभावोत्पादक हैं । आपने देह की नश्वरता, घट में अन्तर्यामी के निवास तथा स्वस्वरूप एवं ज्ञान के महात्म्य का वर्णन किया है ।

§8§ <u>सागर महाराज :</u>

श्री सागर का जन्म गुजरात के जम्बुसर गाँव में 1883 में हुआ । आपका मूल नाम जगन्नाथ दामोदर त्रिपाठी था । आपने संत अखा तथा सौराष्ट्र के राजकुमार तथा सुप्रसिद्ध सूफी कवि कलापी का अपने मानसगुरु के रूप में सादर स्मरण किया है और अपनी वाणी में इन दोनों समर्थ कवियों की अभिव्यक्ति का अनुसरण किया है । आपकी काव्य रचनाओं में "घायल हृदय" तथा

"दीवाने सागर : भाग-1, 2" प्रमुख हैं । संपादित रचनाओं में "गजलिस्तान" "कलापी नो केकारव", "संतों नी वाणी" तथा "अक्षयवाणी" मुख्य हैं । "दीवाने सागर भाग-1, 2" में हिन्दी रचनाएँ भी संकलित हैं । आपकी वाणी में ज्ञान एवं प्रेम का अपूर्व समन्वय है । आपके हिन्दी पद सरल एवं बोधगम्य हैं, जिनमें संस्कृत, उर्दू, फारसी तथा गुजराती के शब्दों का छूट से प्रयोग हुआ है । प्रायः सभी पद संगीतात्मकता से ओतप्रोत हैं । आपकी रचनाओं में एक ओर जहाँ कबीर और अखा के जैसे ज्ञान की गरिमा हैं, वहाँ दूसरी ओर जायसी और कलापी के जैसी प्रेम की पीर विद्यमान है ।

§9§ श्री रंग - अवधूत :

श्री रंग अवधूत का जन्म सन् 1899 में गोधरा में हुआ था । आपका मूल नाम पांडुरंग है । बचपन से ही आपके अन्तर में वैराग्य एवं देशभक्ति के भाव निहित थे । आपने दत्तात्रेय को निराकार निरंजन ब्रह्म का मूर्तरूप बनाकर भारत के प्राचीन अवधूत सम्प्रदाय की दत्तोपासना को नया स्वरूप दिया है ।

आपकी रचनाएँ हिन्दी, गुजराती, मराठी, संस्कृत एवं अंग्रेजी आदि विभिन्न भाषाओं में एवं गद्य-पद्य दोनों रूपों में उपलब्ध हैं । "अवधूती मौज" नामक ग्रन्थ में आपके हिन्दी भजन संकलित हैं । गुजराती रचनाओं में ज्ञान, उपासना एवं कर्म नामक तीन कांडों में विभाजित "श्री गुरु लीलामृत" ग्रंथ विशेष प्रसिद्ध है । छोटे ग्रन्थों में "दत्त बावनी", "पत्रगीत", "संगीत गीता" आदि विशेष प्रसिद्ध है । आपकी वाणी में कहीं प्रेम-लक्षणा भक्ति का गोपीभाव है तो कहीं यौगिक साधना का गूढ़ ज्ञान, कहीं अद्वैतानुभूतिजनित आनंद है तो कहीं सूफियों की सी प्रेम की पीर विद्यमान है ।

(9) **श्री गोविन्द गिल्लाभाई : (ई०स० 1848 – 1925)**

आपका जन्म सिहोर (सौराष्ट्र) में सन् 1848 में हुआ था । आप चौहान राजपूत थे । आपने गुजराती में "विचारदर्पण" "कुचारा पर सुधारा की चढ़ाई" और "कविसार निबंध बावनी" ऐसे तीन ग्रन्थों की रचना की है । आपने हिन्दी के मुख्य ग्रन्थों का भी गहन अध्ययन किया । आपने लगभग 32 ग्रन्थ हिन्दी में लिखे हैं । इनमें प्रमुख रचनाएँ हैं :-

नीति विनोद	श्लेष चन्द्रिका	प्रवीण सागर की
श्रृंगार सरोजिनी	पयोधर पचीसी	बारह लहरों
षड् ऋतु	प्रबोध पचीसी	लक्ष्मण बत्तीसी
पावस पयोनिधि	श्रृंगार षोडषी	प्रेम पचीसी
समस्यापूर्ति प्रदीप	भूषण मंजरी	रत्नावली रहस्य
वक्रोक्ति विनोद	विवेक विलास	छवि सरोजनी

आदि ।

(10) **श्री अरजुन भगत : (लगभग 1850 – 1900)**

श्री अरजुन भगत जाति के कोली थे । आपका जन्म भड़ौचजिले की अंकलेश्वर तहसील के एक छोटे गाँव में हुआ था । आपने ब्रजरीति की शिष्ट पद्धति से काव्य लिखे हैं जिनमें सहजिकता कम है तथा सौन्दर्य विवर्ण है । आपने हिन्दी में मुक्तकों की रचनाएँ की है । आपके हिन्दी पदों में अन्य गुजराती कवियों की तरह ही गुजराती शब्द इधर-उधर पाये जाते हैं । आप पर पूर्वगामी भक्त कवियों का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है ।

§12§ बालाशंकर कंथारीआ : §ई0स0 1856 - 1898§

आपका जन्म नड़ियाद में सन् 1856 में हुआ । आप साठोदरा नागर थे । आपने दलपतराम से काव्य शिक्षा ग्रहण की । आपने गुजराती साहित्य की अनन्य सेवा की । आप कवि, लेखक, पत्रकार, इतिहासविद् तथा पुरातत्ववेत्ता थे । आप अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी और व्रज भाषा में बहुत ही निपुण थे । इन सभी भाषाओं से साहित्य सौरभ का संचयन करके आपने गुजराती और हिन्दी भाषा एवं साहित्य को अपना विशिष्ट योग प्रदान किया ।

आपने भारती भूषण इतिहासमाला इत्यादि सामयिकों का सफल संपादन किया । भारती भूषण में आप गुजराती और व्रज के प्राचीन अप्रकाशित काव्यों को प्रकाशित किया करते थे । फारसी में वे हाफिज की गज़लों का अनुकरण करके बहुत सी गज़लें आपने लिखी हैं । आप गुजराती साहित्य के हाफिज माने जाते हैं ।

गुजरात में व्रजभाषा में लिखित "प्रवीण सागर" के समान एक महान कृति "साहित्य सिन्धु" नामक काव्य शास्त्र के ग्रन्थ के संपादन का कार्य आपने शुरू किया था । रस एवं अलंकारों के दृष्टांत देने के लिए अपने बनाये हुए कई पद एवं कवित्त आपने इस ग्रन्थ में जोड़े थे । श्री उमाशंकर जोशीजी ने "क्लांत कवि" नामक पुस्तक में इस कवि की हिन्दी कविताओं का संकलन किया है । इसके अतिरिक्त गुजराती साहित्य के मूर्धन्य इतिहासकार स्व0 अनंतराम रावलजी ने इनकी एक अप्रकाशित हिन्दी रचना "शिष्यसंताज" का जो प्रकाशन किया है उससे अपने दिवंगत गुरू ब्रह्मनिष्ठ आचार्य नृसिंहाचार्यजी के प्रति उनकी भावनाओं का निवेदन हुआ दृष्टिगत होता है ।

§13§ श्री हीराचन्द कानजी कवि :

आप मोरबी §सौराष्ट्र§ के निवासी थे । और दलपतराम एवं नर्मद के समकालीन थे । व्रजभाषा में आपकी बहुत ही योग्यता थी । आपने "पिंगलादर्श", "हीरा शृंगार" एवं "सुन्दर शृंगार" नाम के व्रजभाषा के ग्रन्थ बहुत ही प्रसिद्ध है । आपके दोनों ग्रन्थ "हीरा शृंगार" तथा "सुन्दर शृंगार" शृंगार विषयक है । आपकी कविता मधुर एवं प्रभावोत्पादक है ।

§14§ सवितानारायण :

आपका जन्म ई०स० 1840 में सूरत में हुआ था । आप वड़नगरे नागर थे । आप ब्रजभाषा और गुजराती दोनों में कविता करते थे । आपकी हिन्दी पद रचनाएँ कहानेजीधर्मसिंह द्वारा संपादित सत्संग शिरोमणि नामक काव्य संकलन में प्रकाशित है किन्तु पदों में आप की "सविता" छाप देखकर शायद भ्रम से आपको स्त्री कवयित्री जानकर आपका नाम सवितागौरी बताया गया है । वास्तव में आप नर्मद रीति के कवि हैं और संस्कृत एवं हिन्दी के कई रीतिपरक ग्रंथों के मर्मज्ञ एवं गुजरात में अनुवादक भी हैं । आपने कई संस्कृत एवं ब्रजभाषा के ग्रन्थों के गुजराती अनुवाद भी किये । आपने गुजराती एवं हिन्दी को एक दूसरे के निकट लाने की कोशिश की है । नीति सुधा तरंगिनी, सप्ता संवरण, बिहारी सतसई, कविप्रिया, श्रीकृष्ण प्रेमामृत रसायण आदि हिन्दी रचनाओं का आपने गुजराती में अनुवाद और सटीक संपादन किया है ।

§15§ श्री अविनाशानन्दजी :

आपका जन्म 1890 में वीरमगाम §गुजरात§ में हुआ था । आप विसनगरा नागर थे । आपने खाडीआ §अहमदाबाद§ के पास रहनेवाले बाजु शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन किया था । आपने वासुदेव माहात्म्य, निष्काय शुद्धि, भाषा भूषण, कविप्रिया, भाषा व्याकरण, काव्य मुलोल, रसरहस्य, हरिरस पिंगल, भागवत पिंगल, वेदांतचूर्ण आदि ग्रन्थों की रचना की है । अविनाशानन्द काव्य में आपके स्फुट पदों का संग्रह किया गया है । इसमें सत्संगी कुसंगी के लक्षण, संतों के लक्षण, पतिव्रता एवं शंखिनी नारी के लक्षण, असंत के लक्षण, श्रीजी की बाल लीला, दान लीला एवं अन्यान्य विषयों पर सुन्दर काव्य हिन्दी भाषा में मिलते हैं । आपकी भाषा प्रासादिक एवं मधुर है ।

§16§ <u>काजी अनवर मियाँ "ज्ञानी" §1843 – 1916§</u>

श्री काजी अनवर मियाँ "ज्ञानी" का जन्म वीसनगर में विक्रमार्क 1899 में हुआ । आपके निधन के पश्चात् आपके शिष्य हठीसिंह चुनीलाल तथा महासुखलाल चुनीलाल ने "अनवर काव्य" नाम से आपके काव्य का एक संग्रह प्रकट किया । इस संग्रह में आपकी गरबियाँ, भजन, पद, गजल, नसीहत इत्यादि मिलते हैं । आपकी खड़ी बोली में ही अधिक लिखा है । आपके काव्य में विषय ज्ञान, वैराग्य एवं आत्मबोध है । पदों के अन्त में आपने अपना नाम "ज्ञानी" लिखा है । आपकी रचनाएँ गुजरात में बड़ी ही लोकप्रिय है ।

आपकी वाणी में चमत्कृति अपने आप आ जाती है । हिन्दी पदों में कई उत्तम संगीत धम सुन्दर चीज भी आपने दी हैं । आपने सम्प्रदायवादी मुसलमानों को खूब फटकारा है ।

§17§ <u>इन्द्रेराय काराणी :</u>

इन्द्रेराय काराणी कच्छ भुज के सहायक शिक्षाधिकारी थे । आपने व्रजभाषा में कविता की है । आपकी गाँधी बावनी नामक 1948 में प्रकाशित ग्रंथ में गाँधीजी की महत्ता का वर्णन कविता में किया है । आपकी भाषा मधुर एवं प्रासादिक है ।

§18§ <u>कुंवरजी नथु वैद्य :</u>

आपका जन्म संवत् 1940 में हुआ । आप साधु चरित एवं परोपकारी थे । आपके कीर्तन एवं भजनों का संग्रह आपके देहान्त के बाद आपके सुपुत्र अमृतलाल कुंवरजी वैद्य ने "कुंवरजी कीर्तन संग्रह §1908§ अने भक्ति विवेक" नाम से प्रकाशित करवाया था ।

अर्वाचीन कविता के विवेचक कवि सुन्दरमजी का अभिमत है कि – "आपके भजनों में प्रसाद है । भक्ति की थोड़ी झलक भी है । गुजराती रचना की तुलना में आपकी हिन्दी रचनाएँ अधिक सुन्दर है । व्रजभाषा पर आपका काफी प्रभुत्व था । आधुनिक काल के हिन्दी सेवी गुजराती कवियों में आपका योगदान विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण है । निम्नलिखित रचना में आपने अपनी प्रियामिलन की उर्मि का सुंदर अभिव्यंजन किया है :-

पिया बिनु कोन करे जी मोरी रतियाँ
पिया परदेशी मेरी भर जोबन
रोई रोई शाम बिनु फट गई छत्तियाँ
दे दे संदेशा मैंने पिया कु बोलाया
येरा कर थक गया लिखी लिखी पत्तियाँ
कुंवरजी नो रे कंथ हठीलो
स्नेह दीपन की बुझाई गई बतियां ।

§19§ <u>दुला भाया काग : §जन्म ई0 1903§</u>

आपका जन्म भावनगर गाँव में सन् 1903 में हुआ । गुजरात के चारण कवियों में आपका मूर्धन्य स्थान है । गुजराती के साथ-साथ आपने हिन्दी में भी कविता की है । आपकी रचनाएँ कानवाणी §तीन भाग§ नाम से प्रकाशित हुई है । आपने गुजराती के साथ-साथ हिन्दी में भी दोहे, छप्पय, भजन, गीत इत्यादि की रचना की है । छन्द और भाषा पर आपका प्रभुत्व आपकी रचनाओं को सफल एवं चिरंजीवी बनाने में योग देता है । आपकी साहित्य सेवाओं एवं सामाजिक कार्य की सराहना करते हुए भारत सरकार ने आपको "पद्मश्री" उपाधि से विभूषित किया है ।

§20§ <u>सौ0 इन्दुमती ह0 देसाईजी :</u>

आपका जन्म संवत् 1951 में पेटलाद में हुआ था । आपने अंग्रेजी का 10 वीं कक्षा तक अध्ययन किया है । आपके काव्य संग्रह "श्रीकृष्ण मंजरी" §दो माला§ के दो भाग 1935 में प्रकट हो चुके हैं । प्रत्येक भाग में 108 काव्य है । आपने गुजराती के साथ-साथ हिन्दी भाषा में भी कई उत्तम काव्य लिखे हैं । काव्य की भाषा प्रासादिक एवं मधुर हैं । आपके काव्य में हम मीरा एवं महादेवी के काव्य जैसी हृदय के भावों की अनुभूति देख सकते हैं ।

§21§ कहानजी धर्मसिंह :

श्री कहानजी धर्मसिंह राजकोट नगर के निवासी थे । सौराष्ट्र के प्राचीन-अर्वाचीन-लोक साहित्य को सर्वप्रथम संकलित कर ग्रन्थ का आकार देने का गौरव आपका है । आपके द्वारा जिन कृतियों को ग्रन्थबद्ध किया गया है आज भी बहुमूल्य हैं । सत्संग शिरोमणि अर्थात् अध्यात्म भजन माला भाग-1,2 नामक हिन्दी गुजराती कविता पर संकलनों में गुजरात के कुछ ऐसे कवियों की हिन्दी कविताएँ संकलित की हैं जो आज दुर्लभ है और जो गुजरात में हिन्दी कविता रचना की व्यापकता का सबल प्रमाण है । कहानजी स्वयं भी कवि थे । "कहान काव्य" में आपकी सर्वोत्तम रचनाएँ संगृहित है । यह काव्य संग्रह ग्यारह खण्डों में विभक्त है ।

§22§ जामसुता जाडेजीजी श्रीप्रतापबाला :

जाडेचीजी प्रतापबाला जामनगर के महाराजा रिडमलजी की राजकुमारी तथा जोधपुर के महाराजा तखतसिंह की महारानी थी । आपका जन्म सं0 1891 में और विवाह सं0 1908 में हुआ था । आप परम विदुषी और भक्त कवयित्री थीं । कविता करने का शौक आपको बचपन से ही था । आपकी रचनाएँ रसयुक्त और भक्तिभावना से ओतप्रोत हैं । आपने ब्रजेन्द्रनंदन की रूप माधुरी एवं लीला माधुरी का लालित्यपूर्ण वर्णन अपने स्फुट पदों में किया है । आपके पदों का संग्रह "प्रतापकुंवरी" के नाम से प्रसिद्ध है । आपके पदों की भाषा ब्रज है, जिस पर राजस्थानी का प्रभाव दिखाई देता है । श्रीकृष्ण ही आपके एक मात्र आराध्य देव हैं । आपको ब्रजभूमि के प्रति अनन्य अनुराग है ।

§23§ <u>देवानन्द स्वामी :</u>

देवानन्द स्वामी का जन्म गुजरात के भाल क्षेत्र के बालोल गाँव में सन् 1902 ई0 को हुआ था । प्रारम्भ में आपका नाम "देवीदीन गढ़वी" था किन्तु आगे चलकर आपने स्वामीनारायण सम्प्रदाय में दीक्षा ली तब "देवानन्द स्वामी" के नाम से आप प्रसिद्ध हुए । बचपन से ही आपमें भक्ति के संस्कार विद्यमान थे । आपने गुजराती तथा मराठी में अनेक कृतियों का सृजन तथा सम्प्रदाय की "शिक्षापत्री" का मराठी में अनुवाद किया । मध्यकालीन गुजराती कवियों में मराठी भाषा में रचना करनेवाले देवानन्द स्वामी विशिष्ट माने गये हैं । आपके द्वारा रचित एक हजार कीर्तन पदों का संग्रह हस्तलिखित रूप में मुली के संग्रहालय में उपलब्ध है । आपके सैकड़ों कीर्तन पद आज भी सन्तों एवं हरिभक्तों द्वारा सत्संग समारोहों में गाये जाते हैं । आपकी कृतियाँ हैं - "ईश्वर ने ओड्ख्वानां पदो", "मायानी मोहिनी विषे", "कृष्णभजना पदो" तथा "प्रभु साथे प्रीति करवा विषे पदो" ।

आपने गुजराती, राजस्थानी तथा ब्रजभाषा में स्फुट छंदों की तथा विभिन्न राग एवं ताल में निबद्ध संगीतात्मक पदों की रचना की है । आपके पदों में सूर, तुलसी, जैसी प्रगाढ़ भक्ति भावना और दादू, रैदास जैसे सन्तों की वाणी की तरह प्रभावोत्पादकता है । गुजराती के प्रसिद्ध कवि एवं गुजरात के प्रथम आधुनिक हिन्दी कवि के रूप में स्वीकृत दलपतराम के आप काव्य-गुरु थे । आपके पदों में श्रीकृष्ण की रूपमाधुरी का बड़ा ही मधुर और अनूठा वर्णन हमें मिलता है ।

§24§ निर्मलादेवी :

निर्मलादेवी ने श्रीराधा-कृष्ण विषयक प्रेम-लक्षणा भक्ति में नित्य आसक्त हो एक विदूषी कवयित्री का उज्ज्वल रूप प्रस्तुत किया है । आपकी जन्मभूमि सूर्यपुरी थी । आपका समय सन् 1925 के आसपास का है ।

आपने वेदान्त, काव्य, दर्शनशास्त्र विषयक उपाधियाँ प्राप्त की । एक महाविदूषी और कृष्णभक्त कवयित्री के रूप में आपका व्यक्तित्व सदैव ओजस्वी रहा है । राधा-कृष्ण विषयक आपकी रचनाएँ हैं - "निर्मल रासोत्सव" §कृष्णपद संग्रह§ निर्मल-श्यामरस §कृष्णपद संग्रह§, निर्मलभाव कुसुम §कृष्ण पद संग्रह§, निर्मल रसोत्सव, निर्मल आसव, निर्मल श्यामसुधा §हिन्दी§, निर्मल-निर्झरी §हिन्दी§, निर्मल ज्योति §हिन्दी§ आदि । इन्होंने अपनी रचनाएँ गुजराती, हिन्दी और संस्कृत में की हैं ।

§25§ नीलकंठ :

नीलकंठ का जीवनवृत्त अज्ञात रहा है । आपके एक पद से ज्ञात होता है कि आप श्रीमन्त मल्हारराव गायकवाड़ के समय में विद्यमान थे । अतः आपका समय 1940 के आसपास हम मान सकते हैं । आप बड़ौदा के निवासी थे । आपने व्रजभाषा में भी राधा-कृष्ण संबंधी पद लिखे हैं ।

§26§ पिंगलशी पाताभाई नरेला §राजकवि§ :

बीसवीं सदी के प्राचीन परिपाटी के चारण कवियों में अन्तिम महाकवि थे - श्री पिंगलशी भाई नरेला । आपने अपने पिताजी को ही गुरु बनाकर काव्य-शास्त्र का अभ्यास किया था । आपके पिताजी ने भी "जलविलास" नामक एक सुंदर ग्रंथ व्रजभाषा में लिखा । संवत् 1948 में भावनगर के राजा ने आपको "राजकवि" के पद पर नियुक्त किया । आपने 1877 में तख्तप्रकाश और 1899 में महाराज भावसिंहजी की प्रशस्ति में भाव-भूषण नामक सुंदर प्रबंध काव्य का निर्माण किया । भावभूषण में दो भाग हैं - प्रथम भाग में कवि ने लगभग 190 पृष्ठों में महाराज भावसिंहजी के राजवंश का विस्तृत परिचय दिया है । द्वितीय भाग को हम रीतिपरक विभाग कह सकते हैं क्योंकि इसमें करीब 110 अलंकारों के

लक्षण उदाहरण सहित दिये हैं । प्रत्येक अलंकार के उदाहरण में महाराजा भावसिंहजी की प्रशंसा की गई है । डॉ० नटवरलाल व्यासजी का अभिमत हैं कि "भावभूषण हिन्दी साहित्य के उत्कृष्ठ ग्रंथों में अवश्य ही मूर्धन्य स्थान ले सकता है ।"

आपके काव्य का प्रधान विषय ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति निरूपण रहा है । आपके अन्य प्रमुख ग्रन्थ - कृष्णकुमार काव्य, पिंगल काव्य {भाग 1 व 2}, चित्त-चेतावणी, सुबोध-माला, कृष्ण बाललीला ना पद, सत्यनारायण कथा, पिंगलवीर पूजा, सुजाता चरित्र सतीमणी । इसके अतिरिक्त आपकी बहुत सी फूटकल रचनाएँ भी मिलती हैं । आपने राधा-कृष्ण की बारहमासी की रचना आधुनिक छन्द में की है । आपकी शब्दकला में चमत्कार है तथा रचनाएँ अनुप्रास-प्रधान हैं ।

{27} **मनुभाई त्रिवेदी :**

"सरोद" उपनाम से मार्मिक भजन लिखने वाले मनुभाई त्रिवेदी गज़ल की दुनिया में "गाफ़िल" के रूप में सुविख्यात रहे हैं । आपका निर्वाण 1971 ई० में अहमदाबाद में हुआ । आपने छन्दोबद्ध काव्य, वार्ताएं, नाटिकाएँ और चिन्तन प्रधान लेख भी लिखे हैं । स्वामी आनन्द ने इनका परिचय "महान भक्तराज" के रूप में दिया है ।

{28} **मोतीराम कहजी :**

मोतीराम का जन्म चांपानेर परगना के गोधरा महाल {जिला पंचमहाल} के गाँव शहरों {शिवपुर} में चित्रोडा नागर-परिवार में हुआ था । आपने हिन्दी में कुण्डलियाँ रची है । आपके पद रचना का वर्गीकरण तीन प्रकार से हो सकता है - राधा, गोपी और श्रीकृष्ण से सम्बद्ध पद, नीति विषयक प्रकीर्ण पद और ब्रह्मज्ञान के पद । आपके प्रमुख कृष्णकाव्य इस प्रकार हैं - दाणलीला, चातुरी-भाव-लीला, रासलीला, यशोदाजी का कृष्ण को पत्र, उद्धवजी के साथ गोपियों का कृष्ण को भेजा हुआ पत्र {गरबी-पद}, कृष्ण विरह के द्वादश मास, तिथि और वार के पद, श्रृंगार रस के पद {संख्या 33} ओधवजी का गरबा, थाल के पद {संख्या 3}, सुदामा चरित्र और नरसिंह मेहता के पिताजी का श्राद्ध ।

इन रचनाओं में मोतीराम की गोपीभाव सम्पन्न प्रेमलक्षणाभक्ति भावपूर्ण शैली में अभिव्यक्त हुई है । इसके उपरान्त आपने वैराग्य के पद §संख्या 42§, नीति और उपदेश के प्रकीर्ण छप्पय §संख्या 17§ और हिन्दी में कुण्डलिया §संख्या 7§ की रचना की है ।

§29§ यशकरणजी अचलदानजी "रत्नु"

राजकवि श्री यशकरणजी अचलदानजी "रत्नु" ईसा की 19वीं-20वीं शती के आरम्भ से लेकर 1966 ई0 तक के कालखण्ड में विद्यमान थे । आपका निवास पोरबन्दर था और पोरबन्दर राज्य के ये सम्मानित राजकवि थे । आप चारण-साहित्य ग्रन्थों के विशिष्ट अभ्यासी होने के साथ व्रजभाषा पाठशाला के शिक्षित पण्डित भी थे । आपकी रचनाओं में "गृहस्थधर्म - गुण प्रकाश बावनी" और शब्द कोश §अमरकोश§ उल्लेख्य हैं ।

§30§ याकूबखां :

याकूब खां मुसलमान थे । आपका समय 20वीं सदी है । आप बड़ौदा में रहते थे और "जमादार याकूब अली खां गरबे वाले" के नाम से प्रसिद्ध थे । आप व्रजभाषा प्रेमी और अपने समय के प्रसिद्ध गायक तथा ठुमरी रचयिता थे । ठुमरियों में आपकी कृष्णप्रीति और भक्तिभावना व्यक्त होती है ।

§31§ "करक" :

हरकिसनलाल जिवणलाल भगत §करक§ मूल निवासी सूरत के थे किन्तु व्यापार-वाणिज्य की वजह से रंगून में उनको बसना पड़ा था । रंगून में उनकी देह रहती थी और मन बंधा रहता था गुजरात-सूरत के साथ । इस सम्बन्ध में अपना अफसोस जाहिर करते हुए ये कहते हैं -

"क्या कहूं पड़ा परदेश बात किस्मत की ।"

सूरत शहरी की मधुर स्मृतियों का अंकन करते हुए ये लिखते हैं -

ये सुरत शहर गुजझार लाल रंग चटकी, ज्युं शरदपूर्णिमा गगत चाँदनी छटकी ।

उनकी रचनाओं का संग्रह करक काव्य §1930§ में प्रकाशित है ।

प्रश्नावली

प्र. 1 आपने लिखना कब शुरू किया ? आपको काव्य लिखने की प्रेरणा कहाँ से मिली ? आपकी प्रथम काव्य रचना कौन सी है ? [नाम, शीर्षक, लेखन, समय, प्रकाशन]

प्र. 2 आपके काव्य विकास के विभिन्न चरण ।

प्र. 3 आपको अपनी कौन सी रचना विशेष प्रिय है ? कारण ।

प्र. 4 आपके प्रिय कवि कौन-कौन से हैं ? क्यों ? [हिन्दी, गुजराती, संस्कृत तथा अन्य भाषा में]

प्र. 5 अपनी काव्य रचना प्रक्रिया को कृपया स्पष्ट कीजिए ।

प्र. 6 काव्य के किस पक्ष पर आप बल देते हैं ? स्वनिर्मित [शोध] या कथ्य ?

प्र. 7 आपके काव्य संग्रहों की रचना में आपका मूल लक्ष्य क्या रहा है ?

प्र. 8 आपके कवित्व के स्फुरण में किन भीतरी और बाहरी प्रेरणाओं का हाथ रहा है ?

प्र. 9 आपके विचार से कलाकार को आलोचना के प्रति क्या दृष्टिकोण अपनाना चाहिए ?

प्र. 10 अपनी किस कृति में आपको सृजन का सर्वाधिक आनन्द मिला और ऐसा लगा कि उसके माध्यम से आपने देने की अपेक्षा पाया अधिक है ?

प्र. 11 आपकी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन है या कल्पना ? या दोनों ।

प्र. 12 अपनी किस रचना को लिखते समय या उसे पूरा करने के बाद क्या आपको कभी ऐसा भी लगा है कि आपकी जिस विचार-धारा को लेकर वह चली थी उस पर अभी और सोचने समझने की गुंजाइश है ?

प्र. 13 रचना-प्रक्रिया के दौरान क्या आपको कभी ऐसा भी लगा है कि बाहर और भीतर की यथार्थताओं के पहले से लगाए गए अर्थ फीके पड़ने लगे हैं, उनके स्थान पर नये आत्म विस्मृतकारी अर्थ उभर रहे हैं और आपको सत्य के निकट से निकटतर पहुँचने का आभास मिल रहा है ?

प्र. 14 क्या कृति और कृतिकार का सृष्टि और सृष्टा का ही नाता है ? इससे अधिक कुछ नहीं ?

प्र. 15 मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण क्या है ?

प्र. 16 रागात्मक एवं बौद्धिक तत्वों का अपूर्व समन्वय आप में कैसे सम्भव हुआ ?

प्र. 17 आज का साहित्यकार जो किसी न किसी रूप में राज्याश्रय पाने की सोचने लगा है, आपके विचार में यह कहाँ तक साहित्य के हित में है ?

प्र. 18 आपने युग की भावुकता को अपना विषय बनाया है या निजी दृष्टिकोण को ?

प्र. 19 कविता की तृप्ति क्या लय की माँग है ?

प्र. 20 क्या आज की कविताओं में आज का कवि कथा (घटना) का इस्तेमाल कर रहा है ? क्या इससे कविता समृद्धि पाती है ?

प्र. 21 क्या आप अपने जीवन में आये किन्हीं संकटों का उल्लेख करना चाहेंगे, जिन्होंने आपके व्यक्तित्व और रचना के लिए ताकत दी हो ?

प्र. 22 क्या आप राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ पाते हैं ?

प्र. 23 क्या आप किसी कवि के लिए सामाजिक और राजनैतिक हलचलों में कहाँ तक सम्पृक्त होना आवश्यक समझते हैं ?

प्र. 24 आपको पाठकों के सुझाव व प्यार भरे पत्र प्राप्त होते हैं ? क्या आप उनके प्रत्युत्तर देते हैं ?

प्र. 25 आपको अपने आलोचकों से कोई शिकायत है ? क्या आप उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर निजी रूप से या पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से देते हैं ?

प्र. 26 आपको अपने पाठकों की ओर से प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिलता रहा हो और आप आलोचन की कटुता की उपेक्षा करके भी लिखते रहे हों ऐसा हुआ है क्या ?

प्र॰ 27 आपकी सर्जन के अतिरिक्त विवेचन धर्म में भी रूचि हैं या केवल अपने सर्जन में ही लीन रहते हैं ?

प्र॰ 28 आप किन-किन पुरस्कारों और उपाधियों से सम्मानित हुए हैं और किसके द्वारा ?

प्र॰ 29 आपके कृतित्व पर क्या किसी ने शोध लेखन कार्य किया है ? अगर किया है तो उसकी जानकारी दें ?

प्र॰ 30 आजकल आप क्या लिख रहे हैं ? निकट भविष्य में आपकी कौन सी नई कृति प्रकाश में आ रही है ?

प्र॰ 31 आप अन्य प्रलोभनों से बचकर कवि कैसे बनें ?

प्र॰ 32 नये रचनाकार के लिए आप कोई संदेश देना चाहेंगे ?

....

तृतीय अध्याय

कवियों का साहित्यिक परिचय

गुजरात के आधुनिक हिन्दी कवियों के व्यक्तिगत एवं कृतित्व का अंतरंग एवं बहिरंग ज्ञात हो सके इस हेतु मैंने कई प्रमुख कवियों को 3८ प्रश्नों की एक सूची भेजी थी । उन प्रमुख कवियों के उत्तरों के आधार पर इस प्रकरण में मैंने उनका प्रामाणिक साहित्यिक परिचय देने का प्रयास किया है । तत् तत् कवि की काव्य प्रवृत्तियों का विवेचन भाव पक्ष एवं कला पक्ष नामक विभागों में यथास्थान किया गया है । जिन कवियों का यहाँ संक्षिप्त परिचय दिया गया है उनमें से कई तो ऐसे समर्थ हस्ताक्षर हैं जिन पर एमफील एवं पी०एच०डी० का शोधकार्य कराया जा सकता है । भगवत्शरण अग्रवाल, किशोर काबरा, अम्बाशंकर नागर, मुकेश रावल आदि गुजरात के ऐसे कवि हैं जो गुजरात के साथ-साथ भारतीय अस्मिता का भी सही प्रतिनिधित्व अखिल भारतीय स्तर पर करते हैं । ये सभी कवि अपने-अपने क्षेत्र में अव्वल एवं सुप्रतिष्ठित हैं । डॉ० भगवत्शरण अग्रवाल और मुकेश रावल ने सैकड़ों की संख्या में हाईकू लिखे हैं जबकि किशोर काबरा की प्रतिभा विशेषकर प्रबन्धकाव्यानुकूल विशेष हैं । भगवानदास जैन की गजलें विशेष ख्याति प्राप्त है जबकि अम्बाशंकर, रामकुमार गुप्त आदि अपने गीत एवं अछांदस रचनाएँ दोनों के लिए सराहे जाते हैं । हसितबूच, मधुमालती चौकसी, विष्णुविराट, पारूकांत देसाई आदि कविमंच पर से अपनी अलग-अलग निजी प्रस्तुतियों से जनमन को थाम लेते रहे हैं ।

इस अहिन्दी भाषा भाषी के प्रदेश का साहित्यिक माहौल भी ऐसा है कि यहाँ कवयित्रियों की संख्या भी कम नहीं है । मधुमालती, शांति सेठ, सुधा श्रीवास्तव, विद्या रावल, प्रतिभा पुरोहित, मीरा रामनिवास आदि ।

चाँद, चाँदनी और केकटस की भूमिका - "जो कहना पड़ा" में अम्बाशंकर नागरजी ने अपनी कविताओं की प्रभृति एवं प्रवृत्ति के बारे में जो कहा है वह इस शोध प्रबंध में स्वीकृत गुजरात के प्रायः सभी कवियों की कविताओं के बारे में भी चरितार्थ होता है - "ये कविताएँ हिन्दी प्रदेश से थोड़े हटकर गुजरात के परिवेश में लिखी गई है । अतः संभव है हिन्दी कविता की प्रकृति - प्रवृत्ति से इन कविताओं की भंगिमा किन्चित् भिन्न हो, किन्तु यह भंगिमा ही तो अभिप्रेत है ।"

विशाल हिन्दी भाषा भाषी प्रदेश के कवियों से गुजरात के कवि, गीतकार एवं गजलकारों की भिन्नता इस बात में है कि वे तमाम गुटबंदियों, दलबंदियों एवं फिरका-परस्तियों से ऊपर उठकर पूरी निष्ठा के साथ केवल रचनाधर्मिता से जुड़े हैं । इस सम्बन्ध में डॉ० काबरा यथार्थ ही कहते हैं "गुजरात में एक अच्छी बात यह हुई कि यहाँ अकविता, अशांत, भूखी नंगी श्मशानी कविता जैसे कुरुचिपूर्ण काव्यान्दोलन नहीं चले । यहाँ गीत को लिजलिजी भावमत्त या गजल को आयातित काव्य विधा कहने का भी रिवाज नहीं है । श्रेष्ठ की स्वीकृति और निकृष्ट की उपेक्षा यहाँ का स्वभाव है ।"

§1§ <u>अम्बाशंकर नागर :</u>

गुजरात के आधुनिक हिन्दी के साहित्यकारों में डॉ० अम्बाशंकर नागर बहुमुखी प्रतिभा के मूर्धन्य साहित्यकार हैं । आपका जन्म अगस्त 1925, जयपुर राजस्थान में हुआ था । आपने सन् 1950 में राजस्थान युनिवर्सिटी से एम०ए० किया तथा बाद में 1959 में राजस्थान युनिवर्सिटी से ही पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त की । आपके द्वारा अब तक सौ से भी अधिक शोध लेख देश विदेश की स्तरीय पत्रिकाओं एवं जनरल में प्रकाशित हुए हैं । आपकी 50 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । आपके प्रमुख ग्रंथों के नाम हैं -

1.	गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रंथ, गंगा ग्र० माला, लखनऊ	1964
2.	महाकवि बिहारी कृत कविता, म०स०युनि०, बड़ौदा	1967
3.	दयाराम सतसई §सटीक§ सा०भा०प्रा०लि० इलाहाबाद	1968
4.	गुजरात के संतों की हिन्दी वाणी,	1969
5.	राष्ट्रभाषा हिन्दी और गांधीजी, कमल प्रकाशन इन्दौर	1970
6.	रसिक रंजन, लो०भा० इलाहाबाद	1984
7.	गुजरात की हिन्दुस्तानी काव्यधारा, गु०वि०पी०अहमदाबाद	19

आपकी कविताएँ, कहानियाँ, निबंध, समीक्षा आदि हिन्दी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होती रही है । चाँद चाँदनी और केक्टस आपका उत्कृष्ट काव्य संकलन है ।

प्रमलोचा कंडुकोपाख्यान पर आधारित प्रबन्ध काव्य है जिसमें महर्षि कंडु और प्रमलोचा नामक अप्सरा की कथा आपने युगीन अर्थवत्ता और आधुनिक भंगिमा के साथ प्रस्तुत की है ।

देश भक्ति, गांधीनिष्ठा, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीय साहित्य राष्ट्रभाषा आदि के प्रति युवावस्था से ही गहरा लगाव रहा होने के कारण पिछले 40 वर्षों से गांधी विद्या पीठ, अहमदाबाद के सेवक बने रहे हैं । आप ललित कलाओं में गहरी रूचि रखते हैं । चित्रकला एवं शास्त्रीय संगीत के प्रति समर्पितहैं । आप विगत 40 वर्षों से गुजरात में हिन्दी की सेवा कर रहे हैं । हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में आपका अमूल्य योगदान है । गुजरात में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का कठिन कार्य भी आप सुचारू रूप से सम्पन्न कर रहे हैं ।

आप इस समय अनेक संस्थाओं में कार्यरत हैं । जिनमें - आचार्य, महात्मा गांधी हिन्दुस्तानी पीठ तथा निर्देशक, भारतीय भाषा भवन गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद विशेष रूप से उल्लेखनीय है । आप विभिन्न संस्थाओं में सेवारत हैं तथा उनके सदस्य भी हैं यथा -

1. अध्यक्ष - हिन्दी साहित्य अकादमी {गुजरात राज्य}
2. अध्यक्ष - हिन्दी साहित्य परिषद {अहमदाबाद}
3. उपाध्यक्ष,- भारतीय हिन्दी परिषद {इलाहाबाद 1970 - 1975}
4. सदस्य - केन्द्रीय हिन्दी संस्थान {आगरा 1965 - 1970}

आप अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं -

1. बिहार सरकार द्वारा सन् 1986 में
2. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सन् 1989 में
3. 1984 में राष्ट्रपति द्वारा "सुब्रमण्यम् भारती" पुरस्कार से सम्मानित ।

आपने बचपन से ही लिखना प्रारम्भ किया । सन् 1947 में लिखी "मैं" कविता को उन दिनों हिन्दी जगत में विशेष ख्याति मिली ।

आपको लिखने की प्रेरणा साहित्यरसिक मित्रों से मिली । रचना प्रक्रिया के विषय में आपका विचार है कि प्रेरणा से जो कविता स्वतः स्फूर्त होती है वही अच्छी होती है । इसी से आप कहते हैं - "मैं सहज कविता का पक्षपाती हूँ प्रयत्न करके लिखी गई कविता प्रभावी नहीं होती, इसलिए मैं कम लिखता हूँ और छपवाता उससे भी कम हूँ ।" काव्य के कथ्य एवं शिल्प दोनों पक्षों पर आप बल देते हैं । आप मानते हैं कि कथ्य संवेदनशील और शिल्प तराशा हुआ चुस्त दुरुस्त होना चाहिए । अपनी रचनाओं में प्रेम और सौन्दर्य की इन्द्रधनुषी छटाओं को और मानव मन के रहस्यों को उजागर करना तथा समकालीन संदर्भों के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करना आपका मूल लक्ष्य रहा है । आपके कवित्व के स्फुरण में भीतरी-प्रेम, बाहरी परिस्थितियाँ और संगीत, चित्रकला आदि का विधिवत् अध्ययन एवं व्यापक जीवनबोध का हाथ रहा है । आपके विचार से कृतिकार को आलोचनाएँ जो अधिकांश प्रशस्तियाँ या निंदाएँ होती है उनकी उपेक्षा करनी चाहिए और कोई अच्छा सुझाव होतो उसे सधन्यवाद मानना चाहिए । आपकी विचार-धारा के अनुसार किसी रचना को लिखते समय या उसे पूरा करने के बाद उस पर और सोचने समझने की गुंजाइश रहती ही है । "कभी-कभी रचना प्रक्रिया के दौरान बाहर और भीतर की यथार्थताओं के पहले से लगाए गए अर्थ के स्थान पर नये आत्म विस्मृतकारी अर्थ उभरते हैं और रचनाकार को सत्य के निकट से निकटतर पहुँचने का आभास मिलता है" इस कथन से आप सहमत हैं । कृति और कृतिकार का सम्बन्ध बूँद और समुद्र का सम्बन्ध होता है । अभिन्न भी और भिन्न भी, जैसे कि सृष्टि और सृष्टा का ही नाता हो । इसीलिए आप कहते हैं "अपनी कृति का कर्ता तो मैं हूँ ही, उसका प्रथम सहृदय पाठक भी मैं ही होता हूँ ।" आप मानते हैं कि मानव जीवन भगवान का वरदान है और जगत जीव के विचरण के लिए भगवान के द्वारा निर्मित गोचर है । "जीओ और जीने दो" यही जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण है । आपकी रचनाओं में युगीन भावनाओं का अनुसरण पाया जाता है । इसलिए छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नयी कविता की झलक आपके कृतित्व में मिलती है ।

आप लय को कविता का आधार मानते हैं क्योंकि आपका कहना है कि अछांदस कविता भी लयाश्रित होती है ।

आपको अपनी रचनाओं में "शतरंज के मोहरे" विशेष प्रिय है क्योंकि इसे भारत की श्रेष्ठ सौ रचनाओं के संकलन "शतदल" में डॉ0 प्रभाकर माचवे ने स्थान दिया है । आपको श्रीमती महादेवी वर्मा एवं श्री बच्चनजी हिन्दी के कवियों में विशेष प्रिय है । अंग्रेजी में किट्स एवं शैली गुजराती में रमेश पारेख तथा उर्दू के शायर गालीब विशेष रूप से अच्छे लगते हैं ।

आपके मतानुसार आज के युग में राजनीति का जीवन अनुभव और रचना प्रक्रिया से संलग्न होना अवांछनीय होते हुए भी अपरिहार्य है । आप सामाजिक और राजनैतिक हलचलों में किसी रचनाकार का आकंठ डूबना उन्हें समझने के लिए आवश्यक मानते हैं । किन्तु उसमें सक्रिय रूप से भाग लेने पर कवि की सहृदयता बाधित हो सकती है ऐसा आपका अभिमत है ।

आप सर्जक, समीक्षक एवं संशोधक तीनों एक साथ हैं । आपके विचार से किसी भी व्यक्ति पर उसके जीवनकाल में शोध नहीं होनी चाहिए । समीक्षा लिखी जा सकती है । कवि बनने के लिए न तो प्रयास करना पड़ता है, न प्रलोभनों से बचना पड़ता है । यह एक सहज जन्मजात या संसर्गजन्य प्रवृत्ति है । नये रचनाकारों के लिए आपका सुझाव है कि - अगर कवि बनना ही हो तो नये रचनाकारों को भाषा के साथ-साथ छंदशास्त्र, चित्र, संगीत आदि कलाओं का भी ज्ञानार्जन करना चाहिए ।

अभी सन् 1995 में आपका "प्रमलोचा" नामक प्रबन्ध काव्य प्रकाशित हुआ है तथा शोध समीक्षा, कोश, ललित निबंध आदि विषयों पर ग्रन्थ प्रकाशनाधीन है । आपका सृजनशील कृतित्व एवं बहुआयामी व्यक्तित्व गुजरात के हिन्दी कवियों के लिए प्रेरणा स्रोत है । 1992 में आप के साहित्यिक त्रैमासिक भाषा सेतु का यशस्वी संपादन कर रहे हैं ।

<u>चाँद चाँदनी और कैक्टस</u>

प्रस्तुत कविता संकलन में दो विभाग हैं - §1§ चाँद और चाँदनी तथा §2§ कैक्टस । प्रथम विभाग के अन्तर्गत 32 एवं द्वितीय के अन्तर्गत 23 कविताएँ संकलित हैं । ये कविताएँ समय समय पर लिखी गई हैं किन्तु किसी भी रचना के नीचे तारीख एवं स्थान का उल्लेख नहीं होने के कारण यह नहीं कहा जा सकता कि ये कविताएँ कब और कहाँ लिखी गईं। किन्तु प्रस्तुत संकलन के शीर्षक का निर्देश करते हुए नागरजी ने"अभी-अभी मैने आँखों से आदमी को चांद पर जाकर मुट्ठीभर चंद्ररेणु चुराते देखा है", इस बोध के साथ जब से चंद्रबोध हुआ है चाँद उदास लगता है, चाँदनी फीकी नजर आती है और कैक्टस खिलखिला रहे हैं । चाँद, चाँदनी और कैक्टस के संबंध में कुछ ऐसी ही अनुभूतियों से प्रेरित होकर इस संग्रह का नाम"चाँद-चाँदनी और कैक्टस" रख दिया है" - जो लिखा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि आँम्रील और आर्मस्ट्रॉंग द्वारा में चाँद पर किए गए अभियान के दौरान के कुछ इधर उधर समय में ये रची गई है । शीर्षक को शब्द प्रतीकात्मक हैं । कवि ने अपने मन से विमल विभूति की अनुभूतियों को शब्दों में बाँधने की चेष्टा की है -

जिसको मन ही मन में गोया
दीर्घकाल तक जिसे संजोया
व्यक्त कर रहा हूँ अब उसे ही,
मन की विमल विभूति को
बाँध रहा हूँ शब्दों में अनुभूति को ।

अपनी कविताओं का शिल्प विषयक संकेत कवि यों करता है -

"बिम्ब की भाषा में कविता बोलती है
भेद अपने हृदय का वह खोलती है ।"

§33§ **भगवतशरण अग्रवाल :**

भगवतशरण अग्रवाल का जन्म 1930 में §उ०प्र०§ बरेली जिले के फतेहगंज गाँव में हुआ था । आपकी हाईस्कूल तक की शिक्षा मुरादाबाद में हुई । तत्पश्चात् पी०एच०डी० तक की शिक्षा लखनऊ में हुई । आपको एम०ए० में स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ । आपकी बहुत सी रचनाएँ हिन्दी की कई जानीमानी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं । कई सालों से आप आकाशवाणी से भी जुड़े रहे हैं । स्वतंत्र रूप से आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं -

1. शाश्वत क्षितिज §हाईकु संग्रह§
2. टुकड़े-टुकड़े आकाश §हाईकु संग्रह§
3. बस ! तुम ही तुम §गीत संग्रह§
4. खामोश हूँ मैं ! §काव्य संग्रह§
5. अकह §काव्य संग्रह§
6. प्यासी धरती खाली बादल §काव्य संग्रह§

आपकी संपादित निम्नलिखित पुस्तकें प्रेस में हैं -

1. गुजराती साहित्य का इतिहास
2. मैथिलीशरण गुप्त - संवेदना एवं शिल्प
3. संक्षिप्त दयाराम सतसई

आपने गुजरात के आधुनिक हिन्दी कवियों की रचनाओं के दो संग्रह का संपादन किया है - §1§ नवदीप, §2§ उगते सूरज

साथ ही स्वरचित हाईकु काव्य को 25 भाषाओं में अनुवाद "अर्घ्य" का संपादन भी आपने किया है ।

आप विभिन्न संस्थाओं में सेवारत है और उनके सदस्य भी है :-

1. सलाहकार - गुजरात राज्य शाला पाठ्य पुस्तक मंडल, गांधीनगर
2. अधिकृत प्रचारक - राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
3. सदस्य - भारतीय हिन्दी परिषद

4. सदस्य - गुजरात प्रांतीय प्राध्यापक परिषद् ।
5. मंत्री - नैतिक शिक्षा प्रचारिणी सभा ।
6. कारोबारी सदस्य - हिन्दी साहित्य अकादमी, गुजरात राज्य ।

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ने अपने स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर आपको विशेष रूप से सम्मानित किया था । हिन्दी साहित्य सम्मेलन {प्रयाग} ने अपने द्वारिका अधिवेशन के अवसर पर आपको साहित्य महोपाध्याय की मानद् उपाधि प्रदान कर आपका सम्मान किया था । आपके कृतित्व पर नागपुर विश्वविद्यालय से एमफिल किया गया है । आपने बचपन से ही लिखना शुरू किया । आपकी प्रथम रचना किसी पुरानी रचना में अप्रकाशित ही पड़ी रही । आपके काव्य विकास के विभिन्न चरण हैं - सर्वप्रथम समस्यापूर्ति, तत्पश्चात गीत, छंदमुक्त रचनाएँ, हाईकु {सन् 1965} काव्य, बीच-बीच में गज़लें और मुक्तक भी आपने लिखें । अपनी काव्य रचना प्रक्रिया के विषय में आपका मत है कि "आपकी मुक्तक रचनाओं में भावोन्मेष की, अनुभूतियों की अभिव्यक्ति दृष्टव्य है । आप काव्य के दोनों पक्ष रूप निर्मित या कथ्य पर बल देते हैं । आपकी रचनाओं का मूल लक्ष्य अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्तियों को सहृदय पाठकों तक पहुँचाना रहा है । आपके कवित्व के स्फुरण में भीतरी प्रेरणा के रूप में आप अदृश्य शक्ति को अर्थात् ईश्वरीय सत्ता को मानते हैं, जबकि बाहरी प्रेरणा के रूप में आपके शिक्षक श्रद्धेय श्री कृष्ण टंडनजी को मानते हैं । अपनी कविताओं के पात्रों के आधार यथार्थ जीवन के साथ साथ कल्पना को भी आप मानते हैं । आपके मंतव्य से कृति और कृतिकार का बड़ा गहरा सम्बन्ध होता है । कविता की तृप्ति के लिए आप लय को अनिवार्य नहीं मानते किन्तु अच्छी रचनाओं में लय कहीं शब्दों की तो कहीं अर्थ की रहती अवश्य है, ऐसा आप जरूर मानते हैं । आपने युग की भावुकता एवं निजी दृष्टिकोण दोनों के सम्मिश्रित रूप को अपने काव्य का विषय बनाया है । आपके विचार से कृतिकार को आलोचना के प्रति तटस्थ दृष्टिकोण अपनाना चाहिए । आपके कथनानुसार आपको आपकी सभी रचनाएँ प्रिय है किन्तु सृजन का सर्वाधिक आनन्द अपने हाईकु संग्रहों के माध्यम से मिला । स्वातंत्र्योत्तर काल में गुजराती साहित्य के इतिहास में हाईकु रचना में जो महत्त्वपूर्ण स्थान

स्नेहरश्मि का है वैसा स्थान गुजरात के आधुनिक हिन्दी हाईकु इतिहास में अग्रवालजी का है । इन्होंने भी इतने सुन्दर और अधिक हाईकु दिए हैं कि आपको "हाईकु अग्रवाल" का विरुद दिया जा सकता है ।

आपके हाईकु देखिए -

कर तो रहे -
आकाश के टुकड़े
रक्खोगे कहाँ ?[1]

ढूंढती किसे ?
बरसाने की राधा
नाच क्लबों में ।[2]

जलता नीड़
हवा दे रहे पत्ते
उसी पेड़ के ।[3]

मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण है कि "मनुष्य निमित्त मात्र है । हमें किसी के कल्याण का निमित्त बनना चाहिए, दुःख का नहीं ।"

आपके मतानुसार आप राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ मानते हैं । साथ ही आप किसी कवि के लिए सामाजिक और राजनैतिक हलचलों में सम्पृक्त होना अनिवार्य मानते हैं ।

आपके विशेष रूप से प्रिय कवि है - कालिदास, शेक्सपीयर, कीट्स, गालिब, मजाज़, सुन्दरम् और तुलसी से लेकर आधुनिक कवियों तक की काव्य-धारा है ।

1- डॉ० भगवतशरण अग्रवाल - टुकड़े टुकड़े आकाश - पृ० 25
2- डॉ० भगवतशरण अग्रवाल - शाश्वत क्षितिज - पृ० 14
3- डॉ० भगवतशरण अग्रवाल - अकह - पृ० 18

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि भयमुक्त, लोभमुक्त होकर अपने भावों को अभिव्यक्त करो ।

आपने विविध प्रकार के काव्यों की रचना की है । जैसे गीत, हाईकू, व्यंग्य गीत, प्रेम गीत, अछांदस रचनाएँ आदि जैसे –

आओ, हम बँट जायें
अलग अलग रहने की आदत डालें ।
आओ, हम अधिकारों की दुकान पर
परमिट के लिये क्यू लगायें,
कर्तव्यों को भूल जायें ।"[1]

§34§ **रमाकान्त शर्मा :**

रमाकान्त शर्मा दीर्घकाल से गुजरात के निवासी रहे । आपने एम०ए०, पी०एच०डी० किया । सन् 1957 से गुजरात में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्यशील रहे । आपको शोध, समीक्षा, गद्यकाव्य और कविता लिखने में विशेष रुचि है । आपकी यह विशेषता है कि आप आधुनिक बोध के कुंठ कवि के रूप में ख्याति प्राप्त है । आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं –

1. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य §शोध प्रबंध§
2. "चंदन वृक्ष" §गद्य काव्य§
3. उगते शब्द §काव्य संग्रह§
4. अशब्द अर्थ §काव्य संग्रह§
5. एक अर्थ §काव्य संग्रह§
6. नवद्वीप §काव्य संग्रह§
7. सबकी माटी §काव्य संग्रह§

1– डॉ० भगवतशरण अग्रवाल – खामोश हूँ मैं – पृ० 15

आपको सन् 1994 में राष्ट्रीय स्तर के "हिन्दी गरिमा पुरस्कार" से सम्मानित किया गया ।

आपने 1953 से लिखने का आरंभ किया । आपको काव्य लिखने की प्रेरणा अपने ही जीवन और प्रकृति से मिली । आपकी प्रथम काव्य रचना हैं - §1§ चींटी, §2§ बालिया । अपनी काव्य रचना प्रक्रिया के विषय में आपका मत है कि आप जीवन, जगत, प्रकृति से आत्मीय होकर ही लिखते हैं । आप काव्य के कथ्य एवं शिल्प दोनों पक्ष पर बल देते हैं । आपके शब्दों में आप शरीर - आत्मा दोनों पर बल देते हैं । आपकी कविता का मूल लक्ष्य जीवन को ऊँचा उठाना है । और मनुष्य जीवन को संवेदनशील, प्रेमात्मन्य, निर्मम, सुंदर और आनन्दमय बनाना है । आपके कवित्व के स्फुरण में विशेष रूप से प्रेम और वेदना का ही हाथ रहा है । आपके मंतव्य से कविता में लय और अर्थ दोनों का होना अत्यन्त आवश्यक है । आपकी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन और कल्पना दोनों ही रहे हैं । आपकी राय है कि किसी भी रचना को पूरा करने के बाद भी उसमें सोचने समझने की गुंजाइश जरूरी रहती है । आपके विचार से कृतिकार को आलोचना के प्रति गुण-ग्राही दृष्टिकोण अपनाना चाहिए । मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण बड़ा ही सरल है कि जीवन जैसा भी है उसे आनन्द से जिया जाय ।

आपको अपनी "सूर्यमुखी" रचना विशेष प्रिय है जो शिल्प एवं भाव दोनों से बहुत सुन्दर है । यह अप्रकाशित है । आपको सृजन का सर्वाधिक आनन्द अपने काव्य संग्रह "एक अर्थ" और "सब की माटी" से मिला है । आपने अपने काव्य का विषय मानवीय आत्मिक संवेदना को बनाया है । आपके विचार से आधुनिक कविता में कथा या घटना के इस्तेमाल से कविता समृद्धि पाती है । आपको सर्जन के अतिरिक्त विवेचन धर्म में भी रुचि है ।

आज का साहित्यकार जो किसी न किसी रूप में राज्याश्रय पाने की सोचने लगा है, आपके विचार से "ऐसे लोग साहित्यिक नहीं व्यापारी है, उन्हें सौन्दर्य नहीं स्वर्ण चाहिए ।" आप राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में

अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ नहीं पाते हैं और किसी कवि को अपनी मर्यादा में सामाजिक एवं राजनैतिक हलचलों में सम्पृक्त होना आवश्यक मानते हैं ।

आपके प्रिय कवि हैं - निराला, प्रसाद, अज्ञेय, रविन्द्रनाथ टैगोर । आपके गुजरात के विशेष प्रिय कवियों में उमाशंकर जोशी मुख्य है ।

आपकी काव्य प्रवृत्ति के बारे में हम क्या बतायें यहाँ आपकी रचनाएं ही बोलती है -

हाथ मिलाते हैं, हंसते हैं - ईमान का सौदा करने लगे है लोग ।
प्रेम से परहेज, खुशियों से भी, आज डरने लगे हैं लोग ।[1]

उन्हीं की दूसरी रचना "अथेति" से ली गई है जैसे -

कपड़े का इस्तेमाल सभ्यता नहीं, खूबसूरती जिस्म की नहीं, अंदर की ।
बेजान लाशों को, आदमी कहना अकलमंदी कहाँ ?[2]

गान करो ! हे सूर्य - पुत्र ।
निर्मल - उर - मानव, नव्य विश्व निर्माण करो ।[3]

§35§ भगवानदास जैन :

भगवानदास जैन का जन्म सन् 1938 को अहमदाबाद में हुआ । आपने प्रथम श्रेणी में एम०ए० उत्तीर्ण किया एवं साहित्य रत्न भी । काव्य सर्जन के अतिरिक्त आपको चित्रकला एवं संगीत में भी अभिरुचि है । चेतना, जिन्दा है आईना §गजल§ एवं रोशनी की तलाश आपके उल्लेखनीय काव्य संग्रह है ।

आप हाईस्कूल के अध्ययनकाल से ही कविता लेखन करते थे । आपको काव्य प्रेमी गुरुजनों से काव्य सर्जन की प्रेरणा मिली । आपको अपनी वे गजलें अधिक प्रिय हैं जिनमें आपने युगीन विसंगतियों और विद्रूपताओं को मुखरित किया है । रचना प्रक्रिया के विषय में आपका कहना है "खुली आँखों से देखता हूँ, अंतर्मुखी हो कर

---

1. डॉ० रमाकान्त शर्मा - अथेति - पृ० 14
2. डॉ० रमाकान्त शर्मा - अथेति - पृ० 20
3. डॉ० रमाकान्त शर्मा - सबकी माटी - पृ० 17।

सोचता हूँ, मन ही मन गुनगुनाता हूँ और शिद्दत के साथ महसूसने के बाद उसे व्यक्त करता हूँ, गीतों और गजलों में ढालता हूँ ।" आप काव्य में कथ्य को विशेष महत्वपूर्ण मानते हैं परन्तु शिल्प के क्षेत्र में एकदम अराजकता के भी हामी नहीं हैं । आपके काव्य का मूल लक्ष्य है आज का पीड़ित, प्रताड़ित, शोषित आम आदमी । आपके कवित्व के स्फुरण में वैयक्तिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर जिन्दगी के दुःख - दर्दों और रंजो - अलम का हाथ रहा है । आप मानते हैं कि साहित्य मूलतः चिन्तन की फलश्रुति है और चिन्तन प्रक्रिया की कहीं कोई इति नहीं होती और सोचने समझने की गुंजाइश रहती ही है ।

"आपको जिन्दा है आईना" से संतोषजन्य आनन्द मिला है । आपको लगता है कि इस रचना से आपने समाज को कुछ दिया है । आप मानते हैं कि "मैं सृष्टि को देखता हूँ, इसलिए मानता हूँ । उसके स्रष्टा की परिकल्पना में मेरी आस्था नहीं - क्षमा करें । कृति और कृतिकार तो परस्पर अन्योन्याश्रित है । उन्हें सर्व स्थल और सर्वकाल युगवत् स्मरण किया जायेगा ।" मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका पर्याप्त विधेयात्मक दृष्टिकोण है - "जब तक जगत है जब तक जीवन रहेगा, हम इस जगत में हों न हों जीवन तो कल था, आज है और कल भी रहेगा । जीवन के अभाव में जगत का मूल्य ही क्यों ?" रागात्मक एवं बौद्धिक तत्वों के अपूर्व समन्वय के विषय में आपकी राय है कि "समूचा आधुनिक युग ही बौद्धिक है फिर रचनाकार में बौद्धिकता आती है तो इसमें विस्मय की क्या बात है ? मस्तिष्क के अप्रतिहत विकास के इस युग में हम हृदय को भी साथ लिए चले हैं, यह तो साहित्य के अध्ययन - अध्यापन की ही फलश्रुति है ।"

आप लय को विशेष महत्व देते हैं । आपके मतानुसार गीत, गजल, दोहे, सवैये, कवित्त में आज कविता ढलने लगी है । लगता है कविता की मद्यात्मकता की गद्यात्मकता से लोग ऊब चले हैं और लय में कविता की तृप्ति तलाश करने लगे हैं । साहित्य का राजनीति से जुड़ना अनिवार्य है इस विषय में आपका मत है कि "यह युग ही राजनीति का है या कहिए राजनैतिक भ्रष्टाचार का है । जीवन उससे असम्पृक्त कैसे रह पाता भला ? राजनीति कविता से भी अनिवार्यतः जुड़ी है, पर कविता पर वह हावी न हो यह मैं मानता हूँ ।" कवि के लिए सामाजिक और राजनैतिक हलचलों से सम्पृक्त होना उसी हद तक आप आवश्यक समझते हैं जहाँ तक उसकी कविता निहित स्वार्थों की बदबू से प्रभावित न हो,

उसमें परमुखापेक्षिता न आ जाय और वह कोरा अनर्गल उपदेश न बन जाएं ।" आपको सर्जन के अतिरिक्त विवेचन धर्म में भी रुचि है परन्तु आत्मा तो केवल सृजन में ही रमती है ।"

आपको सन् 1992 में प्रकाशित "जिन्दा है आईना" पर गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी का प्रथम काव्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है । आपके हिन्दी के प्रिय कवियों में गोस्वामी तुलसीदास, बिहारी, प्रसाद, निराला, निरज, दुष्यन्तकुमार आदि है । गुजराती के उमाशंकर जोशी, सुन्दरम् तथा संस्कृत के कालिदास आपके प्रिय कवि हैं ।

आजकल आप प्रायः गजले ही लिख रहे हैं और शताधिक दोहे भी लिखे हैं । कभी-कभार मुक्तक, रुबाइयाँ या चतुष्पदी भी लिखते हैं । निकट भविष्य में ही आपका एक और गजल संग्रह प्रकाशित हो रहा है । नये रचनाकार के लिए आपने गजल में संदेश दिया है -

यह समय का साथियों उद्घोष है,
चीखना निष्क्रिय नपुंसक रोष है ।
यदि हवा का रुख न पहचाना कभी,
यह हमारी दृष्टि का ही दोष है ।

आपने कई प्रकार की काव्य रचना की है । जैसे गीत, गज़ल, मुक्तक आदि । आपके काव्य के भी विविध विषय रहे हैं । आशाओं का स्पन्दन, आज का अखबार, हाशियों को देख, मशीनी दौर आदि आपकी बहुत ही अच्छी रचनाएँ हैं जैसे -

"राह कांटों से भरी है, और खूं में तर क़दम
उफ न कर, उँगली उठा मत, अपनी ही सरकार है ।"[1]

---

1. स0 डॉ0 अम्बाशंकर नागर - गुजरात : समकालीन हिन्दी कविता - पृ0 16

आधुनिकता को स्पष्ट करते हुए कवि कहते हैं -

"इस मशीनी दौर में अब आदमी कुछ भी नहीं,
दफ्तरों की फाइलों से फड़फड़ाते लोग हैं ।"[1]

एक श्रेष्ठ गजलकार होने के नाते आपने यहाँ अमीरों द्वारा होता हुआ गरीबों का शोषण यहाँ प्रस्तुत किया है, जैसे -

"नींव पर जिसकी उठे आपके उत्तुंग महल
स्वेद औ "रक्त सनी" वह श्रमिक की काया है ।
कण्ठ सूखा है मरुस्थल में जब कभी अपना
अश्रु पी पी के तृषा को विवश छिपाया है ।"[2]

§36§ मुकेश रावल :

श्री मुकेश रावल का जन्म 1946 में गुजरात के नड़ियाद में हुआ । आपने 1967 में बी०ए०, 1968 में एम०ए० §स्वर्ण पदक§ किया । आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं :-

1. मुट्ठी में आक्रोश §कहानी संग्रह§ 1985
2. कल का आज §लघु कथासंग्रह§
3. भारत के तेरह प्रान्तों की सहसम्पादक पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित §200 कविताएँ, 200 क्षणिकाएं, 700 हाइकु§
4. इकतालीस काव्य संग्रहों में कविताएँ प्रकाशित तथा तेईस लघुकथा संग्रहों में लघुकथाएँ प्रकाशित ।

---

1. सं० डॉ० अम्बाशंकर नागर : गुजरात : समकालीन हिन्दी कविता - पृ० 17
2. भगवानदास जैन - जिन्दा है आईना - पृ० 16

आप देशभर की विविध साहित्यिक व सामाजिक संस्थाओं से निम्नलिखित मानद सम्मानोपाधि से अलंकृत हुए हैं -

1. श्रेष्ठ गीतकार एवं श्रेष्ठकवि, जबलपुर §म०प्र०§
2. "साहित्य श्री" एवं "साहित्य सम्राट" प्रतापगढ़ §उ०प्र०§
3. साहित्यालंकार, साहित्य सम्राट एवं हाईकू सम्राट - देवरिया §उ०प्र०§
4. सर्वश्रेष्ठ लेखक - देवरिया §उ०प्र०§
5. साहित्य भूषण - समस्तीपुर §बिहार§
6. विद्यालंकार - जमशेदपुर §बिहार§
7. साहित्यकला विद्यालंकार - मथुरा §उ०प्र०§
8. विशिष्ट नागरिक एवं राष्ट्रभाषा गौरव - नईदिल्ली
9. लघुकथा रत्न - मथुरा §उ०प्र०§
10. विद्यावाचस्पति §पी०एच०डी०§ - विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ §बिहार§ - 1995

आपके विपुल वैविध्यपूर्ण एवं स्तरीय काव्यसर्जन को लक्ष्य करके विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ बिहार की ओर से विद्यावाचस्पति §पी०एच०डी०§ की उपाधि से आपको विभूषित किया गया है । हिन्दी भाषा भाषी प्रदेश की ओर से कम उम्र में ऐसी मानद उपाधि से अलंकृत होने वाले अहिन्दी गुजराती भाषा-भाषी आप प्रथम ही हैं ।

गुजरात के आधुनिक काव्य में गीत, गजल एवं हाईकू लिखने की बलवतर प्रवृत्ति जो दिखाई पड़ती है उसमें आप हाईकू की ओर विशेष उन्मुख हुए हैं । 1964 के करीब वल्लभ विद्यानगर से प्रकाशित होने वाली "अगली कविता" नामक अनियतकालिक काव्य पत्रिका के साथ भी आप जुड़े हुए थे । भगवतशरण अग्रवालजी के पश्चात् संख्या एवं गुणवत्ता दोनों की दृष्टि से हाईकु लिखनेवाले गुजरात के कवियों में आप अग्रस्थानीय हैं । भारत भर की विविध पत्रिकाओं में आपके अब तक 900 के करीब हाईकु प्रकाशित हो चुके हैं ।

आपने 1965 से लिखने का प्रारंभ किया । आपको काव्य लेखन की प्रेरणा भीतर से ही मिली । आपकी प्रथम काव्य रचना "शुभ दीपावली" जो "हरियाणा की आवाज" नामक लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक चण्डीगढ़ {हरियाणा} से सन् 1973 में प्रकाशित हुई थी । काव्य विकास के विभिन्न चरणों में तुकान्त व अतुकान्त कविताएँ, लम्बी कविताएँ, क्षणिकाएँ, हाईकु रहा है । आपकी काव्य रचना प्रक्रिया में जीवन और प्रेम एक साथ चलते हैं । आप कथ्य पर विशेष बल देते हैं । आपके काव्य का मुख्य लक्ष्य मानव जीवन की अच्छाइयों एवं बुराइयों का चित्रण करके उसके भीतर से सही मानव को देखने का रहा है । आपके मत से आपके कवित्व के स्फुरण में वास्तविक जीवन एवं यथार्थता ही प्रेरणा का माध्यम बनी । आपकी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन एवं कल्पना दोनों हैं । आप इस बात को स्वीकारते हैं कि कविता कभी भी पूर्णत्व नहीं प्राप्त करती । उसे पूरा करने के पश्चात् भी उसमें और सोचने समझने की गुंजाइश रहती ही है । आपने निजी दृष्टिकोण को अपने काव्य का विषय बनाया है । आप इस बात को नहीं मानते कि कविता की तृप्ति के लिए लय अनिवार्य है । आप केवल अपने सर्जन में ही लीन रहते हैं ।

राज्याश्रय के विषय में आपका मंतव्य है कि किसी भी साहित्यकार केके लिए यह उचित नहीं है ।

आपको आपकी "चाँदनी रात और तुम" कविता विशेष प्रिय हैं, क्योंकि इसमें आपके मत से अपने आप को देखने का प्रयास किया है । आपको अपनी कृतियों में "वर्षा आई । वर्षा आई ।" तथा "कुर्सी का प्रेमी" इन दो कृतियों के सृजन में सर्वाधिक आनन्द मिला । प्रकृति के कवि होने के नाते सुमित्रानन्दन पंत एवं नये कवि होने के नाते श्री नरेश मेहता आपके विशेष प्रिय कवि हैं । गुजराती में उमाशंकर जोशी और संस्कृत में कालिदास आपके प्रिय कवि हैं ।

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि नया रचनाकार नयापन लायें । किसी से न डरें और किसी प्रलोभन में न फँसे ।

§37§ **श्री जयसिंह "व्यथित"**

श्री जयसिंह बहादुरसिंह राजपूत "व्यथित" का जन्म 1937 में उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले के विक्रमपुर गाँव में हुआ था । आपने बी०ए०, बी०एड० किया । आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं :-

1.	गीत निर्झर	§काव्य संग्रह§	1979
2.	गीत निर्झर	§बाल संस्करण§	1979
3.	आर्तनाद	§खंड काव्य§	
4.	दलितों का मसीहा	§प्रबंध काव्य§	
5.	राघवेन्द्र	§प्रबंध काव्य§	
6.	बालकृष्ण	§खंड काव्य§	
7.	युग दर्पण	§काव्य संग्रह§	
8.	श्री हनुमान तीसिका	§खंड काव्य§	

आपका व्यक्तित्व प्रबंधात्मक अर्थात् चिंतनशील, विभिन्न f यकों एवं कथावस्तुओं के समान गंभीर एवं प्रौढ़ है । पिछले तीन वर्षों 1993 से आप "रेत बरेरा" नामक हिन्दी मासिक सामयिक निकाल रहे हैं जिनके द्वारा गुजरात एवं गुजरातेत्तर प्रदेशों के कवियों एवं उनके प्रदान का परिचय होता रहता है । किशोर काबरा एवं व्यथितजी के विभिन्न खंड काव्य एवं प्रबंध काव्य के प्रकाशन से पता चलता है कि गुजरात के साहित्यप्रेमी द्रुतगति से भागते रहने वाले जटिल युग के गीत, गजल एवं हाईकु के उपरान्त प्रबंधात्मक कृतियों के भी अभिभावक एवं प्रशंसक रहे हैं ।

आपको "दलितों का मसीहा" §प्रबंध काव्य पर डॉ० आम्बेडकर राष्ट्रीय अस्मितादर्शी साहित्य अकादमी उज्जैन" ने "कवि संत रैदास - कवि रत्न" की मानद उपाधि से अलंकृत किया है ।

§38§ कु0 मधुमालती चौकसी :

कु0 मधुमालती चौकसी का जन्म 1933 में गुजरात के बड़ौदा शहर में हुआ था । किशोर अवस्था में अस्वस्थता के कारण पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी । तत्पश्चात् एस0एस0सी0 की परीक्षा उत्तीर्ण की । राष्ट्रभाषा के प्रति अनन्य अनुराग होने से गुजराती भाषी होते हुए भी राष्ट्रभाषा रत्न हुई और समिति की प्रचारक, परीक्षक एवं पेपर सेटर भी रही । तत्पश्चात् साहित्य रत्न हुई ।

आपका प्रथम काव्य संग्रह "भाव निर्झर" सन् 1982 में प्रकाशित हुआ जो हिन्दी साहित्य जगत में चर्चित रहा । केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार द्वारा 1984 में आपको एवॉर्ड मिला । तत्पश्चात् इसके लिए अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित किया गया । जिसमें प्रमुख है -

1. अखिल हिन्द महिला परिषद
2. बैंक ऑफ बड़ौदा
3. राष्ट्रभाषा प्रचार मंडल
4. गुजरात रिफाईनरी
5. मधुमालती चौकसी अभिनंदन समिति ।

भारत में हिन्दी की सुप्रसिद्ध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में 1954 से अब तक आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही है । आप अनेक वर्षों से आकाशवाणी से जुड़ी हुई हैं । समय-समय पर आपकी गुजराती कविताएँ तथा हिन्दी की कहानियाँ भी प्रकाशित हुई हैं और एवॉर्ड मिलने पर आपका इन्टरव्यु भी आकाशवाणी पर प्रसारित हुआ था । आपने अब तक लगभग 3000 विद्यार्थियों को निःशुल्क राष्ट्रभाषा हिन्दी की शिक्षा दी । इस प्रकार आपका हिन्दी के

प्रचार एवं प्रसार में उल्लेखनीय योगदान रहा है । आपको अध्ययन एवं अध्यापन तथा संगीत में विशेष रुचि है ।

आपने सन् 1950 से अर्थात् बचपन से ही लिखने का आरंभ किया । आपको काव्य लेखन की प्रेरणा पू०गुरुजी पं० ललितकिशोरजी शर्मा से मिली । ई०सन् 1954 में साप्ताहिक धर्मयुग के 6 मई के अंक में आपकी प्रथम रचना "ये मेघ न गरज गरज बरसे" (शीर्षक गीत) प्रकाशित हुई । आपके काव्य विकास के विभिन्न चरण इस प्रकार है । प्रारम्भ में आपने गीत लिखे, बाद में मुक्तछंद में भी लिखा । तत्पश्चात् "पार्थ प्रतिज्ञा" नामक खंड काव्य लिखा और ब्रजभाषा में छंद लिखे । आपके मत से काव्य रचना प्रक्रिया एक विशेष प्रकार की अनुभूति होती है । आपकी रचनाओं का मूल लक्ष्य अपनी भावानुभूति का भावकों तक पहुँचाना तथा परम सत्य के निकट पहुँचना ही रहा है । आपके कवित्व के स्फूरण में स्वजनों एवं काव्यप्रेमियों का प्यार और वर्षों तक सतत चलनेवाली अस्वस्थता के कारण सही हुई वेदना ही बाहरी और भीतरी रूप से प्रेरणादायक रही ।

आपके कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन एवं कल्पना दोनों हैं । आप इस बात का स्वीकार करती हैं कि किसी रचना को पूरा करने के बाद भी उस पर और सोचने समझने की गुंजाइश रहती ही है । कृति और कृतिकार के विषय में आपका मंतव्य है कि सर्जन आपके लिए चित्त और कल्पना विहार नहीं अपितु उत्कट आध्यात्मिक साधना है । कवि की सारी अनुभूतियाँ साधना की वेदी में झोंकने पर ही अग्नि की शिखा की तरह कृति प्रकट होती हैं । सच्चा सर्जन अपने सर्जक का भी नए रूप में सर्जन करता है । यही सर्जन की कसौटी है । प्रायः पीड़ा की आँच में तपकर कृति संशुद्ध होती है फिर भावाश्रुओं में स्नानकर निर्मल होती है तभी उसमें पारदर्शिता और सरलता होती हैं जो मन के मैल को दूर करती है ।

रागात्मक एवं बौद्धिक तत्वों का अपूर्व समन्वय आपमें निरंतर साधना, मनन, मंथन एवं चिन्तन से सम्भव हुआ । आपके मत से शब्द में अपूर्व शक्ति है ।

वह सबको सिद्ध नहीं होती । उसके लिए तपश्चर्या की आवश्यकता होती है ।
क्षर को अक्षर बनानेवाला विरला ही होता है । उसे शब्द की पहचान होती
है । वह शब्द में जिस संकेत को व्यक्त करता है वह उसके अस्तित्व के अर्क के
समान होते है । इसी से उसके शब्द हमारी चेतना के स्तर के पार पहुँचकर
भीतर तक छु जाते हैं और हमारे अंतरमन को आकर्षित करते हैं ।

मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका विधायक दृष्टिकोण है ।
आलोचना के प्रति आपका तटस्थ दृष्टिकोण है । लय को आप काव्य में अनिवार्य
मानती हैं । आपके मत से कविता की समृद्धि कवि प्रतिभा पर निर्भर होती है ।
आप केवल अपने सर्जन में ही लिन रहती है । आपके काव्य का विषय निजी
दृष्टिकोण रहा है ।

साहित्यकार के लिए राज्याश्रय पाना योग्य नहीं मानती । आपके
विचार से ये साहित्य के हित में नहीं है । आप मानती है कि किसी भी
कवि का राजनीति एवं समाज से जुड़े रहना समाज को सुग्रथित रखने के लिए
आवश्यक है । अतः जीवन अनुभव एवं रचना में इसका प्रभाव होना स्वाभाविक
है किन्तु आपके विचार से कवि को सामाजिक एवं राजनैतिक हलचलों का सम्यक
रूप से अध्ययन करके उनका तटस्थता से विश्लेषण करना उचित होगा ।

आपकी विशेष प्रिय कृति जिसमें आपको सृजन का सर्वाधिक आनन्द मिला
वह है - "ओ मेरे चिर नूतन धृतिमान परम पुरुष" है । आपके प्रिय कवि सूरदास,
तुलसीदास, मीरा, घनानंद, बिहारी आदि है । आधुनिक कवियों में निरालाजी,
महादेवी, प्रसाद एवं बच्चनजी है । गुजराती में श्री उमाशंकर जोशी, सुन्दरम्,
रमेश पारेख विशेष प्रिय है । जबकि संस्कृत में कालिदास, भाष, भर्तृहरि आदि
है ।

आपके कृतित्व पर सन् 1964 में कानपुर की सुश्री शीला अग्निहोत्री
ने तथा डॉ० सियाराम प्रसाद ने प्रबंध लिखा है ।

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि - केवल प्रसिद्ध प्रशस्ति एवं
पुरस्कार पाने के लिए न लिखकर महाकवियों की तरह ठोस कृतियों की रचना
करने की ओर प्रवृत्त होना चाहिए ।

आपकी रचनाओं में प्रेम की मादकता है, श्रृंगार की सरसता है, यौवन की ऊष्मा है, जीवन का अभिनन्दन है । इन कविताओं में हृदय की इन्द्रधनुषी भावनाओं का चित्रण हमें मिलता है । साथ ही इनमें मन-प्राणों को सराबोर कर देनेवाला निर्झर का अजस्र प्रवाहमान तो है ही, शान्ति और विश्रान्ति का एक प्यारा सा आश्वासन भी है । एक ओर हमें वेदना और करुणा की अन्तर्धारा का सिंचन इस काव्य कानन में मिलता है तो दूसरी ओर प्रकृति के विभिन्न कार्य व्यापार मन को मुग्ध और आनन्दित करते हैं जैसे -

कलकल छलछल
झन् झन्-झन झन्
छन् छननन छन्
पायल खनकी जलधारा की
कोमल, गतिमय निज चरणों को
प्रस्तर की छाती पर धरकर
रसकण बिखराती चली धार
स्पंदित अपनी में नवल प्यार ।[1]

वेदना को मुखरित ह करते हुए -

कट गए हैं पंख, पंछी गिर गया नभ से धरा पर
कसकते हैं घाव फिर भी कुछ नहीं लाया गिरा पर
तुम बताओ क्या मरण की वेदना वरदान बनती,
या अधूरी साध निश्चल प्यार का अभिमान बनती
वेदना मेरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई ।[2]

1- कु0 मधुमालती चौकसी - भाव निर्झर - पृ0 78
2- कु0 मधुमालती चौकसी - भाव निर्झर - पृ0 13

(39) <u>डॉ० किशोर काबरा :</u>

डॉ० किशोर काबरा का जन्म सन् 1934 में मध्यप्रदेश के मंदसौर में हुआ था । आपने विक्रम विश्वविद्यालय से एम०ए० तथा गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद से पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त की । आपकी प्रकाशित कृतियाँ निम्नलिखित हैं :-

1.	तितली के पंख	(बाल गीत)	
2.	जलते पनघट : बुझते मरघट	(काव्य संग्रह)	1973
3.	सारथि, मेरे रथ को लौटा ले	(काव्य संग्रह)	1976
4.	परिताप के पांच क्षण	(प्रबंध काव्य)	1976
5.	नरो वा कुंजरो वा	(प्रबंध काव्य)	1980
6.	धनुष भंग	(प्रबंध काव्य)	1979
7.	टूटा हुआ शहर	(काव्य संग्रह)	1979
8.	साले की कृपा	(हास्य व्यंग्य कविताएँ)	
9.	टिमटिम तारे	(बाल गीत)	
10.	बाल रामायण	(कथा काव्य)	
11.	बाल कृष्णायन	(कथा काव्य)	
12.	ऋतुमती है प्यास	(काव्य संग्रह)	1988
13.	उत्तर महाभारत	(प्रबंध काव्य)	1990
14.	रीतिकालीन काव्य में शब्दालंकार	(शोध प्रबंध)	1973
15.	आज यौवन ने पुकारा देश को	(काव्य संग्रह)	
16.	एक चुटकी आसमान	(लघु कथा)	1978
17.	शब्द चित्रावली	(बाल साहित्य)	
18.	भारत दर्शन	(बाल साहित्य)	
19.	उत्तर रामायण	(प्रबंध काव्य)	
20.	साहित्य निबंध		1994
21.	एक टुकड़ा जमीन	(लघुकथा संग्रह)	1992

इसके अलावा आपने 12 गुजराती ग्रंथों के हिन्दी अनुवाद किये हैं एवं प्राथमिक एवं माध्यमिक पाठशालाओं के हिन्दी अभ्यास क्रम के लिए 75 पाठ्य पुस्तकों का सहलेखन एवं संपादन भी किया है । इस तरह आप हिन्दी जगत के एक सुप्रतिष्ठित जानेमाने साहित्यकार हैं । गुजरात के आधुनिक हिन्दी कवियों में आपका एक विशिष्ट स्थान है ।

आपको उत्तर प्रदेश अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । आपको "महाकवि राष्ट्रीय आत्मा" पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है । आपको "अर्चना" पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है । हिन्दी जगत में आप प्रस्थापित कवियों की पंक्ति में माने जाते हैं । गुजरात में कुछ ऐसे साहित्यकार हैं जो बच्चों की मानसिकता के अनुरूप लघुलघु बालगीत लिखने के साथ-साथ युग के प्रबुद्ध भावकों के लिए गंभीर लेखन भी कर सकते हैं । कावराजी एक ऐसे ही सव्यवसायी हैं जो बच्चों को जितने प्यारे हैं उतने युग के को एवं चिंतकों के भी उतने ही प्रिय हैं ।

"धनुष-भंग" एक क्षण का खण्ड काव्य है । श्रीराम को जयमाला पहनाने के पूर्व सीता के द्वारा संकोचवश एक पल के लिए पलकें झुकाने की क्रिया का आपने बड़ा सुन्दर बिम्बात्मक प्रयोग किया है । "परिताप के पाँच क्षण" खण्डकाव्य में पितामह भीष्म और उपेक्षिता अम्बा के महाभारतकालीन उपाख्यान को केन्द्र में रखकर नारी और पुरुष के सम्बन्धों को प्रणय और प्रण के अन्तर्द्वन्द्व के माध्यम से पूरी इमानदारी और मनोवैज्ञानिकता के साथ प्रस्तुत किया है । "नरो वा कुंजरो वा" इस बहुचर्चित खण्डकाव्य में द्रोणाचार्य के अर्द्धसत्य को कथ्य के मध्य में रखकर समकालीन जीवन की विभीषिकाओं, छद्मों, मुखौटेबाजियों एवं कृत्रिम मूल्यों का पर्दाफाश किया है । "उत्तर महाभारत" षड्विकारों के शमन की और षट्दर्शनों की प्राप्ति का बिम्बात्मक आख्यान है । महाभारत की इस उत्तर कथा में पाँच पांडवों एवं द्रौपदी के स्वर्गारोहण की प्रतीकात्मकता के साथ कई प्रश्नों के उत्तर गूँथे हुए है ।

आपकी रचनाओं में विचार, भाव, भाषा और शिल्प का सुन्दर समन्वय रहता है । भाषा में अलंकारिता और कवित्व की स्वाभाविक छाट है । आपकी लघुकथाएँ प्रौढ़, परिपक्व एवं प्रांजल प्रस्तुति के कारण प्रशंसा की पात्र हैं ।

§40§ अविनाश श्रीवास्तव :

श्री अविनाश श्रीवास्तव का जन्म 1936 में उत्तर प्रदेश के रायबरेली में हुआ । आपने प्रथम श्रेणी में एम०ए० और बाद में एल०एल०एम० किया । आपका प्रकाशन है :-

1.	मासिक सन्निपात और टूटे हुये एवरेस्ट	§काव्य संग्रह§	1971
2.	समान्तर रेखाओं का त्रिकोण	§काव्य संग्रह§	1974
3.	पिछली बहार के सूरजमुखी	§काव्य संग्रह§	1977
4.	ठहरी हुईधूप	§काव्य संग्रह§	1978
5.	टूटे तट बंधों पर पुनः	§काव्य संग्रह§	1981
6.	कल के अपने तथा अन्य कहानियाँ	§कहानी संग्रह§	1975
7.	कवि प्रसाद की सौंदर्य भावना	§समीक्षा§	1972

साहित्य के विभिन्न रूपों पर आठ पुस्तकें यंत्रस्थ है, जिनमें एक अंग्रेजी काव्य संग्रह भी है । पोइट्री एन्थोलोजी, पोइट्री सोसायटी, वाशिंग्टन अमेरिका से प्रकाशित संग्रह में 6 कविताएँ प्रकाशित हैं । हिन्दी के विभिन्न पत्र पत्रिका में आपकी रचनाएँ समय-समय पर प्रकाशित होती रही है ।

आप लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा पुरस्कृत हुए हैं जो बड़ी ही प्रशंसनीय बात है । गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य में आपका योगदान स्मरणीय है । अंतरंग और बहिरंग दोनों की दृष्टियों से एक स्पृहणीय काव्य-संकलन जो अपने आँगन में सारे आकाश को कैद करने का आपका सफलतम प्रयास है । काव्य बिम्बों को संदर्भों में पिरोने के लिए कड़ियों के रूप में रेखा चित्रों का सफल योग है जो पूरे संकलन को मोहकता प्रदान करता है । तार सप्तक के बाद हिन्दी काव्य के इतिहास में विचारशील कविता की एक नई शुरुआत जो निश्चय ही हिन्दी कविता के यात्रा-पथ पर मील का एक नया पत्थर मान सकते हैं ।

नियम से उपेक्षित होकर अपवाद के दरवाजे खटखटाने की मनोव्यथा कवि के अन्दर व्याप्त उस हरहराते हुए अटार्कटिक का द्योतक है जो समूचे द्वन्द्वात्मक वैषम्य का पर्यायवाची बनकर बिम्बों और प्रतीकों में प्रकट हुआ है ।

आपकी रचनाएँ व्यंग्य को साथलिए चलती है । उसकी मनोभूमि तृप्ति की नहीं तृप्तिश्तर की होती है, पराकाष्ठा की नहीं, मोहभंग की होती है, रोमांटिक भावबोध की नहीं तल्खी की होती है । आपकी रचनाओं को पढ़ने के पश्चात् यह अहसास होता है मानो एक भावुक मन जो किसी कोरे कागज पर पूरी इबारत बनकर अपने पूरे विस्तार के साथ अवतरित होने के लिए व्यग्र है :

अवकाश के क्षणों की संगिनी वेदना,
सुख की परिभाषा से मंडित वेदना,
आदि और अन्त से अनावृत्त वेदना
प्रश्नवाचक और पूर्णविराम से अलंकृत वेदना
और सुख ?
उपजीवी, आश्रित, सापेक्ष, भ्रमित ।[1]

§41§ <u>डॉ0 रामकुमार गुप्त :</u>

डॉ0 रामकुमार गुप्त का जन्म 1935 में राजस्थान के भरतपुर के बयाना गाँव में हुआ था । आपने एम0ए0, पी0एच0डी0 किया । आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तके हैं :-

1.	हिन्दी साहित्य को गुजरात के संतों की देन §शोध§	1968
2.	आधुनिक हिन्दी नाटक और नाट्यकार	1974
3.	हिन्दी नाटक के प्रमुख हस्ताक्षर	1977
4.	बिंदिया के बोल §काव्य संग्रह§	1971
5.	क्षण का सौदागर §काव्य संग्रह§	1977
6.	धुएँ का शहर §काव्य संग्रह§	1985

---

1. श्री अविनाश श्रीवास्तव : समान्तर रेखाओं का त्रिकोण : पृ0 128

7. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी (संपादन) 1990
8. विद्यानिवास मिश्र के ललित निबंध (सह संपादन) 1992
9. गुजरात का भक्ति काव्य (संपादन) 1994
10. हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में गुजरात का योगदान (अभिनंदन ग्रंथ) 1985
11. नयी धरती : नया आकाश (सह संपादन) 1989

"काव्यांजलि" व "गद्यांजलि" का आपने संपादन किया । "भाषासेतु" त्रैमासिक पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक के रूप में सेवारत रहे । हिन्दी साहित्य परिषद के आप मंत्री के स्थान पर स्थित है, कार्यरत है । गुजरात हिन्दी प्राध्यापक परिषद में पूर्व मंत्री के पद पर नियुक्त थे । गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी में अ निर्वाचित कार्यकारिणी सदस्य के रूप में सेवारत रहे । गुजरात के आधुनिक हिन्दी साहित्य में आपका विशेष योगदान रहा है । आप नयी पीढ़ी के ऐसे कवि है जो अछूते बिम्बों की स्पष्ट और मधुर अभिव्यक्ति करने में सर्वथा सक्षम हैं । आपके काव्य संग्रह "बिंदिया के बोल" में आपने भोगी हुई अनुभूति को साकार रूप शब्द चित्र के माध्यम से दिया हैं । भावपूर्ण गीतों में संगीतात्मक वातावरण आपके काव्य की विशिष्टता है । आपकी कुछ रचनाएँ यथा - "मृत्यु गीत", "खण्डहर", "पनिहारिन" आदि में हमें अनुभूति की गहराई मिलती है और हर शब्द में जैसे तरलता के साँचे में ढलकर रूपायित किया गया है ।

अगर हम जहां से चले भी गये हम
न आँसू बहाना, न शिकवे सजाना ।
गमे जिन्दगी से तो बेहतर है मरना
न हम फिर रहेंगे न गम फिर रहेगा ।।[1]

1- डॉ० रामकुमार गुप्त : बिंदिया के बोल : मृत्यु गीत - पृ० 44

ओ खण्डहर, तुम नीरव इतिहास यहाँ के,
अमिट निशान कला के, तुम शेष रहे,
अब तक
दूर शहर की नजरों से ।[1]

§42§ <u>रामचेत वर्मा :</u>

श्री रामचेत वर्मा का जन्म 1937 में उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले के दरियापुर गांव में हुआ था । आप अहमदाबाद से खादी ग्रामोद्योग से सम्बद्ध है । आपने एम०ए० किया । आपके प्रकाशित पुस्तक हैं :-

1.	एक सहारा	§नाटक§	1960
2.	छंद छंद रागिनी	§गीत संग्रह§	1978
3.	मखमली पंख, कंटीली राह	§काव्य संग्रह§	1983

आपने छः वर्ष तक "अंबर" पाक्षिक का सम्पादन किया । आप साहित्यालोक में अध्यक्ष के पद पर नियुक्त रहे और हिन्दी भाषा की बहुत सेवा की है । सधी हुई बुलंद आवाज के कारण मंच के सुकण्ठ सफल कवि ।

§43§ <u>विष्णु चतुर्वेदी "विराट"</u> :

डॉ० विष्णु ~~वि~~ चतुर्वेदी का जन्म 1946 में उत्तर प्रदेश में हुआ था । आपने एम०ए०, पी०एच०डी०, साहित्याचार्य, वेदांताचार्य, बी०एड० किया ।

1.	गोस्वामी हरिरामजी और उनका ब्रजभाषा साहित्य		1974
2.	टूटती लकीरें	§उपन्यास§	1980
3.	बंद कमरे की धूप	§उपन्यास§	1982
4.	महर्षि अरविंद	§जीवन दर्शन§	1987
5.	रानी लक्ष्मीबाई	§इतिहास§	1988
6.	भगवान श्रीकृष्ण	§पुराण§	1989
7.	बाल वाटिका	§बाल गीत§	1986
8.	लगभग 50 बाल उपन्यास		

9. गोविंद सागर [संपादन] 1991
10. गनपतजी स्मृति ग्रंथ 1991
11. व्रज वीथिन में [व्रजभाषा काव्य] 1993
12. फैली पलाश के कानन लौं [व्रजभाषा काव्य]

आपके शताधिक लेख और कहानियाँ विविध स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है। आप गुजरात के हिन्दी अकादमी के भी सदस्य हैं।

आपको बम्बई से "आशीर्वाद" पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आपको उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा "श्रीधर पाठक पुरस्कार" लखनऊ से प्राप्त हुआ। अलीगढ़ से आपको "साहित्य वारिधि सम्मान" मिला। कोटा से आपको भारतेन्दु सम्मान प्राप्त हुआ है। आप अन्य अनेक संस्थाओं से सम्मानित व पुरस्कृत हुए हैं।

"व्रजवीथिन" में तथा "फैली पलाश के कानन लौं" - ये दोनों रचनाएँ व्रज में है। मध्यकालीन गुजरात की व्रजभाषा काव्य की स्मृति दिलानेवाली और इसी परम्परा की अनुगता ये दोनों कृतियाँ भाषा एवं छन्दों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। डॉ० अम्बाशंकर नागर ने विष्णुजी की कविता से प्रसन्न होकर उनका अभिवादन जो किया है वह सर्वथा उपयुक्त एवं महत्त्वपूर्ण है।

आखर के गढ़िया बढ़िया सुकवि है विराट विष्णु
ऐसे गुनित को गुजरात में नागर सिवाजिये।

फैली पलाश के कानन लौं" में मेरे हृदय की मूल रसग्राही संवेदनाएँ मूर्तिमान हुई है। .... अपने ढेर सारे सवैयों में से संकलित सवैये अपनी निजी पसंदगी के, अनेक मित्रों की राय और मंतव्य तथा वाहवाही के बाद छोटे, सहज सरल और सरसतम सवैये छंदों को संकलित किया और अब जो कुछ भी है वह आपके सामने है।" प्रस्तावना - सुनोभाई साधो से "विराट" कथावस्तु के छंद सन्दर्भ में प्रस्तुत किए गए सुन्दर चित्रांकनों से कृति की अभिव्यंजना और स-रस और चित्रात्मक बन पड़ी है। खड़ीबोली काव्य परम्परा की बोलबाला के उस युग में आपके समान व्रजभाषा में रचना करनेवाले पोरबन्दर के पुष्टिमार्गीय मंदिर के गो० द्वारकेशलाल महाराज की स्मृति हो आती है जिन्होंने व्रजमाधुरी

चिकुंज {1961} कृजमाधुरी सुधा {1968} आदि भक्ति प्रधान विपुल पद रचना की है ।

{44} शशिबाला अरोरा :

डॉ० शशिबाला अरोरा का जन्म 1960 में देहरादून में हुआ । आपने एम०ए०, पी०एच०डी० किया ।

गुजरात की समकालीन हिन्दी कविता में कुछ नवोदित कवयित्रियाँ भी गण्मान्य हैं - नलिनी पुरोहित, सुनंदा भावे, दिव्या रावल, शशि अरोरा, मंजु भटनागर आदि । आपकी कविताओं में व्यक्त नारी चेतना के बारे में श्री अम्बाशंकर नागरजी का कहना है कि शशि अरोरा एक नारी चेतनावाली {फेमिनिस्ट} कवयित्री हैं और उनका काव्य नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को उजागर करने वाला काव्य है । इसमें जहाँ क्षत विक्षत नारी की आहें कराहें हैं, वहाँ आक्रोश हैं और मुक्ति के लिए छटपटाहट भी है । हिन्दी साहित्य परिषद की ओर से आपका प्रथम काव्य संग्रह 1994 में "रेत पर हस्ताक्षर" नाम से प्रकाशित प्रस्तुत काव्य संग्रह में शशिजी की आधुनिक भावबोध से जुड़ी प्रभावपूर्ण 80 कविताएँ हैं । अधिकांश कविताएँ आत्मतत्व से अनुप्राणित है । यह वैयक्तिकता { - } है । इन कविताओं का निजी वैशिष्टय है । प्रत्येक शब्द में इनके व्यक्तित्व की छाप है । गुजरात के उदीयमान रचनाकारों में आपकी गणना होती है ।

{45} श्री रामअवधेश त्रिपाठी "वियोगी" :

श्री रामअवधेश त्रिपाठी "वियोगी" का जन्म 1918 में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के कोल्हुआ में हुआ था । आपने उच्च प्रशिक्षण प्राप्त किया है । आप साहित्य रत्न भी हैं । आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं -

1.	गुजरात की महान विभूतियाँ	{जीवनी}	1965
2.	निबंध - दर्पण	{निबंध}	1953
3.	चरैवेति	{काव्य संग्रह}	1993
4.	साहसिक राजदूत	{अनु. यात्रा वर्णन}	1966

निकट भविष्य में "अग्निजा" (खंड काव्य) प्रकाशित होने की संभावना है। आप हिन्दी मासिक पत्र "सुधा बिन्दु" (1967 - 85) के संपादक थे। आप "1951 से 1990 तक" "राष्ट्र वीणा" मासिक के भी सह संपादक रहे। हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में आपका अमूल्य योगदान रहा है।

सन् 1974 में आपको उत्तम शिक्षक के लिए राष्ट्रपति पदक, हिन्दी भाषा संघ, अहमदाबाद द्वारा सम्मान पत्र, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा प्रशस्ति पत्र, गुजरात सरयूपारीय ब्राह्मण समाज द्वारा सरस्वति प्रतिभा से सम्मानित किया गया एवं गु०प्रा०रा०भा०प्र० समिति द्वारा श्री जेठालाल जोशी पुरस्कार हेतु आमंत्रित किया गया।

डॉ० रामचरण महेन्द्रजी का आपके काव्य व्यक्तित्व के बारे में अभिप्राय है कि "आपके व्यक्तित्व का सबसे मधुर और आकर्षक रूप "कवि" है। आप मधुर मार्मिक भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाले कुशल गीति कवि हैं। आपके पास मृदुल भावनाओं को कोमल रूप से उतारने की तुलिका है। वे कुशल जौहरी की मणिमाला की तरह एक-एक शब्द गूँथते हैं।...."चरैवेति" काव्य संग्रह में मानव प्रेम और राष्ट्रीय अस्मिता से सम्बद्ध गीत और कविताएँ हैं। डॉ० महेन्द्रजी का इस सम्बन्ध में कथन है कि "चरैवेति" काव्य संग्रह की कविताएँ वियोगीजी के साठ वर्ष की लम्बी मंजिल के विविध पड़ावों का मनोहर दृश्य उपस्थित करता हैं। इन कविताओं में विविध रसों की सुरावलि विशेष दृष्टव्य है। इन कविताओं में कर्म और मर्म की संस्पर्शक माधुरी है।" आलोच्य कविता ग्रंथ की रचनाओं के बारे में डॉ० अम्बाशंकर नागर का निवेदन है कि इसमें तीन तरह की कविताएँ हैं। एक राष्ट्रीय कविताएँ, दूसरी देश प्रेम परक कविताएँ और तीसरी आधुनिक भाव बोध की कविताएँ। पहले प्रकार की रचनाएँ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचना शैली से प्रभावित है। दूसरे प्रकार की रचनाओं पर महादेवी और पंत का प्रभाव परिलक्षित होता है। तीसरे प्रकार की कुछ रचनाएँ नए कवियों के अंदाज लिए हुए हैं। वियोगीजी अपनी काव्य यात्रा एवं "वियोगी" तखल्लुस के सन्दर्भ में बताते हैं: "सन् 1935 से मैं काव्य लेखन में प्रवृत्त हुआ। मुझे "वियोगी हरि" कहकर पुकारा

जाने लगा । जब मुझे अध्ययन से पता लगा कि वियोगी हरिजी एक उच्च कोटि के लेखक, कवि और हरिजन सेवक नेता हैं, तब मुझे अपना यह नाम बदलने की इच्छा हुई । उसी समय सुमित्रानन्दन पन्त की "वियोगी होगा पहला कवि" कविता पढ़ने का आनन्द मिला । मैंने अपना यह नाम संक्षिप्त कर "वियोगी" रखा तब से यह मेरा जीवनसाथी बन गया ।"

{50} **नलिनी पुरोहित :**

डॉ० नलिनी पुरोहित का जन्म राँची में हुआ था । आपने रसायन शास्त्र में स्नातकोत्तर के बाद पी०एच०डी० किया । आपका प्रथम काव्य-संग्रह है - "अनुभूति" जो 1993 में प्रकाशित हुआ । आप आकाशवाणी राँची एवं आकाशवाणी बड़ौदा से कई सालों से जुड़ी हुई हैं । हिन्दी के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ आती रही है ।

आपको चित्रकला तथा ललितकला की अन्य विधाओं में भी सम्यक अभिरुचि है । अन्य क्षेत्र में रहते हुए भी आपने अपनी रुचि को अर्थात् हिन्दी लेखन में जो योगदान दिया वह प्रशंसनीय है ।

प्रथम कविता संग्रह "अनुभूति" की रचनाओं के बारे में आपका कहना है - "मन के भावों को शब्द में पिरोकर, मन को हमेशा पीड़ा भार से मुक्त पाया, धीरे-धीरे आदत सी बन गई शब्दों को पिरोने की । जब भी मन को डूबते पाया, अनजाने स्वयं को अंधकार से जूझता पाया ।" शशि अरोरा की भाँति आपकी कविता भी एक सहज कविता है । सहज कविता में कवि द्वारा भोगे हुए क्षणों का आवेगपूर्ण आविष्कार होता है । आपकी कविताएँ भी जीवन की पीड़ा एवं मजबुरियों से अनायास फूट पड़ी होने के कारण हमारे अंतर को छूनेवाली सहज एवं मार्मिक रचनाएँ बन पड़ी हैं । आप भी गुजरात की उदीयमान कवयित्रियों में से एक हैं जिनसे और सुन्दर रचनाएँ पाने की आशा बंधती हैं ।

[49] शांति सेठ

डॉ० श्रीमती शान्ति सेठ का जन्म सन् 1928 में शाहजहापुर [उ०प्र०] में हुआ था । आपने बी०ए० इलाहाबाद से, एम०ए० आगरा से और अर्थशास्त्र में पी०एच०डी० लखनऊ विश्वविद्यालय से किया । बाद में मेरठ और कानपुर में अर्थशास्त्र की व्याख्याता रहीं तथा विशेष अध्ययन के लिए आप प्रिंस्टन् युनि० यू०एस०ए० गईं । वहाँ से लौटकर आप अहमदाबाद की सुप्रसिद्ध संस्था इन्डीयन इन्स्टीट्युट ऑफ मैनेजमेन्ट में शोध सहायक के पद पर सन् 1988 तक कार्यरत रहीं । श्रीमती सेठ एक विदूषी महिला है और भ्रमण की शौकीन हैं । इसलिए देश-विदेश में काफी भ्रमण किया । इससे आपकी जीवन दृष्टि व्यापक हुई है । धर्म-दर्शन और अध्यात्म में आपकी गहरी रूचि है ।

यूँ तो आप बचपन से लिखती थीं किन्तु विवाह के दो वर्ष पश्चात् ही हृदय-गति रूक जाने से पति का देहान्त हो गया । इस गहरे आघात से आप अन्तर्मुखी हो गईं और काव्य सर्जन करने की ओर प्रवृत्त हुईं ।

आपने किसी लक्ष्य को लेकर रचना नहीं की किन्तु अन्तःप्रेरणा से रचना की है । आपकी कविताओं का सम्बन्ध यथार्थ जीवन से है । शान्तिजी की कविताएँ अलग-अलग भाव-विचार की है किसी एक विचार धारा को लेकर नहीं चलती । आपका मंतव्य है कि कृतिकार का सृष्टि और सृष्टा का नाता तो है ही अगर वह सामाजिक समस्याओं पर लिखता है तो उसके प्रति उत्तरदायी है । आपके दृष्टिकोण से मनुष्य का जीवन इस जगत की यथार्थता के साथ-साथ दैवी शक्तियों से भी जुड़ा है अर्थात् जीव ब्रह्म से जुड़ा है । आपकी कविता में रागात्मक एवं बौद्धिक तत्वों का समन्वय जीवन के अनुभव, उच्च शिक्षा एवं अध्ययन के कारण संभव हुआ ऐसा आपका मत है । आप मानती है कि साहित्यकार का राज्याश्रय पाने की ओर प्रवृत्त होना साहित्य के लिए अहितकर है क्योंकि इसमें साहित्यकार अपने साहित्य को बेचने की वृत्ति रखता है । आपने अपनी कविताओं में निजी दृष्टिकोण को ही अपनी कविता का विषय बनाया है ।

काव्य में कवि कथा या घटना का इस्तेमाल करें तो कविता समृद्धि नहीं पाती पर वह सामाजिकता से जुड़ी रहती है । आप कविता में लय का होना अनिवार्य मानती हैं । "निलाम्बर के नीचे" आपका प्रथम काव्य संकलन है । इसमें कवयित्री की पौराणिक स्मृति और रचनात्मक उन्मेष द्रष्टव्य है । आपकी प्रमुखतः कविताएँ एवं काव्य प्रवृत्तियाँ – अध्याय, प्रेम, प्रकृति, हताशा आदि पर मिलती है । जैसे –

ध्यान ही शान्ति वन बना
मौन ही शान्ति पाठ
परम तत्त्व ही वह फूल हुआ
हुई चाह जिसके खिलने की ।[1]

{48} कमल पुंजाणी :

कमल पुंजाणी का जन्म 1942 में जामनगर {गुजरात} में हुआ । आपने एम०ए० किया तत्पश्चात् पी०एच०डी० किया । आपको साहित्य, संगीत, शिक्षा, इतिहासदर्शन, ज्योतिष, अध्यात्म एवं पत्र-लेखन में गहरी रुचि हैं । आपके सौ से भी अधिक लेख विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं । आपकी मौलिक नौ पुस्तकें स्वतंत्र रूप से प्रकाशित हुई हैं :-

1.	प्रतिबिम्बित इन्द्रधनुष	{कविता संग्रह}
2.	क्षितिज से दूर	{कविता संग्रह}
3.	विवशता से बंधे हुए	{कविता संग्रह}
4.	इन्दु अने बिन्दु	{गुजराती अनुवाद}
5.	हिन्दी का पत्र-साहित्य	{शोध प्रबन्ध}
6.	आईने के आर पार	{काव्य अनुवाद}
7.	परछाई बन गई पहचान	{काव्य अनुवाद}
8.	सेतु कथाओ आदि	{काव्य अनुवाद}

---

1. दे० शान्ति सेठ – नयी धरती नया आकाश – पृ० 105

आप कवि होने के साथ ही साथ लेखक एवं अनुवादक भी हैं । आप अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित हुए हैं । सन् 1976-77 में आपका काव्य संग्रह "प्रतिबिम्बित इन्द्र धनुष" पर आपको पुरस्कार मिला है । उत्तर प्रदेश साहित्य संस्थान, दलित साहित्य अकादमी, हिन्दी प्रचार सभा, मथुरा आदि से भी आप सम्मानित हुए हैं ।

आपने लिखने का प्रारम्भ 20 वर्ष की उम्र से अर्थात् 1962 ई0 से किया । आपको लिखने की प्रेरणा आपके गुरुजनों से मिली । आपकी प्रथम अप्रकाशित कविता "श्रद्धा - सुमन" है और आपकी प्रथम प्रकाशित कविता "परिवर्तन" है । आप प्रारंभ में गुजराती में कविताएँ लिखते थे । बाद में हिन्दी में कविताएँ लिखने का आरंभ किया । तत्पश्चात् नाटक, लेख आदि लिखा । आपकी कविताएँ दिल्ली, जयपुर, मथुरा, आगरा आदि से प्रकाशित पत्रों में छपने लगीं । काव्य के कथ्य पक्ष पर आप विशेष बल देते हैं । आपकी राय है कि "काव्य का कथ्य यदि प्रभावपूर्ण होगा, तो शिल्प वह स्वयमेव पा लेगा ।" आपकी रचनाओं का मूल लक्ष्य आत्माभिव्यक्ति है । आपको आपके कवित्व के स्फूरण में आंतरिक तौर पर "भीतर की करुणा, संवेदना प्रेरित करते हैं जबकि बाहरी तौर पर प्रियतमा, पत्नी और पुत्र-पुत्रियाँ तथा कवि मित्र प्रेरित करते हैं । आपके मंतव्य से कृतिकार को आलोचकों के प्रति सहिष्णुतापूर्ण दृष्टिकोण अपनाना चाहिए । आप कविता की तृप्ति के लिए लय को आवश्यक मानते हैं । आपके विचार से "लय से कविता में एक निश्चित प्रकार की संगीतात्मकता उत्पन्न होती है, एक संतुलन आ जाता है ।" आप इस बात से सहमत हैं कि "कविता में कथा और घटना के उपयोग से आज कविता अधिक रोचक बनती जा रही है । इससे एक तरह कविता की समृद्धि बढ़ती जा रही है ।" आपको आपका प्रथम कविता संग्रह "प्रतिबिम्बित इन्द्र धनुष" से सर्वाधिक आनन्द और कीर्ति - ख्याति, सम्मान पुरस्कार आदि प्राप्त हुआ है । फिर भी आपको आपकी दिल्ली से प्रकाशित पहली कविता "परिवर्तन" विशेष प्रिय है क्योंकि इसमें हृदय की सूक्ष्म भावनाएँ अंकित है । आपकी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन तथा कल्पना दोनों है । आप इस बात से सहमत है कि किसी भी रचना को पूरा करने के बाद भी उसमें सोचने समझने की गुंजाइश रहती ही है ।

आपके विचार से "कृति और कृतिकार का नाता सृष्टि और सृष्टा से कहीं अधिक होता है । कविता नियतिकृत नियमों से रहित है । वह सृष्टि से अधिक सुन्दर व सरस है ।" आपका कथन है कि "मानव जीवन बड़ा मूल्यवान है । जगत् मानव के लिए है, वह क्षणिक होते हुए भी रम्य है ।" साहित्यकार और राज्याश्रय के सम्बन्ध में आपका मंतव्य है कि "राज्याश्रित साहित्य सत्साहित्य से दूर चला जाता है । वह "स्वान्तः सुखाय" नहीं होता, उसमें प्रलोभन-वृत्ति संमिश्रित हो जाती है । आपने अपने काव्य का विषय युग की भावुकता को न बनाकर निजी दृष्टिकोण को बनाया है । साथ ही आप राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में अवांछनीय मानते हैं । आप मानते हैं कि संकटों से तो व्यक्तित्व निखरता है । आपको सर्जन में अधिक रुचि है ।

आपके गुजराती के प्रिय कवि हैं - कलापी, न्हानालाल, उमाशंकर जोशी । संस्कृत के कालिदास और भवभूति विशेष प्रिय हैं और हिन्दी के मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद तथा निराला में विशेष रुचि रही है । नये रचनाकारों के लिए आपका संदेश है - "परम्परा से परिचित होकर प्रयोग की दिशा में अग्रसर होना चाहिए । प्रेम, करुणा, कोमलता, सुन्दरता आदि को कविता में विशेष स्थान देना चाहिए तभी कविता चिरस्थायी और शाश्वत बनती है ।"

§५१§ <u>शेखरचन्द्र जैन :</u>

डॉ० शेखरचन्द्र जैन का जन्म 1936 में हुआ । आपने गुजरात युनिवर्सिटी से बी०ए०, एम०ए० तथा पी०एच०डी० किया । आपने सौराष्ट्र युनिवर्सिटी से एल०एल०बी० भी किया । आप कवि होने के साथ-साथ हिन्दी के लेखक, समीक्षक एवं शोध निदेशक तथा जैन इन्डोलॉजी के विशेषज्ञ भी हैं । आपकी प्रकाशित कृतियाँ हैं - §1§ राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य-कला §शोध ग्रंथ§ §2§ घरवाला §कविता§ और §3§ कठपुतली का शोर §कविता§ । आपकी रचनाओं का मुख्य स्वर व्यंग्य रहा है । आपकी यह एक विशेषता है कि आप छांदस - अछांदस दोनों प्रकार की रचनाएँ करते रहे हैं ।

आपने काव्य लेखन का प्रारम्भ अपने अध्ययनकाल से ही अर्थात् 1961 से ही किया । आपको काव्य लेखन की प्रेरणा स्वयंभू ही मिली है । आप मुक्तक काव्य विधा में प्रकृति सौन्दर्य एवं वर्तमान जीवन के सत्य को प्रस्तुत करनेवाली रचनाओं को पसंद करते हैं । साथ ही आप शिल्प को कविता में अनिवार्य मानते हैं । आपकी रचनाओं का मूल लक्ष्य स्वानुभूति एवं वर्तमान सन्दर्भों में मानवजीवन का विकासात्मक पहलू है । आपके मंतव्य से आपके कवित्व के स्फुरण में भीतरी तौर से मुक्त जीवन के संघर्ष से और बाहरी तौर से युगीन घटनाओं से आपको प्रोत्साहन मिला । आपके दृष्टिकोण से आलोचना के प्रति हमें तटस्थ भाव अपनाना चाहिए । आपके मत से कवि को अपनी सभी रचनाएँ प्रिय होती है । फिर भी आपको अपनी व्यंग्य रचनाओं में सर्वाधिक आनन्द मिलता है । आपकी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन अधिक है, कल्पना तो मात्र आपके गीति काव्यों में दृष्टव्य है । आपकी विचारधारा से कविता में पूर्णता कभी भी संभव नहीं है और अपूर्णता ही तो प्रेरणा है । ऐसा लगना ही कवि की प्रगति है कि अभी उसे स्वयं को और सृष्टि को अधिक समझने की गुंजाइश है । रचना प्रक्रिया के दौरान महसूस किए कवि कर्म को आप ही के शब्दों में देखें कि "यथार्थ सदैव यथार्थ ही रहता है । परिस्थितियाँ बदलती है । हर यथार्थ वर्तमान का प्रतिबिम्ब होता है । वर्तमान में जी कर भविष्य के "शिवत्व" का सोच ही कवि - कर्म - कौशल है ।" मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण सदैव अकारात्मक रहा है । आपकी रचनाओं का केन्द्र बिन्दु मानव है । फिर भी कविता की तृप्ति के लिए आप लय को आवश्यक मानते हैं । आप पत्रकार होने के नाते समीक्षा में भी रूचि रखते हैं ।

राज्याश्रय के विषय में आपका मंतव्य है कि साहित्यकार का राजकीय गुलाम बनना ही साहित्य का पतन है । राजनीति के सन्दर्भ में आपका मत है कि वर्तमान जीवन में राजनीति एक अंग बन गया है पर वह काव्य रचना पर हावी हो यह बराबर नहीं ।" साथ ही रचना-धर्मिता को जहाँ तक आक्रान्त कर सके सिर्फ उस सीमा तक कवि के लिए सामाजिक और राजनैतिक हलचलों में सम्पृक्त होना चाहिए ।

आपके गुजराती के प्रिय कवि है - शून्य पालनपुरी, उमाशंकर जोशी, गनी, माधवरामानुज । आपके हिन्दी के विशेष प्रिय कवि दिनकरजी, दुष्यंतकुमार है, जबकि उर्दू के कुछ गज़लकार भी है । वर्तमान में आप मुक्तक रचनाएँ एवं रूबाइयाँ लिख रहे हैं । नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि वे ऐसी रचनाएँ लिखें कि जो रचना निजी अनुभूति की अभिव्यक्ति के साथ युग को काव्यमयी भाषा में प्रस्तुत करें और कविता कहीं प्रचार की सामग्री न बन जाय यही ध्यान रखें ।

आपकी रचनाओं का मुख्य स्वर व्यंग्य है । आप छांदस - अछांदस दोनों प्रकार की रचनाएँ करते रहे हैं । जैसे -

आओ
हम ऐसी भाषा बोलें -
जो तथ्यहीन
अर्थहीन, बेतुकी हो ।
जिसमें चापलूसी और
खुशामद की झलक हो ।
जिसमें भविष्य के चुनाव चिन्ह की -
गारंटी हो ।[1]

§50§ <u>डॉ० दयाचंद जैन :</u>

डॉ० दयाचंद जैन का जन्म 1935 में खंडवा §म०प्र०§ में हुआ था । आपने एम०बी०बी०एस० की उपाधि प्राप्त की और अहमदाबाद में चिकित्सा क्षेत्र में एक चिकित्सक के रूप में उभरें । आपको साहित्य दर्शन कला में गहरी रूचि रही । आपके प्रकाशित काव्य संग्रह है - "रोशनी की तलाश" कलरनों

1- डॉ० अम्बाशंकर नागर - गुजरात : समकालीन हिन्दी कविता - पृ० 13

के शिला लेख, दर्द का रिश्ता [गज़ल संग्रह]" । आपकी कई कविताएँ हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं । रेडियो स्टेशन अहमदाबाद से आकाशवाणी से भी आपकी कई कविताएँ प्रसारित हुई हैं ।

आपने बचपन से करीब 10 - 12 वर्ष की उम्र से ही काव्य लेखन का प्रारम्भ किया । आपके पूज्य पिताश्री का देहान्त और गरीबी के थपेड़ों ने आपको कलम हाथ में थमा दी । आपके काव्य विकास के विभिन्न चरण इस प्रकार हैं - अतुकांत, गीत, गज़ल, भजन, नवरूप में दोहे, शेर, चतुष्पदी । विविध परिस्थितियों पर "नवरल" के तमाम विषयों पर विकास की गति अविरत साधना रूप में रही । आपकी रचनाओं का मूल लक्ष्य दर्द रहा है । आपके कवित्व के स्फूरण में भीतरी तौर पर पीड़ा का प्राधान्य रहा । आपकी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन के साथ-साथ कल्पना भी है क्योंकि आपकी रचनाएँ जीवन के कटु सत्य से उभरी होने पर भी कल्पना के पुट से आवरित है । काव्य विषय के सन्दर्भ में आपका मंतव्य है कि निजी दृष्टिकोण जब युग बोध से जोड़ दिया जाता है तब हम दोनों को अलग-अलग कैसे देख पायेंगे । यही कारण है कि आपके काव्य में युग की भावुकता और निजी दृष्टिकोण को हम अलग नहीं कर सकते क्योंकि आपने अपने काव्य में अपने दर्द को व्यक्तिगत न रखकर युग बोध से जोड़ दिया है । आपके विचार से लय के बिना काव्य निर्जीव है । आपको सिर्फ सर्जन में ही रूचि है । आप इस बात से सहमत हैं कि किसी भी रचना को पूरा करने के बाद भी उसमें सोचने समझने की गुंजाइश रहती है । रचना - प्रक्रिया के दौरान आप पुनरावलोकन आवश्यक मानते हैं । सृष्टि और सृष्टा के सम्बन्ध में आपके विचार है कि "साहित्यकार ईश्वर का दूत है और उसे वही करना चाहिये जो सत्य की आधार संहिता में आता है । सच पूछो तो सृष्टि और सृष्टा के अलावा शेष भी क्या है ?" काव्य अद्वैतवाद का मूल दर्शन है ।

मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण है कि देव, दानव कोई जाति नहीं मानसिक मनःदशाएँ हैं । इसलिये मनुष्य मात्र को अपने जीवन को जगत के सत्य के प्रति साहसिक और सहजिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिये ।"

आप राज्याश्रय को साहित्य एवं साहित्यकार के हित में नहीं मानते । राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में आप अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ पाते हैं । आपके कथनानुसार अनादिकाल से धर्म और राजनीति ने मानवजात के मानस को प्रभावित किया है । जब तक सृष्टि सृष्टा और कर्ता भाववाले व्यक्ति रहेंगे रचनायें समयानुकूल समृद्ध होती रहेंगी । आपके विचार से कवि के लिए सामाजिक हलचलों से सम्पृक्त होना अनिवार्य है राजनैतिक हलचलों से नहीं ।

गुजराती में आपके प्रिय कवि उमाशंकर जोशी, सुरेश दलाल, रमेश पारेख हैं । उर्दू में राहत इंदौरी, कुमार बाराबंकी है और हिन्दी के विशेष प्रिय कवि है -- आपके गुरू माखनलालजी चतुर्वेदी, चन्द्रसेन विराट, बच्चनजी, अज्ञेय आदि ।

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि - "साहित्य को गंदी राजनीति से बचाकर सत्य और तथ्य को साथ लेकर समाज, संस्कृति और देश को बचायें, विश्वकल्याण की महेच्छा रखें ।"

आपके अधिकतर काव्य रचना के मूल में आधुनिकता एवं आधुनिक परिवेश का सम्बन्धों पर प्रभाव, परायापन का अहसास, अपनत्व का ह्रास् बदलते हुए शब्दों के बदलते हुए अर्थ एवं अर्थहीन रिश्ते आदि दृष्टिगत होते हैं जैसे -

शब्दों को अर्थ बदलते हुए देखा है
किन्तु
जब रिश्ते भी अर्थ खो दें
तब तब अपनत्व किससे जोड़ें ?"[1]

1- सं० अम्बाशंकर नागर तथा रामकुमार गुप्त - नयी धरती नया आकाश - पृ० 30

§51§ <u>अजीज कादरी</u>

श्री अजीज कादरी का जन्म 1932 में गुजरात के बड़ौदा शहर में हुआ था । आपने मैट्रिक तक की शिक्षा ग्रहण की । आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं -

1. सफर §गजल संग्रह§ 1987

आपको आपके गज़ल संग्रह "सफर" के लिए राज्य उर्दू अकादमी द्वारा पुरस्कार मिला है । आपके गुजराती में "उपवन" व "कैदी" नाम से दो संग्रह प्रकाशित हुए हैं ।

§52§ <u>अब्बासअली ताई "अजनबी"</u>

डॉ0 अब्बासअली ताई का जन्म 1941 में गुजरात के बलसाड़ जिले के सोनवाड़ी में हुआ था । आपने एम0ए0, पी0एच0डी0 किया । आपका हिन्दी साहित्य में अमूल्य योगदान रहा है । आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं -

1.	मिलनज्योत	§कहानी संग्रह§	1969
2.	इन्द्रधनुष के आठ रंग	§कहानी संग्रह§	1980
3.	हिन्दी काव्य में कृष्ण का बालरूप		1988
4.	हिन्दी काव्य में कृष्ण राजाधिराज		1989
5.	दार्शनिक कृष्ण		1989
6.	हिन्दी काव्य में कृष्ण के विविध रूप	§शोध प्रबंध§	1991
7.	रक्शे कदम	§गज़ल संग्रह§	1985

आपको 1965 में गुजराती साहित्य परिषद द्वारा काका साहेब कालेलकर पारितोषिक मिला । 1989-90 में आपको इंग्लैंड से धनजी कानजी सुवर्णचंद्रक प्राप्त हुआ । 1986 में बड़ौदा सद्‌विचार परिवार द्वारा आपको संस्कार एवार्ड भी प्राप्त हुआ । दक्षिण आफ्रिका में गुजराती संस्था से सुवर्णचंद्रक आपको प्राप्त हुआ । वासदा नरेश से 5000 रू. का महाराजा इंद्रसिंह पुरस्कार 1990 में आपको मिला ।

आपने विद्यार्थी जीवन से ही लिखने का प्रारम्भ किया । सर्वप्रथम आपने 1968 में "मिलनज्योत" कहानी संग्रह प्रकाशित किया । उसी में पीछे 10 काव्य भी प्रकाशित किये थे । आपके मंतव्य से आपकी काव्य रचना प्रक्रिया में तीन बाते हैं – प्रकृति चित्रण, प्रेमवर्णन एवं भक्तिभाव का निरूपण । शिल्प की अपेक्षा आपके मत से आप कथ्य पर अधिक बल देते हैं । आपकी रचनाओं में आपका मूल लक्ष्य अन्तर्भाव को अभिव्यक्त करना एवं सर्जन का आनंद है । ग्राम्य वातावरण, प्रेमभाव एवं आध्यात्म चिंतन ही आपके कवित्व के स्फुरण में भीतरी एवं बाहरी दृष्टि से प्रेरणा-रूप रहे है । आपके विचार से आपकी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन एवं कल्पना दोनों हैं । आप इस बात को स्वीकार करते हैं कि किसी भी रचना को पूरा करने के बाद उसमें और सोचने समझने की गुंजाइश रहती ही है । युग की भावुकता एवं निजी दृष्टिकोण दोनों को आपने अपने काव्य का विषय बनाया है । आप लय को काव्य की बुनियाद मानते हैं ।

आपकी राय है कि आलोचक ही हमारे सच्चे पथ प्रदर्शक होते हैं । आप चाहते हैं कि आलोचक हमारे मार्गदर्शक बने रहे, वे साहित्य की दुनिया में प्रहरी हैं, संतरी है । साहित्य को अश्लील बनने से, बाजारू बनने से रोकने के लिए टिप्पणी करें, वह जरूरी है । आप सर्जक होते हुए भी एक अच्छे विवेचक भी है ।

मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण है कि "जगत ब्रह्म निर्मित है । उसमें सर्वश्रेष्ठ है मानवजीवन । मानवजीवन निरंतर प्रगतिशील है । जगत सुंदर है । उसका कारण मानव हैं । जीवन और जगत परस्पर सापेक्षित हैं ।"

आप मानते हैं कि राज्याश्रय या कोई भी आश्रय एक कमजोरी है । सच्चा साहित्यकार खुद्दार, आत्माभिमानी तथा स्वाश्रयी होना चाहिए । आपका मंतव्य है कि जीवन अनुभव और रचना में राजनीति को कुछ अंश तक ही जुड़ा रहना चाहिए ।

आपको अपनी एक गुजराती रचना "मन मीरा ने तन राधा" विशेष प्रिय है । इसी काव्यकृति में सृजन का सर्वाधिक आनन्द आपको मिला । गुजराती में आपके प्रिय कवियों में डॉ० जयंत पाठक एवं उशनस है जबकि हिन्दी में विशेष प्रिय कवि दिनकर और पंतजी हैं । तथा संस्कृत में विशेष प्रिय जयदेव हैं ।

आपके कृतित्व पर प्रो० दिनेश एल पटेल ने शोध कार्य किया है । आपकी कहानियों पर एक छात्र एम०फिल हुआ है और एक छात्र पी०एच०डी० कर रहा है । अभी आपने भारतरत्न मोरारजी देसाई तथा भारत रत्न डॉ० भीमराव आम्बेडकर पर लिखा और निकट भविष्य में "शब्दसलील ना मोती" निबंध संग्रह प्रकाशित होने की आशा है ।

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि "साहित्य जीवन का प्रतिबिम्ब है । वह जीवन से कभी अलग नहीं होना चाहिए । साथ-साथ सत्य और सौंदर्य को बरकरार रखते हुए शिवम् तत्व का लोप कभी नहीं होना चाहिए । विश्व को नई राहें साहित्य ही दिखा सकेगा ।

§53§ <u>पारुकांत देसाई :</u>

डॉ० पारुकांत देसाई का जन्म 1943 में गुजरात के बड़ौदा में हुआ था । आपने एम०ए०, पी०एच०डी० किया है । आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हैं -

1. बिजली के फूल §काव्य संग्रह§ 1980
2. युग निर्माता प्रेमचंद तथा अन्य निबंध 1980
3. कबीरा खड़ा बाजार में §व्यंग्य काव्य§ 1982
4. मिलन के क्षण चार §गीत काव्य§ 1982
5. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास §शोध§ 1984
6. गद्य प्रवाह §सह संकलन§ 1985
7. मानस माला §दोहा संग्रह§ 1988
8. समीक्षायण §आलोचना§ 1982
9. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास 1993
10. आधुनिक हिन्दी लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उप. 1994

आपको एम०ए० में प्रथम आने के लिए कुलपति का स्वर्णपदक प्राप्त हुआ । "समीक्षायण" पर आपको केन्द्रीय सरकार द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुआ । दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा §अहिराबाद§ द्वारा "साहित्य वाचस्पति" की मानद उपाधि आपको प्राप्त हुई है । प्रज्ञा चक्षु डॉ० सलीम वोरा को पी०एच०डी० कराने के उपलक्ष में राष्ट्रपति वेंकटरमण द्वारा आपको विशेष अभिवादन हुआ जो प्रशंसनीय है । सम्प्रति आप म०स०वि०वि० वडोदरा के हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं

प्रोफेसर हैं ।

§54§ **श्रीमती मंजु भटनागर "महिमा"**

श्रीमती मंजु भटनागर का जन्म 1948 में राजस्थान के कोटा में हुआ था । आपने एम0ए0, एम0फिल0 किया । आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं -

1. बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी §58 कविताओं का संग्रह§ 1991
2. नई धरती नया आकाश 1992 §काव्य संग्रह में भी कुछ रचनाएं संकलित हैं§

सन् 1991 में आपको हिन्दी साहित्य परिषद की ओर से आयोजित काव्य स्पर्धा में प्रथम आने पर डॉ0 किशोर काबरा रजत पदक से सम्मानित किया गया । इस नवोदित कवयित्री में सार्थक अभिव्यक्ति की दीर्घजीवी संभावनाएँ हैं । सूरजमुखी कवयित्री की अनुभूतियों का जीवन प्रतीक है जो उदयाचल से अस्ताचल तक किरणों की डोरी से बंधा रहता है । शशि अरोरा, नलिनी पुरोहित, सुनंदा भावे आदि गुजरात की नवोदित कवयित्रियों में नारी सुलभ सोच जो नये धरातल की तलाश में हैं का अनुभव होता है । अपने काव्य ग्रंथ की शीर्षकी कैफियत में कवयित्री कहती हैं "बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी" - बोनसाई अथवा बोनसे नाम से पहचाने जानेवाली वृक्षों का अर्थ हमारे पुराणों की वामनदेवताओं की कथा के साथ जुड़ा हुआ है, जिसमें विशाल छाया को छोटा करने की प्रक्रिया दर्शाई गई है । बोनसे अर्थात् "ट्रे" §चौड़ा मिट्टी का पात्र§ में बौने पेड़ों का होना । यह मूलतः जापानी भाषा का शब्द है ।.... संवेदनाएँ यूं तो विशाल है, विस्तृत है परन्तु उन्हें बोनसाई की तरह छोटे रूपों में अभिव्यक्त कर रोपने का प्रयास किया है मैंने इस पुस्तक की"ट्रे" में । प्रस्तुत कृति की मूल संवेदना के बारे में कवयित्री का कहना है "इसमें स्त्रीहृदय की संवेदना है, उसके विवश होने की व्यथा है, स्वतंत्र न रह जाने का क्षोभ है, दहेज के लिए जिंदा जलाये जाने व यश प्राप्ति के लिए सति करवाये जाने की गहन पीड़ा है । सूरजमुखी, नाजुक सी टहनी पर टिका हुआ ऐसा शाश्वत, पूर्ण विकसित प्रयाण है जो सदैव सूर्य की ओर उन्मुख है और सूर्य के साथसाथ चलता है अर्थात् सत्य का समर्थक है । कविता समय के साथ चलती है, समय, जिसका प्रहरी सूर्य है और जो सूरज की ओर सदैव उन्मुख रहे, वही सूरजमुखी है । 3। रचनाओं में "सूर्य" सत्य व उजाले का प्रतीक है । उजाले की निरंतर तलाश की मेरी कविता की अनुवरत साधना है ।"

(55) **डॉ० सूर्यदीन यादव :**

डॉ० सूर्यदीन यादव का जन्म सन् 1952 में उत्तरप्रदेश के सुलतानपुर जिले के डाहा गाँव में हुआ । आपने बी०ए० सुलतानपुर के गोरखपुर युनिवर्सिटी से 1974 में किया । बी०एड० अहमदाबाद के विवेकानन्द कॉलेज में 1977 में किया । एम०ए० अहमदाबाद की गुजरात युनिवर्सिटी से 1979 में किया और पी०एच०डी० गुजरात युनिवर्सिटी से 1986 में किया । आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं -

1.	हिन्दी वाहिनी	(गीत संग्रह)
2.	फागुन बीते जा रहे	(गीत संग्रह)
3.	दूसरी आँख	(काव्य संग्रह)
4.	पहली यात्रा	(कहानी संग्रह)
5.	दूसरा आँचल	(उपन्यास)
6.	माँ का आँचल	(उपन्यास)
7.	कथाकार रामदरश मिश्र	(शोध समीक्षा)

तथा चार उपन्यास, दो कहानी संग्रह, दो काव्य संग्रह, एक नाटक, एक संस्मरण प्रकाश्य हैं ।

आपका उपन्यास "माँ का आँचल" हिन्दी साहित्य अकादमी गांधीनगर (गुजरात) द्वारा 1993 में पुरस्कृत किया गया है । हिन्दी साहित्य परिषद अहमदाबाद द्वारा आपकी कविता "दूसरी आँख" 1995 में पुरस्कृत हुई । वर्तमान समय में आप खेड़ा (गुजरात) जिले के आलिन्द्रा के श्री एम०एस० पटेल विद्यालय के अध्यापक हैं ।

आपकी बहुत सी रचनाएँ हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है । आप साहित्यिक रूप से आकाशवाणी से भी जुड़े रहे हैं ।

आप आठवीं कक्षा में पढ़ते थे तब से ही आपके कवि हृदय में गीत लिखने की जिज्ञासा हुई । सन् 1968 में पं० दातादीन तिवारी की काव्य पंक्तियाँ सुन आपको गीत लिखने की प्रेरणा मिली । आपने सर्व प्रथम बारहमासा गीत लिखा

था । फिर देश भक्ति के गाने और फुटकर गीत लिखें । आपकी काव्य रचना प्रक्रिया बड़ी ही सहज, सरल और सादी है । आप काव्य के किसी एक पक्ष को स्वीकार न करके उसके दोनों पक्ष को मानते हैं किन्तु अनुभवों के आधार पर ही लिखते हैं । आपकी रचनाशीलता का लक्ष्य काव्य द्वारा अपनी जीवनानुभूतियों को औरों तक पहुँचाना रहा है । आपके मंतव्य से आपके कवित्व के स्फुरण में भीतरी एवं बाहरी प्रेरणाओं में जीवन में आते हुए अभाव ही कारणभूत हुए है । आपकी राय है कि कविता की तृप्ति लय की मांग के साथ कुछ और भी होती है । लय, राग, तुक, छंद-अछंद कविता के पूरक हो सकते हैं, तृप्ति नहीं । आपके विचार से आज की कविता में कथा या घटना के इस्तेमाल से कविता में समृद्धि तो आती है किन्तु यह अनिवार्य नहीं है । आपके कथनानुसार कृतिकार को आलोचना के सुझाव को प्रेरणा समझकर स्वीकार करना चाहिए । आपकी कृतियों में पात्रों का आधार अधिकतर यथार्थ जीवन ही होता है । मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण है कि जहाँ मनुष्य है वहीं जीवन और जगत है । आपकी राय है कि कृति और कृतिकार का सृष्टि और सृष्टा के अलावा अनेक नाते हो सकते हैं । आपकी रचनाओं का विषय निजी दृष्टिकोण है ।

आपके विचार से राजनीति को आप जीवन अनुभव और रचना से जुड़ा पाते है किन्तु उसे रचना का अनिवार्य अंग नहीं मानते । आपके मत से कोई भी कवि या लेखक इसी फसाद का अवलोकन कर सकता है किन्तु स्वयं उससे जुड़ा हुआ नहीं होता ।

आपके प्रिय कवियों में - रामदरश मिश्र, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, जयशंकर प्रसाद, शमशेर बहादुर सिंह, शिवमंगलसिंह सुमन आदि है जिन्होंने आपको प्रभावित किया ।

आप नवोदित सहकर्मियों को कहना चाहते हैं कि - अच्छे कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करते रहो । नये लेखन के लिए भाषा काफी सुदृढ़ होनी चाहिए ।

आपके काव्य संग्रह "फागुन बीते जा रहे" में गाँव परिवेश से उद्दत नये गीतों में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना दृष्टिगत होती है । "दूसरी आँख" ये आपका हिन्दी साहित्य में विशेष योगदान हैं । इस काव्य संग्रह में महिलाओं की वेदना को अत्यंत मर्मस्पर्शी रूप से उभारा गया है । यही आपकी उत्कृष्ट कोटि की भाषा नजर आती है - जैसे -

मेह बरसत घहरात घन नभ माँहि ।
दामिनि दमकि चला चौंध करि जात है ।।
तरै लपै धरती अंगार भानु उगलत ।
फिर भी न गात पिघलत गरमात हैं ।।[1]

§56§ **डॉ० सुधा श्रीवास्तव :**

डॉ० सुधा श्रीवास्तव का जन्म उत्तर प्रदेश के फतेहपुर गाँव में सन् 1938 में हुआ । आपने इलाहाबाद युनिवर्सिटी से एम०ए० किया है । आपने गुजरात युनिवर्सिटी से एल०एल०बी० किया और उसी युनिवर्सिटी से पी०एच०डी० भी किया । आप विगत तीस वर्षों से गुजरात में उच्च शिक्षा से सम्बन्धित हैं । हिन्दी के अध्ययन अध्यापन एवं अनुशीलन से सम्बद्ध होने के अतिरिक्त आप लेखन और रंगमंच, आर्ट फिल्मों से भी जुड़ी हुई हैं । आपकी प्रकाशित कृतियाँ है -

1. महादेवी का बिम्ब विधान §शोध प्रबन्ध§
2. "दंशों के घेरे में" §काव्य संग्रह§
3. श्यामली §कहानी संग्रह§

कई हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर आपकी कविताएँ, कहानियाँ प्रकाशित होती रही है । "प्रक्रिया" नामक सुरुचि सम्पन्न त्रैमासिक पत्रिका के

1- सूर्यदीन यादव - फागुन बीते जा रहे - पृ० 20

संपादन के रूप में दीर्घकाल तक व्यस्त रहे । वर्तमान समय तक आप अहमदाबाद में एच०के० आर्ट्स कॉलेज में प्राध्यापक बनी रहीं । आप हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा सम्मानित हैं ।

आपने बचपन से ही अर्थात् सन् 1950 से ही लिखने का शुरू किया । आपको लिखने की प्रेरणा आपके मामा रावीजी से मिली जो स्वयं अच्छे लेखक थे । आपकी प्रथम काव्य रचना महादेवी वर्मा से प्रभावित रही । आपके काव्य विकास के विभिन्न चरण इस प्रकार हैं - सर्वप्रथम आपने प्रकृति चित्रण, फिर व्यक्तिगत सुख-दुःख, तदुपरांत सामाजिक चेतना एवं समाज के सुख-दुःख को आपके काव्य में स्थान मिला है । आपके मत से कविताएँ भावावेग में लिखी जाती हैं । रचना - प्रक्रिया आपके लिए स्वयं अनजान है । आपके विचार से काव्य में कथ्य मुख्य है किन्तु उसे सशक्त माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए शिल्प जरूरी है अर्थात् सन्तुलन आवश्यक है । आपकी रचनाओं का मूल लक्ष्य समाज को कुछ देना ही रहा है । आपके मंतव्य से आपके कवित्व के स्फूरण में बाहरी हादसे और परिणामतः भीतरी संघर्ष ही जिम्मेदार है । आप इस बात से इनकार करती हैं कि कविता की तृप्ति के लिए लय अनिवार्य है । आपकी कविताओं के पात्रों के आधार यथार्थ जीवन एवं कल्पना दोनों हैं । आप इस बात से सहमत हैं कि किसी भी रचना को पूरा करने के बाद भी उसमें और सोचने समझने की गुंजाइश बनी रहती है । आपके विचार से कृति और कृतिकार का सृष्टि और सृष्टा का ही नाता नहीं होता उससे कहीं अधिक होता है । कृतिकार और कृति का एक वात्सल्यमयी माँ और उसके बच्चे सा सम्बन्ध रहता है । आपने अपने काव्य का विषय निजी दृष्टिकोण के साथ-साथ युग की भावुकता को आलोचना के प्रति तटस्थ दृष्टिकोण रखना चाहिए ।

आपके कथनानुसार किसी भी साहित्यकार को राज्याश्रय पाना साहित्य के हित में नहीं है परन्तु आप इस बात को मानती हैं कि राजनीति को जीवन अनुभव और रचना से कुछ सीमा तक जुड़ा हुआ रहना चाहिए । साथ ही इस बात से भी सहमत है कि किसी भी कवि को सामाजिक एवं राजनैतिक हलचलों में अनिवार्य रूप से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्पृक्त रहना ही पड़ता है ।

विशेष रूप से आपके प्रिय कवि हैं - महादेवी वर्मा, श्री बच्चनजी, श्री दिनकर, श्री अज्ञेय, श्री सुरेश दलाल, चीनूभाई मोदी आदि । नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि अपने ही लिखे हुए को कई बार पढ़ें और संवारें ।

आपकी कविताएँ आधुनिकता बोध से अनुप्राणित है । आपकी कुछ रचनाएं जैसे - व्यथा, नागफनी, दंशों के घेरे में, रेत की मछली आदि बहुत ही अच्छी रचनाएँ मानी जाती है । उदाहरण के लिए -

कैक्टस के फूलों में काँटे ही काँटे हैं,
फूलों की श्वास में चुभन उतर आई है ।
मैंने पिछवाड़े में नागफनी बाँधी थी,
अगवाड़े काँटों की बाड़ उभर आई है ।[1]

§57§ **श्रीमती दिव्या रावल :**

श्रीमती दिव्या रावल का जन्म 1936 में मध्य प्रदेश के गोंदिया गाँव में हुआ था । आपने हिन्दी में "विशारद" की उपाधि प्राप्त की । आपके प्रकाशित काव्य संकलन है -

1. छलोछल §गुजराती काव्य संकलन§
2. स्पंदन §हिन्दी / गुजराती काव्य संकलन§
3. मौन का आंगन §हिन्दी काव्य संकलन§

आपने 14 वर्ष की छोटी उम्र से गुजराती में लिखना शुरू किया । आपको काव्य लिखने की प्रेरणा अपने अंतर से ही मिली । आपने सर्वप्रथम गीत लिखें, फिर मुक्तक एवं छंद मुक्त काव्य की रचना की, यही आपके काव्य विकास के विभिन्न चरण हैं । आपके विचार से आपकी काव्य रचना प्रक्रिया सहज रूप में प्रस्फुटित होती है । आप काव्य के कथ्य एवं शिल्प दोनों पर बल देती हैं । आपके मंतव्य से आपकी कविताओं का मूल लक्ष्य अपने मनोभावों को जनता तक पहुँचाना रहा है । आपके कवित्व के स्फुरण में सांस्कृतिक वातावरण एवं

1- डॉ० अम्बाशंकर नागर - गुजरात : समकालीन हिन्दी कविता - पृ० 45

परिस्थितियों का ही हाथ रहा है । आपने अपने काव्य का विषय युग की भावुकता एवं निजी दृष्टिकोण दोनों को बताया है । आप के कथनानुसार आप कविता की तृप्ति के लिए लय को अनिवार्य नहीं मानतीं ।

मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण है कि "जियों और जीने दो" । सभी सुखी हो । सेवाभावी बने ।" साहित्यकार का किसी न किसी रूप में राज्याश्रय पाना आपकी विचार-धारा से साहित्य के हित में बिल्कुल नहीं है । आप राजनीति का जीवन अनुभव और रचना में परोक्ष रूप से जुड़ना अनिवार्य मानती हैं । साथ ही किसी कवि के लिए सामाजिक और राजनैतिक हलचलों में सम्पृक्त होना आवश्यक मानती हैं ।

आपके प्रिय कवियों में - मीरा, महादेवी वर्मा, माधवरामानुज, भगवतशरण अग्रवाल आदि है ।

आपके काव्य विविध पहलुओं को साथ लिए हुए हैं जैसे -

"काश ! दुःख सब थके जाते ।
या फिर घाव भर ही पाते,
आशा के आँचल की तह से
सपने कभी यूँ बिखर न जाते"।[1]

जमीर गवारा ना करे -
ऐसा गुनाह हम क्यों करें ?
अँधेरे कुएँ में डूबकर
उस बुझी रोशनी को
क्यों ढूँढे ?[2]

1- दिव्या रावल - स्पंदन, मेरा जीवन - पृ0 2।
2- दिव्या रावल - मौन का आँगन, गुनाह

{58} **घनश्याम अग्रवाल :**

घनश्याम अग्रवाल का जन्म राजस्थान के अजमेर में 1940 को हुआ था। आपने एम0ए0, पी0एच0डी0 किया। तत्पश्चात् साहित्यरत्न की उपाधि से सम्मानित हुए। आप साहित्य से अर्थात् कविता, कहानी, नाटक, एकांकी उपन्यास, विवेचना, व्यंग्य सभी विधाओं में पिछले 35 वर्षों से लिख रहे हैं। आपके 10 से भी अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, जिनमें - युगांकन, अभ्युत्थान, महाकवि कालिदास और शकुंतल उनमें उल्लेखनीय हैं। "धरती गाए रे" {काव्य संग्रह} आपका उत्कृष्ठ काव्य संग्रह माना जाता है। आप देश-विदेश की यात्रा बहुत बार कर चुके हैं। आप कविता, कहानी व निबंध पर गवर्नमेंट कॉलेज हिन्दी पुरस्कार से सम्मानित हुए हैं। आपको अपने "अभ्युत्थान" नाटक पर गाँधी स्मृति ट्रस्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

वर्तमानकाल में आप जूनागढ़ {सौराष्ट्र} के बहाउद्दीन कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप में सेवारत हैं।

आपने सन् 1955 से लिखने का प्रारंभ किया। पंडित नेहरू के राष्ट्रीय उद्बोधन से आपको काव्य लेखन की प्रेरणा मिली। भावों की प्रधानता व गहराई आपके मन से अपनी काव्य रचना प्रक्रिया के अंतर्गत स्थान पाते हैं। आप काव्य ~~प्र~~ के कथ्य पक्ष पर विशेष बल देते हैं किन्तु शिल्प भी अनिवार्य समझते हैं। आपके काव्य का मूल लक्ष्य राष्ट्रीयता, भारतीय संस्कृति, मानव-प्रेम, बन्धुत्व व दर्शन तथा आत्मिक प्रेम है। आपके मंतव्य से आपके कवित्व के स्फुरण में राष्ट्र प्रेम, भारत की अखंडता, राष्ट्रीय चरित्र, प्रकृति प्रेम व मानव प्रेम आदि भीतरी और बाहरी प्रेरणाओं का हाथ रहा है। आप कविता की तृप्ति के लिए लय को अनिवार्य नहीं मानते। आप सर्जक होने के साथ-साथ सफल विवेचक भी हैं। आपकी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन और कल्पना का सम्मिश्रण है और आप इसी को कविता मानते हैं। आपके विचार से किसी भी रचना को पूरा करने के बाद उसमें और सोचने समझने की गुंजाइश नहीं रहती। आपके मतानुसार "कृतिकार स्रष्टा होता है। उसका अन्य से सम्बन्ध

व्यक्तिगत है । कवि दोनों स्थितियों से आगे चलता है अर्थात् कृति और कृतिकार का शायद विशेष नाता होता है । आपकी कविता का विषय युग की भावुकता को आप मानते हैं ।

मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण है कि "स्नेहमय, सौहार्द्रमय, करुणामय । दोनों एक दूसरे के पूरक है । जीवन निराश न हो, थके-हारे नहीं व जगत के व्यवहार से पलायन न करे ।"

आप किसी साहित्यकार के राज्याश्रय पाने के पक्ष में नहीं हैं; आप ऐसे साहित्यकारों से घृणा करते हैं । आप वर्तमान राजनीति की विसंगतियों पर लिखकर उनका पर्दाफाश करने के पक्ष में जरूर हैं ।

आपको अपनी सभी रचनाएँ उनकी भावात्मकता एवं हृदय स्पर्शिता के कारण प्रिय है किन्तु आपको "शब्दयात्रा" में विशेष आनन्द मिला और नये काव्य संग्रहों में जो प्रकाशित होने वाले है, अनेक प्रिय रचनाएँ हैं । आपके प्रिय कवि गुप्तजी, प्रसाद, पन्त, निराला, सुमन आदि है । निकट भविष्य में आपका "सच तो यही है" काव्य शीघ्र प्रकाशित होगा ।

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है – "व्यर्थ के अर्थ से बचें । भाषा पर अधिकार व चिंतन को व्यापक व सत्य व हित के लिए व्यक्त करें ।"

§59§ <u>सुरेश शर्मा "कान्त" :</u>

सुरेश शर्मा का जन्म 1942 में अलीगढ़ के बिसवीरपुर गाँव में हुआ था । आपने पूना फिल्म संस्थान से स्नातक की पदवी प्राप्त की । आपका कवि नीरज के साहित्य की ओर विशेष झुकाव रहा । आपके गीतों एवं गज़लों की यह विशेषता है कि आपकी भाषा सहज, सरल शब्दों में सचोट बयानी बनी रहती है । आप हिन्दी साहित्य परिषद अहमदाबाद द्वारा अपनी कहानी के लिए पुरस्कृत और सम्मानित हुए हैं ।

आपने 1958 में कविता लिखने का आरम्भ किया । आपको काव्य रचना की प्रेरणा कबीर की रचनाओं से और कवि गोपालदास नीरज से मिली । आपकी प्रथम काव्य रचना "जब जन्मा था तो न किसी ने बजवाई थी शहनाई" अलीगढ़

में प्रकाशित हुई । आपकी प्रथम रचना 1958 में "वीणावादिनि हंस गामिनी" नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई । आप काव्य के कथ्य पक्ष पर बल देते हैं । आपके काव्य का मूल लक्ष्य प्रेम और वैराग्य है । आपके कवित्व के स्फुरण में भीतरी और बाहरी तौर पर संघर्ष एवं विसंगतियों का हाथ रहा है । आपकी कविताओं के पात्रों का आधार कल्पना एवं यथार्थ जीवन है । आपके मंतव्य से कृति और कृतिकार का नाता सृष्टि और स्रष्टा से कहीं अधिक है । कविता की तृप्ति में लय की माँग को स्वीकार करते हुए आपका कहना है कि उसका चोली दामन का सा साथ है । आपके काव्य का विषय युगीन भावुकता रही ।

मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण है कि "इस मिट्टी से जन्मी काया, इस मिट्टी में जानी है" खूब उड़ाले आसमान पर, जितनी धूल उड़ानी है ।" आप राज्याश्रय को साहित्य के हित में नहीं मानते । आप राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ मानते हैं क्योंकि आजकल का जीवन राजनीति से काफी प्रभावित है । आपके मंतव्य से कवि के लिए सामाजिक और राजनैतिक हलचलों में पूरी तरह सम्पृक्त होना आवश्यक है ।

आपको अपनी रचनाओं में विशेष प्रिय रचना है -

"सरसों के पीले फूलों का मौसम आया नी पाँव
जब से शहर गए हो, बिलकुल भूल गए हो अपना गाँव ।"

आपके प्रिय कवि है - कबीर, खुसरो, रामधारी सिंह दिनकर, नीरज, बच्चनजी, प्रसाद आदि; गुजराती में चन्द्रकान्त शेठ और संस्कृत के कालिदास, बंगला के टैगोर, अंग्रेजी के विलियम वर्डसवर्थ है । आपके कृतित्व पर श्री रजनीकांत जोशी ने कार्य किया है । हाल ही में हिन्दी साहित्य अकादमी गुजरात द्वारा गुजराती कवियों की रचनाओं का हिन्दी अनुवाद शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है और भविष्य में एक गद्य रचना प्रकाशित होने की आशा है ।

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है - "शब्द और स्वर एवं समष्टिगत संवेदना की उपासना ।"

आपने स्वप्न का स्पर्श देकर, एक मौलिक बरणोत्तर कविता की रचना की है । आपकी कविता अत्यन्त हृदयस्पर्शी और संवेदनशील है । इस लम्बी कविता में जीव का आत्मबोध एवं लोगों की प्रतिक्रिया को बड़े ही प्रभावोत्पादक ढंग से व्यक्त किया है । आपके काव्य में आधुनिक जीवन की विसंगतियाँ जैसे - महानगरों की बढ़ती आबादी, संत्रास घुटन, देश की भुखमरी, गरीबी, महँगाई, अत्याचार, आतंकवाद, मंदिर-मस्जिद, धर्म, प्रान्त, भ्रष्टाचार, जाति आदि दृष्टिगत होती है । जैसे -

> खुलेआम हो रही तिजारत,
> तोपों और तमंचों की
> सीमाओं पर फ़सल उगी -
> बारूदों और प्रपंचों की ।[1]

[६७] **<u>श्री कैलाशनाथ तिवारी :</u>**

श्री कैलाशनाथ तिवारी का जन्म 1937 में उत्तर प्रदेश के लखनऊ में हुआ था । आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम०ए० किया । तत्पश्चात् उसी विश्वविद्यालय से एल०एल०बी० भी किया । आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से रूसी भाषा का तीन वर्षीय डिप्लोमा कोर्स किया । साहित्यालोक द्वारा 1993 में प्रकाशित "पखेरू पश्चिम के" काव्य संकलन में आपकी कुछ कविताओं का प्रथम प्रकाशन हुआ । तत्पश्चात् "जिन्दगी की राह में" आपका प्रथम काव्य संग्रह के रूप में प्रकाशित हुआ । हिन्दी साहित्य परिषद, अहमदाबाद के त्रैमासिक "भाषा सेतु" में अंग्रेजी, रूसी एवं गुजराती भाषाओं से हिन्दी में आपके अनुवाद प्रस्तुत होते रहे हैं । साथ ही अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी आपके आलेख एवं कविताएँ समय-समय पर प्रकाशित होती रहीं । "आश्चर्य" हाईकु - संग्रह में आपने रूसी भाषा में अनुवाद किया है ।

1- सुरेश शर्मा "कान्त" - जाती बार न मुख मोड़ो - पृ० ४६

आपकी लेखन की प्रकृति बचपन से ही प्राणों में गूंजती रही, किन्तु 1992 के उपरान्त ही व्यवस्थित ढंग से लेखन कार्य का प्रारम्भ हुआ। अपनी काव्य रचना प्रक्रिया के बारे में आपका मंतव्य है कि यह एक स्वानुभूति पूर्ण सहज प्रक्रिया है। आप काव्य में दोनों पक्ष को महत्व देते हैं। आपके काव्य का मूल लक्ष्य स्वानुभूति का अनावरण - परिवेश पर्यावरण - सामाजिक एवं राजनैतिक संदर्भ रहा है। आपके कवित्व के स्फुरण में भारतीय जीवन दर्शन - चिंतन एवं गंभीर साहित्यावलोकन का प्रभाव दृष्टव्य है। लय को आप काव्य का मूल तत्व मानते हैं। आपके विचार से यह कविता को दीर्घजीवी बनाती हैं और काफी हद तक लय कविता की तृप्ति है। आपकी कविताओं का आधार यथार्थ जीवन एवं कल्पना दोनों ही रहे हैं। किसी रचना को पूरा करने के पश्चात् आपके विचार से उसमें भाव की दृष्टि से न्यून रूप में किन्तु शिल्प की दृष्टि से सोचने समझने की गुंजाइश अधिक रहती है। आपके काव्य का विषय युग की भावुकता और निजी दृष्टिकोण दोनों ही रहे हैं।

मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण है कि "जीवन जैसा है उसे स्वीकार करें, यदि कुछ कर सकें तो श्रेष्ठतर बनाने का यत्न करें।" आप राज्याश्रय को साहित्य के हित में मानने के पक्ष में नहीं है। आप इस बात से सहमत हैं कि आज मानव जीवन से सम्बन्धित राजनैतिक गतिविधियों से रचना धर्मिता अनिवार्य एवं अविभाज्य ढंग से जुड़ी हुई है, साथ ही आप इस बात का समर्थन भी करते हैं। आपके विचार से किसी भी कवि को सामाजिक एवं राजनैतिक हलचलों में पूरक रूप से सम्पृक्त होना आवश्यक समझते हैं। आपके कथनानुसार कृतिकार को आलोचना के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाना ह चाहिए।

आपको अपना काव्य संग्रह "अंजुरी भर प्यास" विशेष प्रिय है। जिसमें आपको सृजन का सर्वाधिक आनन्द मिला। आपके प्रिय कवि - हिन्दी में प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा, दिनकर, नरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल "अंचल", केदारनाथ अग्रवाल, नीरज, धूमिल, मुक्तिबोध है। जबकि संस्कृत में कालिदास, जयदेव, माघ आदि है। आजकल आप गीत - रूसी कवियों के काव्यानुवाद, निबंध एवं लघु कथाएँ लिख रहे है। नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि खूब पढ़ें, चिंतन करें और तब लिखें - किसी को गुरु भी बनाएँ।

आपकी रचनाओं में हमें तरल भावना, अविरल प्रकृति प्रेम की रागात्मकता, सरल ग्राम्य सुषमा एवं तरंगायित संवेदनशीलता की सम्पदा का भाव मिलता है जैसे -

नुपूरों का क्वणन
जैसे मेघ आसाढ़ी गरजते
शीश पर कुन्तल घटाएँ
हाथ में कंगन दमकते
चाँदनी सा धवल तन
ऋतुराज सी यह कौन हो तुम....
तुम स्वयं ही गीत हो ।[1]

नवीन बिम्ब का प्रयोग यहाँ हमें मिलता है जैसे -

घाटी की पनचक्की जैसे
खुद ही खुद को पीसा करती ।[2]

(61) **ओंकार अग्निहोत्री "शिवम"**

ओंकार अग्निहोत्री का जन्म सन् 1950 में उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के हैथारगुनाथपुर गाँव में हुआ था । आपने इन्टरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त की है । आपकी प्रकाशित रचनाएँ कुछ काव्य संग्रहों में है जैसे -

1. नई धरती - नया आकाश
2. परिन्दे पश्चिम के
3. बूँद - बूँद घट में

काव्य के अतिरिक्त संगीत कला के प्रति आपकी विशेष रुचि है । आपकी रचनाएँ बड़ौदा एवं अहमदाबाद के आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से समय-समय

1- कैलाशनाथ तिवारी - जिन्दगी की राह में - पृ0 55

2- कैलाशनाथ तिवारी - जिन्दगी की राह में - पृ0 10

पर प्रसारित होती रही है । आप निम्नस्थ संस्थाओं के कार्यकारिणी सदस्य के रूप में आज भी सेवारत है -

1. हिन्दी साहित्य परिषद - अहमदाबाद
2. गुजरात हिन्दी समाज - अहमदाबाद
3. अखिल गुजरात कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज - अहमदाबाद

कई कवि सम्मेलनों में भी आपको पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । आपने विद्यार्थी जीवन से सन् 1967 से लिखने का आरम्भ किया । आपको काव्यलेखन की प्रेरणा आपके पूज्य पिताश्री से मिली । आपकी सर्वप्रथम वीर रस प्रधान रचना कॉलेज की पत्रिका में "गोलियों की बौछार" नामक शीर्षक से प्रकाशित हुई । अपनी काव्य रचना प्रक्रिया के विषय में आपका मंतव्य है कि कविता समसामयिक भावनाओं की अभिव्यक्तियों का प्रस्तुतीकरण है जो एक सहज है । आप काव्य के शिल्प की अपेक्षा कथ्य पक्ष पर विशेष बल देते हैं । अपने काव्य का मूल विषय आप सामाजिक जागरूकता को मानते हैं । आपके कवित्व के स्फुरण में भीतरी और बाहरी प्रेरणाओं के रूप में आपके मत से भ्रष्टाचार एवं धार्मिक व जातिवाद का उपद्रव है । कृतिकार और आलोचना के संबंध में आपकी राय है कि "सही आलोचना स्वयं को संवारने का एक दर्पण है ।" आप अपनी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन और कल्पना दोनों को मानते हैं । आपके विचार से कोई भी रचना कभी पूरी नहीं होती, प्रत्येक रचना अधूरी ही रहती है, उसमें सोचने समझने की गुंजाइश नहीं रहती है । आप केवल सर्जक हैं । युग की भावनाओं को आपने अपनी कविता का विषय बनाया है ।

आप इस बात से सहमत हैं कि साहित्यकार को जीविकोपार्जन हेतु राज्याश्रय पाना योग्य है । साथ ही राजनीति को भी आप जीवन अनुभव और रचना में अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ पाते हैं । आप इस बात को मानते हैं कि प्रत्येक कवि पर उसके देश की सामाजिक व राजनैतिक हलचलों का अक्सर प्रभाव रहता है ।

आपको "बापू के अधूरे सपने" नामक रचना अपनी रचनाओं में विशेष प्रिय है । आपकी व्यंग्यात्क रचना के सृजन में आपको सर्वाधिक आनन्द इस रचना से मिला -

"रिश्वतखोरी चोर बाजारी, आतंकवाद का धाम है ।
कैसे कह दूँ जग में मेरा भारत देश महान है ।।"

आपके हिन्दी के प्रिय कवियों में श्री गोपालदास नीरज, डॉ० किशोर काबरा प्रमुख हैं । जबकि आपके गुजराती के प्रिय कवि है श्री कृष्णकान्त दवे ।

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि "सामाजिक व राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए अपनी रचनाओं को लोकप्रिय बनायें ।"

[62] <u>रमेशचन्द्र शर्मा "चन्द्र"</u>

श्री रमेशचन्द्र शर्मा का जन्म 1935 में अलीगढ के पचों गाँव में हुआ । आपने वाणिज्य स्नातक की पदवी प्राप्त की है । आपका प्रथम गीत संग्रह "सुधियाँ शेष रह गयी" सन् 1964 में प्रकाशित हुआ । आपकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं । आप "मेव स्वांग" मासिक म द्वारा विशेष पुरस्कृत हुए हैं । दिनकर हिन्दी साहित्य संस्थान, बिहार द्वारा आप "साहित्य महोपाध्याय" की उपाधि से भी सम्मानित हुए हैं । वर्तमान समय में आप ऑडिट ऑफिसर के रूप में महालेखा कार्यालय, अहमदाबाद में सेवारत हैं ।

आपने 1962 से लेखन का प्रारम्भ किया । आपको "साप्ताहिक हिन्दुस्तान" में प्रकाशित नीरजजी के गीत से काव्य लेखन की प्रेरणा मिली । आपके काव्य विकास के विभिन्न चरणों में सर्वप्रथम गीत, फिर हाइकु लेखन और आजकल गजल लेखन है । अपनी काव्य रचना प्रक्रिया के बारे में आपका मत है कि "मैं लिखने में शीघ्रता नहीं करता, अनुभूति को पकने देता हूँ, गुनगुनाकर लिखता हूँ ।" आप काव्य के दोनों पक्ष पर बल देते हैं । आपके काव्य का मूल लक्ष्य स्वयं को अभिव्यक्त करना है । सत्संग एवं आध्यात्मिक साहित्य तथा स्वयं के अनुभव ही आपके कवित्व के स्फुरण में प्रेरणा रूप है । आपके विचार से कवित्व के लिए लय अनिवार्य है । आज की कविता पर साम्प्रत देश विदेश की घटनाओं का प्रभाव तो पड़ता ही है, आपके मतानुसार इससे कविता समृद्धि पाती है । आपको सर्जन के अतिरिक्त विवेचन धर्म में भी रुचि है । आपके विचार से आपकी रचनाओं को पूरा होने के पश्चात् उसमें सोचने समझने की कोई गुंजाइश नहीं रहती क्योंकि आपके मत से आपका चिंतन सुस्पष्ट है ।

मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण है कि "मनुष्य जीवन दुर्लभ है, इसको प्रेम, त्याग, करुणा से जीना चाहिये । अपने आनन्द में जगत को भागीदार करना चाहिये । जगतकल्याण करना चाहिये ।" आप निजी दृष्टिकोण को अपने काव्य का विषय बनाते है । आपके मंतव्य से कृतिकार को आलोचना के प्रति तटस्थ रहना चाहिए ।

आपको अपनी रचनाओं में विशेष रूप से यह रचना "मर गये तो रोशनी के पुंज बतलाये गये" प्रिय है जो यथार्थ का चित्रण करती है । आपकेक विशेष रूप से प्रिय कवि है सर्वश्री बच्चनजी, नीरज, त्यागी, महादेवी वर्मा, अज्ञेयजी आदि ।

आजकल आप गज़लें लिख रहे हैं ।

गीतों से बात चली संसद तक पहुँच गयी
राजनीति - बहसों ने करवट ली नयी-नयी
निष्कर्ष यही निकला हां आश्वासन छिछला
शब्द ज्यों प्रणाम ।[1]

§63§ <u>श्रीमती प्रतिभा पुरोहित</u> :

श्रीमती प्रतिभा पुरोहित का जन्म 1960 में हुआ । आपने एम०एस०सी० किया । तत्पश्चात् बी०एड० भी किया । आपका प्रथम काव्य संग्रह "अनुभूति" प्रकाशित हुआ है । हिन्दी के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएं प्रकाशित होती रही है । आपको महाविद्यालयीन जीवन में कविता, निबन्ध, कहानी आदि में पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।

आपने विद्यार्थी जीवन से ही लेखन का प्रारम्भ किया । आपको अपनी माता एवं गुरुजनों से काव्य लेखन की प्रेरणा मिली । आपकी प्रथम रचना है "माँ की करुण गाथा" जो 1975 में लिखी गई जो अप्रकाशित है । आपके काव्य

1- सं० अम्बाशंकर नागर, रामकुमार गुप्त - नयी धरती नया आकाश
क रमेशचन्द्र शर्मा "चन्द्र" - बढ़ते का अर्थ बुझ - पृ० 75

विकास के विभिन्न चरण हैं - प्रारम्भ में चतुष्पदी, रचनायें मुक्तक, क्षणिकायें, साथ में तुकबन्दी की कोशिश और बाद में नव कविता, अकविता के रूप में लेखन आरम्भ हुआ । अपनी काव्य रचना प्रक्रिया के विषय में आपका मत है कि व्यथा की चरम सीमा जब कलम उठाने को मजबूर करती है तब सहज रूप से कविता का जन्म होता है ।" आप काव्य में शिल्प एवं तथ्य दोनों को अनिवार्य मानती हैं । आपके काव्य का मूल लक्ष्य आम आदमी का दर्द ही रहा है । जीवन के संघर्ष का यथाशक्ति चित्रण करना ही आपका उद्देश्य रहा है । आपकी कविताओं के पात्रों का आधार विशेष रूप से यथार्थ जीवन रहा है । आप मानती हैं कि तुक बन्दियों पर सोचने की गुंजाइश रहती है किन्तु अछांदस रचना को एक बार पूरा करने के पश्चात् सोचने की गुंजाइश नहीं रहती । आप लय को कविता में अनिवार्य नहीं मानती । कृति और कृतिकार का रिश्ता सृष्टि और सृष्टा का तो होता है साथ में जैसे माँ से बालक का, गुरु से शिष्य का, सागर से बूँद का वैसे ही कविता से कवि का होता है । आपने अपने काव्य का विषय युग की भावुकता को बनाया है।

राज्याश्रय के बारे में आपका मंतव्य है कि साहित्य को आजीविका से जोड़ना उचित नहीं । साहित्य में हित की भावना होनी चाहिये । "साहितस्य भाव साहित्यं" आप राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में अनिवार्य रूप से जुड़ने के पक्ष में नहीं है । आप मानती है कि एक साहित्यकार को राजनीति से अलग अपने सोच के दायरे व्यक्ति परक रखने चाहिए । आप किसी कवि के लिए कुछ सीमा तक सामाजिक और राजनैतिक हलचलों से सम्पृक्त रहना आवश्यक मानती है । साहित्य समाज का दर्पण है तो उसका प्रभाव साहित्य पर जरूर पड़ेगा इस बात का आप समर्थन करती है ।

आपको अपनी "बहस" रचना विशेष प्रिय है क्योंकि वह नई पीढ़ी की समस्याओं को उजागर करती है और इसे आकाशवाणी इन्दौर पर भी पढ़ा गया, साथ ही महाविद्यालयीय काव्य स्पर्धा में इसे प्रथम स्थान मिला । आपको अपनी कृति "अनुभूति" के सृजन में सर्वाधिक आनन्द मिला । हिन्दी में आपके प्रिय कवि निराला, अज्ञेय, किशोर काबरा, महादेवी वर्मा है । जबकि गुजराती में धीरज शाह, उमाशंकर जोशी है और संस्कृत में विशेष प्रिय कालिदास हैं ।

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि "रचना स्वतः स्वातः सुखाय"होती है । प्रलोभनों, आलोचनाओं से बचकर, जीवन के हर पक्ष से साक्षात्कार करना चाहिये तथा अपनी कलम को विचार का धनी बनाना चाहिए ।"

§64§ नामदेव ताराचंदाणी :

श्री नामदेव ताराचंदाणी का जन्म 1946 में सिन्ध के खैरपुर रियासत के लुकमान नामक गाँव में हुआ । आपने हिन्दी साहित्य से एम0ए0 किया । आप सिन्धी के सशक्त रचनाकार हैं । आप स्वच्छंद धरा के युवा कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, अनुवादक और समीक्षक हैं । सिन्धी के अतिरिक्त गुजराती और हिन्दी लेखन में भी आप सक्रिय हैं । आपके प्रकाशित -

1. जोड़ कट §उपन्यास§
2. अठों सुर §कविता संग्रह - सिन्धी§
3. विछू §कहानी संग्रह§
4. पत्ता ओच्छा §उपन्यास - गुजराती में§ हैं ।

आपको अपने काव्य संग्रह "अठों सुर" और उपन्यास "पत्ता ओच्छा" के लिए पुरस्कार मिला है । गुजरात साहित्य अकादमी, सेन्ट्रल हिन्दी डायरेक्टरेट, केन्द्रीय पुरस्कार आदि भी आपको मिले हैं ।

आपने 1965 से लिखना प्रारम्भ किया । आपकी प्रथम काव्य रचना 1965 में सिन्धी साप्ताहिक "हिन्दवासी" के दीपावली अंक में हेमंत कुमार के एक गीत "ऐ मेरे प्यारे वतन से " की प्रेरणा से "वतन" नाम से प्रकाशित हुई ।

अपनी काव्य रचना प्रक्रिया के विषय में में आपका उत्तर है कि "एक अहसास की अनुभूति विचार सूत्र के रूप में कभी सूझ जाती है - फिर कुछ विशेष कठिन नहीं" । आप काव्य के कथ्य पक्ष पर अधिक बल देते हैं । आपकी कविता का मूल लक्ष्य चिन्तन रहा है साथ ही पौराणिक संदर्भों में नये परिवेश को उजागर किया गया है । कवित्व के स्फुरण में भीतरी तौर पर आप दार्शनिक दृष्टि से प्रेरित हुए जबकि बाहरी दृष्टि से सौन्दर्य से प्रेरणा पाते रहे । आपकी कविताओं का आधार यथार्थ एवं कल्पना दोनों को मानते हैं । आपके मत से किसी भी रचना को पूरा करने के बाद उसमें और सोचने समझने की गुंजाइश रहती ही है ।

आपने अपने काव्य का विषय युगीन भावुकता को बनाया है । आप कविता की तृप्ति में लय से अधिक अनुभूति को स्थान देते हैं । आप सर्जक के साथ साथ एक विवेचक भी हैं ।

आपको अपनी कहानी "फीयांसी" विशेष प्रिय है । आपको अपने उपन्यास "जोड़ कट" गुजराती में "पत्ता ओच्छा" से सर्वाधिक आनन्द मिला । आपके विशेष रूप से प्रिय कवि "कबीर" हैं ।

आजकल आप नाटक, कहानी, कविता आदि लिख रहे हैं ।

{65} **श्रीमती मीरा रामनिवास :**

श्रीमती मीरा रामनिवास का जन्म 1956 में राजस्थान के भारतपुर गाँव में हुआ था । आपने संस्कृत विषय के साथ एम0ए0 किया । तत्पश्चात् राजस्थान में व्याख्याता के रूप में सेवारत रहीं । आप 1985 से पुलिस सेवा से संलग्न हुई । आज आप गुजरात के बड़ौदा शहर में नायब पुलिस कमिश्नर के स्थान पर आरूढ हैं जो गौरव की बात है ।

आपका प्रथम काव्य संग्रह "अंकुर" प्रकाशित हुआ । आपका एक कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हुआ है जिसका नाम है - "स्मृतियों के दायरें" । आप हिन्दी पत्र पत्रिकाओं में समय-समय पर लिखती रही हैं । आपको 1992-93 में हिन्दी साहित्य अकादमी अहमदाबाद से अपनी रचना के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ । साथ ही शिक्षा साहित्य कला विकास समिति {उ0प्र0} द्वारा अपनी रचनाओं के लिए "साहित्य श्री" की उपाधि से सम्मानित किया गया । आपको संगीत, पठन-पाठन आदि में विशेष रुचि है । घुड़सवारी में आपको सविशेष रुचि है ।

आपने लिखने का प्रारम्भ विद्यार्थी जीवन से ही किया । आपका सर्व प्रथम झुकाव काव्य के प्रति रहा । तत्पश्चात् कहानी लेखन की ओर आप विशेष रूप से जुड़ी रहीं । आपके मत से आपकी काव्य रचना प्रक्रिया सहज एवं सरल है ।

आप उसके माध्यम से समाज को कुछ देना चाहती है । आप काव्य में कथ्य पर विशेष बल देती हैं । आपके मंतव्य से आपके काव्य का मूल लक्ष्य मानव मूल्यों की अभिव्यक्ति एवं प्रकृति चित्रण रहा है । आप आपके कवित्व के स्फुरण में खुद की संवेदनशीलता एवं समाज की विषमता को प्रेरणास्त्र मानती हैं । आपकी कविताओं का आधार यथार्थ जीवन के साथ-साथ कल्पना भी है । आप इस बात को स्वीकार करती हैं कि किसी भी रचना को पूरा करने के पश्चात् भी उसमें और सोचने समझने की गुंजाइश रहती ही है । कविता की तृप्ति के लिए आप लय को अनिवार्य नहीं मानती । कविता की समृद्धि का आधार आप घटनाओं पर निर्भर कथ्य को मानती हैं ।

जीवन और जगत के विषय में आपका दृष्टिकोण है कि मनुष्य जीवन तथा जगत सृष्टि की सुन्दरतम् कृतियाँ है । प्रत्येक मनुष्य को इसे सुन्दरतम ढंग से जीने, देखने व अनुभव करने का प्रयास करना चाहिए । युग की भावुकता ही संवेदनशीलता के कारण निजी भावुकता बन गई है जिसको आपने अपने काव्य का विषय बनाया है । आप राज्याश्रय के पक्ष में नहीं हैं । आप राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में अनिवार्य नहीं मानती । किसी कवि के लिए सामाजिक और राजनैतिक हलचलों में सम्पृक्त होना आप अनिवार्य मानती हैं ।

आपको अपना कहानी संग्रह विशेष प्रिय है । आपके प्रिय कवियों में कालिदास, रहीम, छायावादी कवि, हिन्दी के सभी संत कवि हैं । आपका रचनाकार के लिए संदेश है कि "रचनाओं में सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की अभिव्यक्ति होनी चाहिए ।"

"सादगी और संस्कृति थी मेरे गाँव में
प्रेम की बरसात थी नहीं वैर था मेरे गाँव में ।"

– मीरा रामनिवास [अंकुर"से]

[60] जादवभाई तुलसीदास पटेल "रश्मिभिधु" :

जादवभाई पटेल का जन्म 1940 में उ0 गुजरात के महेसाना जिले के डेरावपुरा गाँव में हुआ था । आपने एम0ए0 किया । बाद में पी0एच0डी0 भी किया । आपने हिन्दी में कोविद एवं विनीत भी किया । आपके साहित्यिक प्रकाशन हैं -

1. "अंजलि" {गुजराती काव्य संग्रह}
2. "ऋतंभरा" {गुजराती काव्य संग्रह}
3. "ज्योतिर्मयी" {हिन्दी काव्य संग्रह}
4. "स्वस्तिक" {काव्य संग्रह}
5. "उत्तरभारती" {प्रवास कथा}

आप कई पत्र-पत्रिकाओं में सम्पादक के रूप में सेवारत रहे । विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में गुजराती एवं हिन्दी में आपके विविध लेख प्रकाशित हुए हैं । आप आकाशवाणी से भी जुड़े रहे हैं । कैसेट आदि में भी आपकी गरबा कृति प्रसिद्ध एवं पुरस्कृत हुई है । हिन्दी साहित्य परिषद, अहमदाबाद द्वारा आयोजित हिन्दी काव्य लेखन स्पर्धा में आपको पुरस्कार एवं रजत चंद्रक प्राप्त हुआ है ।

आपने 1960 से लिखने का आरम्भ किया । लेखन की प्रेरणा आपको प्रकृति से मिली । आपकी प्रथम काव्य रचना "जीवनमूल्य" है जो 1960 में आपके काव्य संकलन "अंजलि" में प्रकाशित हुई । आपके काव्य सर्जना के त्रिविध स्रोत रहे - प्रकृति, प्रणय और भक्ति । आपकी अपनी कविता रचना प्रक्रिया के विषय में आपका मंतव्य है कि "कविता कवि को निजी एकान्त की देन है । वह विषाद में भीगी मधुर कूक है । चिरंतन क्षणों की शाश्वत अभिव्यक्ति ही कविता है ।" आप कथ्य पर विशेष बल देते हैं । आपकी रचनाओं का मूल लक्ष्य आपके जीवनमूल्यों की संस्थापना ही रहा है । आपके कवित्व के स्फुरण में प्रकृति - निसर्ग दर्शन, एकान्त, प्रीति आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे । आप इस बात से सहमत है कि किसी भी रचना को पूरा करने के बाद उसमें और सोचने समझने की गुंजाइश रहती ही है । आपके विचार से कृति कृतिकार की अभिव्यक्ति और दर्शन दोनों है । आपने निजी दृष्टिकोण की अर्थात्

जीवन दर्शन को काव्य का विषय बनाया हैं । काव्य में लय की अनिवार्यता को आप स्वीकार करते हैं । आप मानते हैं कि कविता चाहे अछांदस हो, लयान्वित हो अवश्य होनी चाहिए । मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण सर्वथा विधायक है ।

आप साहित्यकार के लिए राज्याश्रय को ठीक नहीं मानते । आपके विचार से इससे साहित्य का गौरव नष्ट होगा और सर्जक की प्रतिभा भी क्षीण हो जाती है । आप राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ नहीं मानते । आप इस बात तक तो सहमत है कि सामाजिक व राजनैतिक हलचलों का प्रभाव कवियों की रचनाओं पर पड़ता है किन्तु आप इस बात को आवश्यक नहीं मानते कि किसी कवि को उसमें सम्पृक्त होना अनिवार्य हो।

आपको अपनी रचनाओं में विशेष रूप से "मंकोडे" अछांदस रचना प्रिय है । जबकिगुजराती में "प्रमन्त जंग" विशेष प्रिय रही है । सृजन का सर्वाधिक आनन्द आपको "मूल्यहास" में मिला । जबकि गुजराती में "वंदना" से मिला । आपके गुजराती के प्रिय कवि बोटादकर, कवि न्हानालाल, राजेन्द्र शाह, उमाशंकर जोशी हैं । जबकि संस्कृत में कालिदास, भवभूति और भास है । अंग्रेजी में शेक्सपीयर, वर्डसवर्थ जैसे प्रिय कवि है जबकि हिन्दी में पन्त, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त आपके विशेष प्रिय है ।

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि जीवन के शाश्वत मूल्यों को पुनःजीवित करें ।

§67§ श्री नरेन्द्र दवे :

नरेन्द्र दवे का जन्म 1929 में राजकोट में हुआ था । आपके गुजराती एवं अंग्रेजी में लिखित कुल 25 ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं जो विविध विधाओं में हैं । जैसे काव्य, उपन्यास, कहानियाँ, निबंध, आलोचना आदि । "गुजरात के हिन्दी कवि" के संकलन संपादन ग्रन्थ §डॉ० नागर, डॉ० काबरा एवं रामचेत वर्मा§ में संगृहित हिन्दी रचनाएँ प्रकाशित हुई है । आप गुजरात लोक साहित्य समाज के महामंत्री के पद पर रहे हैं । "शब्द रंग" के अध्यक्ष हैं । गुजरात उर्दू बोर्ड के महासचिव के रूप में सेवारत हैं । आप गुजरात हिन्दी साहित्य मंडल के अध्यक्ष

भी है । गुजरात हिन्दी साहित्य लोक के परामर्शक मंडल के अध्यक्ष के रूप में सेवारत हैं । गुजरात साहित्य संघ के महासचिव के रूप में रहे ।

आप गुजरात के वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार के उपरान्त गुजराती और उर्दू के भी प्रसिद्ध वरिष्ठ साहित्यकार हैं । आपकी रचनाएं भारत की विभिन्न भाषाओं के उपरान्त अंग्रेजी और रूसी भाषा में भी अनुदित हो कर प्रकट हुई है । आपको "राजस्थान विद्या पीठ विश्वविद्यालय" द्वारा विशिष्ट सर्वोचित राष्ट्रीय साहित्य संबोधन "साहित्यश्री निधि" प्राप्त हुआ है । आप गुजरात के सर्वप्रथम साहित्यकार है जिनको राष्ट्रीय स्तरीय सम्मान प्राप्त हुआ है । आपको "गुर्जर सेवा-रत्न" एवॉर्ड भी प्राप्त हुआ है ।

आपने अपनी किशोरावस्था में अपनी 7 वर्ष की उम्र से लिखना प्रारम्भ किया । आपकी प्रथम रचना "सागर रहस्य" है । अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में आपका मत है कि कविता सहज प्रक्रिया है । आप काव्य के किसी खास पक्ष पर बल नहीं देते । कल्पना से अधिक आप यथार्थ जीवन अनुभव को प्राधान्य देते हैं । आप निजी दृष्टिकोण या युग की भावुकता दोनों के सामंजस्य को मानते हैं । आप सर्जक के साथ-साथ विवेचन धर्म को मानते हैं । राज्याश्रय के लिए आपके विचार है कि राज्याश्रय लेना कोई खराब बात नहीं है किन्तु उसे किस "हेतु" से दिया और लिया जाता है उसका महत्त्व है ।

आपने स्वानुभावों एवं परानुभावों से ही प्रेरणा प्राप्त की है । मनुष्य जीवन और जगत के विषय में आपका अभिमत है "मनुष्य जीवन और जगत हम कुछ भी कहें बात एक ही है कि जहाँ तक मेरा अस्तित्व है वहाँ तक सब चीजें यथार्थ हैं मेरे अस्तित्व के बाहर कुछ भी नहीं है और मेरे चेतोविस्तार अनुसार सर्जन प्रक्रिया आगे बढ़ती है इसमें मेरा "दृष्टिकोण" भी निहित है ।

आपके हिन्दी के विशेष रूप से प्रिय कवि है - गजानन माधव मुक्तिबोध, गुजराती में झवेरचंद मेघाणी, संस्कृत में जगन्नाथ पंडित और विदेशी भाषाओं में पाब्लो नेरूदा, कार्ल सेंडबर्ग आदि ।

MEHTA LIBRARY University of Baroda

नये रचनाकारों को कोई संदेश न देते हुए भी आप अपने विचारों के माध्यम से उन्हें कहते हैं कि "भेदभाव साहित्य प्रगति के लिये बाधक और विघातक है ।" आप साहित्यिक "तिकड़मबाजी" से बचें ।

§68§ श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय :

श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय का जन्म 1956 में रायबरेली में हुआ । आपने बी०एस०सी० किया । बाद में एल०एल०बी० किया फिर बी०एड० भी किया । विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाओं का प्रकाशन हुआ है । "साहित्यालोक" की गोष्ठियों में काव्य-पाठ, आकाशवाणी द्वारा काव्य-पाठ, विविध सम्मेलनों में काव्य-पाठ एवं हिन्दी साहित्य परिषद एवं अकादमी की गतिविधियों में सक्रिय रूप से कार्यरत रहे हैं ।

आप साहित्य विद्यालंकार की उपाधि से सम्मानित हुए हैं । साथ ही विद्यावाचस्पति की उपाधि से भी आप सम्मानित हुए हैं ।

आपने 1989 से लिखने की शुरूआत की है । एक पादपूर्ति स्पर्धा में आयोजक के प्रोत्साहन से आपको व्यंग्य अछांदस रचना लिखने की प्रेरणा मिली । यह कविता 1989 में अमेठी दर्पण में प्रकाशित हुई । सहज रूप से उठनेवाले भावों की अभिव्यक्ति ही आपकी काव्य रचना प्रक्रिया है । आप कथ्य को विशेष रूप से महत्व देते हैं । आपके काव्य का मूल लक्ष्य अपने विचारों को पाठकों तक पहुंचाना है । मानव हृदय पर परिवेश का प्रभाव ही आपके मत से अपने कवित्व के स्फुरण में प्रेरणा रूप बना । आप यथार्थ जीवन को अपने काव्य का आधार मानते हैं । कोई भी रचना अपने आप में कभी भी पूर्ण नहीं होती इस बात से आप सहमत हैं । आपके विचार से कृति और कृतिकार का नाता शरीर और आत्मा का सम्बन्ध है । आपने अपने काव्य का विषय युग की भावुकता को माना है । आप काव्य की तृप्ति के लिए लय को अनिवार्य नहीं मानते । आपको विवेचन धर्म में नहीं किन्तु सर्जन में ही रुचि है ।

राज्याश्रय के बारे में आपके मत है - "राज्याश्रय पाने की सोच वाला व्यक्ति साहित्यकार बनने का अभिनय करता है होता नहीं" किन्तु आप राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ पाते हैं। आपके मंतव्य से किसी भी कवि को सामाजिक एवं राजनैतिक हलचलों में कुछ सीमा तक ही जुड़ना चाहिए।

आपके प्रिय कवि हैं - दुष्यंत कुमार, चन्द्रसेन, विराट आदि। आजकल आप "सतसई" (दोहा संग्रह) लिख रहे हैं जो निकट भविष्य में प्रकाश में आने की संभावना है।

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है कि -

"मन में उठती विचारों की तरंगों को व्यर्थ न जाने दीजिए
शब्दों के जाल में लपेट लें, नई रोशनी, नई दिशा मिलेगी मन को।"

(६१) <u>डॉ० प्रणव भारती :</u>

डॉ० प्रणव भारती का जन्म उत्तर प्रदेश के मुज्जफर नगर में सन् 1947 में हुआ था। आपने एम०ए० किया। तत्पश्चात् पी०एच०डी० भी किया। आपकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है। "टच मी नोट" आपका एक प्रकाशित उपन्यास है। दूसरे दो उपन्यास "अपंग" एवं "चक्र" प्रकाशनाधीन है। गीत - गज़ल संग्रह भी शीघ्र ही प्रकाश्य है। 1971 में उत्तर प्रदेश संस्थान जानी, जिला मेरठ से "साहित्यशास्त्री" की उपाधि से सम्मानित किया गया।

आपने बारह वर्ष की उम्र से ही लिखने का प्रारम्भ किया। काव्य लेखन की प्रेरणा आपको अपने पूज्य माता - पिता से मिली। आपकी प्रथम काव्य रचना "शैशव" जो 1960-61 में स्कूल की पत्रिका में प्रकाशित हुई। काव्य रचना प्रक्रिया के विषय में आपका मंतव्य है कि आपकी रचनाएँ सहज रूप से ही विचारों के माध्यम से पनपती है। आप काव्य के कथ्य पक्ष पर विशेष बल देते हैं। अपनी बात आम आदमी तक पहुँचाना ही आपकी कविताओं का मूल लक्ष्य रहा है। आप मानती हैं कि आपके कवित्व के स्फुरण में घर का परिवेश ही प्रेरणा रूप रहा है। आपकी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन है। आप इस

बात को स्वीकारती हैं कि किसी भी रचना को पूरा करने के बाद भी उस पर और सोचने समझने की गुंजाइश बनी रहती है । आपने निजी दृष्टिकोण एवं युग की भावुकता दोनों को अपने काव्य का विषय बनाया है किन्तु युग की भावुकता को विशेष महत्वपूर्ण माना है । काव्य में लय की मांग को आप अनिवार्य नहीं मानती । आप के कथनानुसार आप केवल अपने सर्जन में ही लीन रहती हैं ।

आप राज्याश्रय को साहित्य के हित में बिल्कुल नहीं मानती । आप राजनीति को भी जीवन अनुभव और रचना में अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ नहीं मानती । आपके मंतव्य से कवि को सामाजिक एवं राजनैतिक हलचलों में सम्पृक्त तो होना चाहिए किन्तु कुछ मर्यादा के अन्दर ही ।

आपको अपनी रचनाओं में "संवेदना" विशेष प्रिय है । आपको अपनी रचनाएँ "धानी जल आ", "तब और अब" तथा "उद्वेलन" इन रचनाओं के सृजन में सर्वाधिक आनन्द मिला । आपके प्रिय कवि हैं – कबीर, मीरा, तुलसी, नीरज, बच्चनजी, मुक्तिबोध ; गुजराती के प्रिय कवि माधव रामानुज है जबकि संस्कृत के कालिदास, बंगला के टागौर और पंजाबी के अमृता प्रीतम हैं ।

मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण है –

> "जब तक मनुष्य है तब तक जीवन है और जब तक जीवन है तब तक जगत । इस जगत में आने के बाद मनुष्य को जितना सरलतम जीवन जी सकने की सुविधा हो, जितना प्यार फैला सके, वही सफल है ।"

आजकल आप उपन्यास और कविता लिख रही हैं । निकट भविष्य में "एक निःशब्द सिलसिला" काव्य संग्रह प्रकाशित होने की आशा है । नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है – कविता – – – कविता ही है । उसके माध्यम से कोई संदेश दे सके तो अति उत्तम ।

§70§ <u>डॉ० रमणलाल पाठक :</u>

डॉ० रमणलाल पाठक का जन्म 1935 में गुजरात के बड़ौदा शहर में हुआ था । आपने एम०ए० किया । तत्पश्चात् पी०एच०डी० भी किया । आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हैं –

1. गुजरात के संतों की हिन्दी वाणी [सह लेखन] 1969
2. संतप्रिया [संपादन] 1979
3. गुजरात के हिन्दी साहित्य का इतिहास 1996
4. संतप्रिया [विद्यार्थी संस्करण] 1993
5. "अखो: एक स्वाध्याय" [गुजराती]
6. मृणालिनी देवी [अनुवाद] 1995

आपने युवावस्था से लिखने का प्रारम्भ किया। आपकी पृथक काव्य रचना प्रकृति पर आधारित है। आप अनुभूतियों की तालात्मक अभिव्यक्ति पर विशेष बल देते हैं। आपके कवित्व म के स्फूरण में भीतरी और बाहरी रूप से प्रकृति का ही हाथ रहा है। आपकी कविताओं का आधार यथार्थ जीवन और कल्पना दोनों रहे हैं। आप इस बात को स्वीकारते हैं कि किसी रचना को लिखते समय या उसे पूरा करने के बाद भी ऐसा लगता है कि आपकी जिस विचारधारा को लेकर वह चली थी उस पर अभी और सोचने समझने की गुंजाइश है। आप मानते हैं कि रचना-प्रक्रिया के दौरान बाहर और भीतर की यथार्थताओं के पहले से लगाए गए अर्थ फीके पड़ने लगते हैं और उनके स्थान पर नये आत्म विस्मृतकारी अर्थ उभरने लगते हैं और आपको सत्य के निकट से निकटतर पहुँचने का आभास दिलाते हैं। आपने निजी दृष्टिकोण को अपने काव्य का विषय बनाया है। आपको पठन एवं विवेचन धर्म दोनों में रुचि हैं।

साहित्यकार के लिए राज्याश्रय पाने की सोचना भी आप योग्य नहीं मानते। आप कवि के लिए सामाजिक और राजनैतिक हलचलों में सम्पृक्त होना आवश्यक मानते हैं क्योंकि आप कवि को समाज की इकाई मानते हैं। मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण विधेयात्मक है। सुखपूर्ण एवं आनन्दमय जीवन को आप मानते हैं।

आपके गुजराती के प्रिय कवियों में उमाशंकर जोशी सुन्दरम् है। संस्कृत के कालिदास, अंग्रेजी के वड्सवर्थ, कीट्स आदि। जबकि हिन्दी के विशेष प्रिय कवि है श्री सुमित्रानंदन पंत। साथ ही श्री अरविन्द के साहित्य की आलोचना भी कर रहे हैं जो निकट भविष्य में प्रकाशित होने की आशा है।

नये रचनाकार के लिए आपका संदेश है – विश्व के प्रति विधेयात्मक अभिगम रखो । जीवन को आनंदमयता, जिंदादिली एवं संतोष से जोओ ।

{7.1} **श्री सुलतान अहेमद :**

श्री सुलतान अहेमद का जन्म 1958 में अहमदाबाद में हुआ था । आपने एम०ए० किया । आप कई सालों से हिन्दी एवं उर्दू साहित्य से जुड़े हुए हैं । हिन्दी में आपने बहुत किताबें प्रकाशित की हैं +

आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हैं –

1.	कलंकित होने से पूर्व	{कविता संग्रह}	1982
2.	उठी हुई बांहों का समुद्र	{कविता संग्रह}	1989
3.	दीवार के इधर-उधर	{कविता संग्रह}	
4.	खामोशियों में बन्द ज्वालामुखी	{गज़लें}	1986
5.	कहानीकार निर्मल वर्मा	{आलोचना}	1989

आपने सन् 1970 से लिखना प्रारम्भ किया । आपको काव्य लेखन की प्रेरणा अपने गुरु श्री रामकुमार यादव से मिली । आपकी प्रथम रचना "सुख-दुःख" 1970 में लिखी जो अप्रकाशित है । किन्तु आपकी पहली प्रकाशित कविता "यह तो होता ही था" जो 1977 में विप्लव {पटना} से प्रकाशित हुई । अपनी रचना प्रक्रिया के विषय में आपका मंतव्य है कि "यह दिमागी ख़लल से मिलती जुलती चीज़ है ।" आप पारम्परिक रूप से काव्य के दोनों पक्ष पर बल देते हैं । आपके काव्य का मूल लक्ष्य इहलौकिक जीवन दृष्टि है । आपके मतानुसार आपके कवित्व के स्फुरण में भीतरी उलझनें एवं बाहरी मुसीबतों का हाथ रहा है । आपकी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन और कल्पना दोनों है । आप इस बात को स्वीकारते हैं कि किसी रचना को पूरा करने के बाद भी उसमें और सोचने समझने की गुंजाइश रहती ही है । आप इस बात से भी सहमत है कि रचना-प्रक्रिया के दौरान बाहर और भीतर की यथार्थताओं के पहले से लगाए गए

अर्थ फीके पड़ने लगते हैं, उनके स्थान पर नये आत्म विस्मृतकारी अर्थ उभरते हैं और हमें सत्य के निकट से निकटतर पहुँचने का आभास मिलता है । आप सर्जन के साथ विवेचन धर्म में भी रुचि रखते हैं । आपकी राय है कि आज की कविता में घटना का इस्तेमाल हो रहा है जिससे कविता समृद्धि पाती ही है ।

राज्याश्रय के विषय में आपका मंतव्य है कि राज्याश्रय कोई बुरी बात नहीं है किन्तु आज की राज्य व्यवस्था कला विरोधी है । यही कारण है कि आप राज्याश्रय को साहित्य के हित में नहीं मानते परन्तु आप राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में अनिवार्य रूप से जुड़े रहने के पक्ष में हैं । आप इस बात से भी सहमत है कि किसी भी कवि को सामाजिक एवं राजनैतिक हलचलों में जहाँ तक हो सके सम्पृक्त होना आवश्यक समझते हैं ।

आपकी अपनी रचनाओं में विशेष प्रिय रचना "दीवार के इधर-उधर" है क्योंकि यह लम्बी रचना है । आपके प्रिय कवि कबीर, निराला, मुक्तिबोध, धूमिल, दुष्यन्त, मीर, गालिब, फ़ैज़ आदि हैं ।

आजकल आप आलोचना लिख रहे हैं । निकट भविष्य में आपके तीन काव्य संग्रह प्रकाशित होने की संभावना है ।

§72§ श्री मोहनभाई भावसार :

बचपन से गाँधी विचारधारा और देशभक्ति का रंग लगने से व्यक्तिगत जीवन में और शिक्षा क्षेत्र में विशिष्ट बने रहे । आप 1972 में स्वाधीनता की रजत जयंती निमित्त सम्मानित किये गए थे । आपको 1961 में प्रयाग से "साहित्यरत्न" की उपाधि प्राप्त हुई है ।

आपने 1945 से लिखना प्रारम्भ किया । आपको काव्य लेखन की प्रेरणा प्रिय कवियों के काव्यों को पढ़ने से मिली । आपकी प्रथम रचना आज़ादी पर लिखी हुई थी जो आज तक अप्रकाश्य है । आपके मत से आपकी अपनी काव्य रचना प्रक्रिया के मूल में कोई व्यथा – कथा – संवेदना रहती है जो जगत को भुलाकर, भीतर से कुछ अपने आप लिखने की प्रेरणा देती है । आप काव्य के

आप काव्य के कथ्य पक्ष पर विशेष बल देते हैं । आपकी रचनाओं में आपका मूल लक्ष्य हृदय के भावों को शब्दबद्ध करके संतुष्टि पाना एवं समाज को कुछ देना रहा है । अपने कवित्व के स्फुरण में भीतरी तौर से आध्यात्म चिन्तन और बाहरी तौर से देशप्रेमियों एवं निःस्वार्थी समाज सेवकों से आपको प्रेरणा मिलती रही है । आपकी कविताओं का आधार यथार्थ और कल्पना दोनों का मिश्रण रहता है । आप कृति को कृतिकार की एक पहचान मानते हैं । आपके मंतव्य से निजी दृष्टिकोण को ही आपने काव्य का विषय बनाया है । लय को आप काव्य में अनिवार्य मानते हैं । आपके विचार से योग्य समय पर योग्य जगह पर किसी भी घटना का इस्तेमाल काव्य को समृद्धि प्रदान करता ही है । आलोचकों के मामले में आप तटस्थ है । आपको सर्जन के अतिरिक्त विवेचन में भी रूचि है ।

राज्याश्रय के विषय में आपकी राय है कि"राज्याश्रय की चाह से साहित्य और साहित्यकार का अवमूल्यन होता है परन्तु राज्य का फर्ज़ बनता है कि साहित्यकार की सुविधा का ख्याल रखें । उसके सात्त्विक सर्जन कार्य का स्वागत करें ।" राजनीति को जीवन अनुभव और रचना में आप कुछ कुछ अंशों तक जुड़ा रहना अनिवार्य मानते हैं । आपके विचार से किसी को सामाजिक एवं राजनैतिक हलचलों से हो सके तो अलिप्त रहना चाहिए ।

प्रसाद, गुण और गेय तत्त्व के कारण श्री मैथिलीशरण गुप्त, व्रजभाषा के माधुर्य के कारण सूरदासजी, संवेदन और भक्ति रस अध्यात्म के कारण उमाशंकर और नरसिंह मेहता और उत्तम प्राकृतिक वर्णन के कारण कालिदास आपके विशेष प्रिय कवि हैं ।

आजकल आप बच्चों के लिए गीत लिख रहे हैं । दो गुजराती कृतियों पर भी आप काम चल रहा है -

1. पानखर ना रंग
2. प्रतिकाव्य

गुजरात शुरू से ही सेवा साधना और रागात्मक कवि के लिए प्रसिद्ध रहा है । महात्मागांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, महर्षि दयानन्द सरस्वती, जैसे सपूत भारतीय आत्मा की आवाज बनकर देश के इतिहास के अविस्मरणीय भूमिका निभानेवाले महापुरुषों के रूप में याद किए जायेंगे । समय की पुकार का कवि इन्हीं महानुभावों का अनुगामी प्रतीत होता है । गुजरात के आधुनिक काव्य में देशभक्ति एवं राष्ट्रीयताभियोजन रचनाओं की भी एक तगड़ी प्रवृत्ति रही है । रामअवधेश त्रिपाठी, अम्बाशंकर नागर, रमाकांत शर्मा, दक्षित बुच, बड़ौदवी आदि की कविताओं में इन भावनाओं का अनुभव होता है । "समय की पुकार" में कवि की 50 कविताओं का संकलन किया गया है । इन कविताओं का मूल विषय देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव विश्वशांति आदि है । "सिर्फ हृदय से उमड़े हुए भाव हैं, अतः काव्य के रूप में न देखा जाय । कुछ घटनाओं से व्यथित होकर बहुत कम समय में लिखी गई ये रचनाएँ हैं । फिर भी गाने के लिए अनुकूलता रहे इसका ध्यान रखा गया है ताकि युवावर्ग के काम आ सके ।"

युवा जगत के लिए आपका संदेश है -

"इस राष्ट्र के उत्थान में
 तुम पूर्ण शक्ति जोड़ दो
....गम निराशा छोड़ दो
 दुर्भाव मन से तोड़ दो
आया समय आगे बढ़ों, सबके दिलों को जोड़ दो ।

{73} **अंजना संधीर :**

अंजना संधीर का जन्म 1960 में उत्तर प्रदेश के रुड़की में हुआ था । आपने एम०ए०, पी०एच०डी० किया । आपके प्रकाशित पुस्तकें निम्नलिखित हैं -

1. बारिशों का मौसम {गज़ल संग्रह} 1993
2. इज़ाफा {गज़ल, संपादन तथा लिप्यांतरण उर्दू से हिन्दी में} 1993

आप कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित हुई हैं । आप गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत हुई हैं ।

§24§ **श्री कुंदन माली :**

श्री कुंदन माली का जन्म 1957 में राजस्थान के उदयपुर में हुआ । आपने एम०ए० §अंग्रेजी§, एम०ए० §इतिहास§ एम०फिल०, बी०जे०एम०सी० किया । आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हैं :-

1. इतने दिनों तक §काव्य संग्रह§ 1989
2. कोहरे का नकाब §अनु० इतालवी कविताओं से§ 1990
3. जग से ले-खो §काव्य संग्रह§ 1991
4. सर्जन का अंतरंग §आलोचनात्मक निबंध§ 1994

विभिन्न हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविता, लेख, समीक्षाएँ, अनुवाद, समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं । आकाशवाणी से भी आप जुड़े हुए हैं ।

आपने लिखने का आरंभ 1987 से किया । समाज एवं परिवेश, समय का दबाव और आन्तरिक द्वन्द्व ने आपको काव्य लिखने की प्रेरणा दी । आपकी प्रथम काव्य रचना 1987 के प्रकाशित काव्य संग्रह "इतने दिनों तक" में संकलित हुई जिसका नाम है "नादिर तुम जिन्दा हो" । आपके काव्य विकास के विभिन्न चरण है - व्यंग्य परक कविता, संवेदनापूर्ण कविता एवं सांस्कृतिक पारिवारिक टूटते मूल्यों से सम्बन्धित कविता ।

अपनी काव्य रचना प्रक्रिया स्पष्ट करते हुए आपका मत है कि मानसिक उद्वेलन, दूसरों की पीड़ा और परिवेशगत दबाव सब एक साथ मिलकर काव्य रचना प्रक्रिया के मूल उत्स बनते हैं । आप किसी एक पक्ष पर बल नहीं देते अपितु आपके कथनानुसार कथ्य और शिल्प के अपूर्व समन्वय से ही कोई कविता सार्थक कविता बनती है । अन्तर्विरोधों की पहचान करा कर उसे सुन्दर और मानवोचित समाज की स्थापना के क्रम में करने का उपक्रम ही आपकी कविता का लक्ष्य रहा है । आपके कवित्व के स्फुरण में समाज और परिवेश के पाखंड, दमन, अन्याय और विषमता आदि आन्तरिक एवं बाह्य रूप से प्रेरणादायी रहें । आपका मंतव्य है कि "केवल निजी दृष्टिकोण या कोरी भावुकता से साहित्य की रचना नहीं हो सकती । इसके लिए निजी अनुभूति, जीवनानुभव, संवेदनशील दृष्टि और अपने युग परिवेश से संपृक्ति की आवश्यकता होती है ।" आपका मत है

कि लय के अभाव में काव्य की रचना ही असंभव है । आपकी कविताओं के पात्रों का आधार यथार्थ जीवन ही अधिक है । आप इस बात से सहमत हैं कि किसी भी रचना को पूरा करने के पश्चात् भी उसमें और सोचने समझने की गुंजाइश रहती ही है ।

मनुष्य जीवन और जगत के प्रति आपका दृष्टिकोण है कि एक समर्थ रचनाकार होने के नाते वह अपनी रचना में मौजूदाजीवन को और भी बेहतर बनाने की रचनात्मक पहल करें और इस जगत को और अधिक अथवत्तापूर्ण, विषमता विहीन और जीवन्त बनाए ।

आप किसी साहित्यकार के लिए राज्याश्रय पाना उचित नहीं मानते हैं । आपको सर्जन एवं विवेचन दोनों में रुचि है । आपको अपनी रचनाओं में विशेष रूप से "फैसला आपके हाथ" विशेष प्रिय है । आपके प्रिय कवियों में अंग्रेजी में कीट्स, कालरिज, टॉमस ग्रे आदि हैं । हिन्दी के विशेष प्रिय कवियों में कबीर, मीरा, रहीम, रसखान, दिनकर, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, मुक्तिबोध आदि हैं ।

आजकल आप आलोचना की दूसरी पुस्तक लिख रहे हैं । निकट भविष्य में "मात्रा में शब्द" शीघ्र ही प्रकाश्य है ।

§75§ <u>माणिक मृगेश :</u>

डॉ0 माणिक मृगेश का जन्म 1952 में उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में हुआ था । आपने एम0ए0, एम0फिल0, पी0एच0डी0 [redacted] आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें राजभाषा विविधा §भाषा विज्ञान§ 1992, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी समय-समय पर आपकी व्यंग्य एवं हास्यपूर्ण रचनाएं आती रही है । आप भारतेंदु भान पुरस्कार से सम्मानित हुए हैं । काव्य गोष्ठियों में ब्रजभाषा के मधुर छन्दों से अभिभूत करने का जो सामर्थ "विष्णु विराट" में है वैसे ब्रज के छन्दों में पैनी व्यंग्यों से पराभूत करके देने की कला में आप माहिर है ।

§76§ **श्री रामदरश मिश्र :**

डॉ० रामदरश मिश्र का जन्म गोरखपुर जिले के डुमरी गाँव में सन् 1925 में हुआ । आप आधुनिक हिन्दी काव्य जगत के ऐसे हस्ताक्षर हैं जिनका एक या दूसरे रूप में गुजरात में गहरा सम्बन्ध रहा है । आपकी जन्मभूमि भले ही गुजरात न रहा हो परन्तु कर्मभूमि गुजरात अवश्य रही है । आज भी आप गुजराती भाषा, साहित्य एवं गुजरात की समस्त अस्मिता के गहरे चाहक एवं प्रशंसक है और अपना सम्बन्ध गुजरात के साथ मानने में गौरव समझते हैं । आपने अपनी "आत्मकथा" में भी गुजरात में अपने कार्यकाल का गौरवपूर्ण निरूपण किया है । आप गुजरात को अपना "दूसरा घर" मानते हैं । आप एक लम्बे अरसे तक अहमदाबाद सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज से जुड़े रहे और यहीं रहकर आपके प्रारम्भ के दो काव्य संग्रह §बेरंग बेनाम चिट्ठियाँ§§1962§ पथ के गीत§1959§का प्रकाशन हुआ । आपकी प्रकाशित पुस्तकें §कृतियाँ§ हैं -

1.	पथ के गीत	§कविता संग्रह§
2.	बेरंग बेनाम चिट्ठियाँ§	§कविता संग्रह§
3.	पक गई है धूप	§कविता संग्रह§
4.	कंधे पर सूरज	§कविता संग्रह§
5.	दिन एक नदी बन गया	§कविता संग्रह§
6.	§जुलूस कहाँ जा रहा है	§कविता संग्रह§
7.	मेरे प्रिय गीत	§कविता संग्रह§
8.	बाजार को निकले हैं लोग	§गज़ल संग्रह§

आपका काव्य शिल्प पारदर्शी व्यक्तित्व की तरह खुला है । आपकी भाषा में आंचलिकता की जीवन्तता है । बिम्बधर्मिता, चित्रात्मकता और सुन्दर प्रतीक आपकी काव्य प्रतिभा के परिचायक है । आप स्वयं भी स्थलों एवं समाज से जुड़ते-टूटते रहे । आपकी कविता रागात्मकता की स्रोत का गौरव करती है । उसमें लोकगीतों की लय की सहज प्रवाहिता है ।

§77§ श्री भानुशंकर मेहता :

वाराणसी में अवस्थित डॉ० भानुशंकर मेहता भी मूलतः गुजराती नागर ब्राह्मण है । उनके पारिवारिक सम्बन्ध आज भी गुजरात के साथ बरकरार है । आपने कई गुजराती कृतियों का हिन्दी अनुवाद करके गुजराती एवं हिन्दी की सराहनीय सेवा कीहै । आप व्यवसायिक पैथोलॉजिस्ट हैं, किन्तु व अंग्रेजी, संस्कृत, गुजराती व हिन्दी साहित्य से गहरी रुचि रखते हैं । आपका "आस्था के गीत अनास्था के बीच" नामक काव्य ग्रंथ सन् 1988 में वाराणसी से प्रकाशित हुआ है । आपकी कविताओं में आध्यात्म एवं तांत्रिक अनुभूतियों की सटीक एवं समर्थ अभिव्यक्ति हुई है । अतः आधुनिक हिन्दी काव्य की आधुनिक कविता के आप अग्रगण्य कवि हैं ।

§78§ नरेश मेहता :

श्री नरेश मेहता का जन्म 1922 में हुआ है । आपकी हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में एवं हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में बहुत बड़ा योगदान रहा है । आपकी प्रकाशित पुस्तकें –

1. संशय की बात §काव्य संग्रह§
2. बन पाखी सुनो §काव्य संग्रह§
3. महा प्रस्थान §खंड काव्य§
4. शबरी §खंड काव्य§
5. प्रसाद पर्व §खंड काव्य§
6. समय देवता §काव्य संग्रह§

आपके काव्य संग्रह में आपकी भाषा समृद्धि एवं उत्कृष्टता दृष्टिगत होती है । आपको विविध संस्थाओं द्वारा पुरस्कार मिले हैं और आप सम्मानित भी हुए हैं । विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में भी आपकी रचनाएँ समय समय पर प्रकाशित हुई हैं ।

हिन्दी जगत में आपने अपनी एक अलग जगह बना ली है जो गौरवपूर्ण है ।

"संशय की एक रात" में युद्ध की अनुपादेयता को केन्द्र बनाकर राम के प्रजा व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने की चेष्टा मिलती है । प्रस्तुत काव्य में राज्य, राज्य व्यवस्था और उस व्यवस्था के दर्शन की समानवीय प्रकृति एवं प्रवृत्ति का स्पष्टीकरण मिलता है ।

रामायण, वैयक्तिक चक्रव्यूह की करुण कथा है तो महाभारत, सामाजिक व्यूहों – प्रतिव्यूहों की अनन्त त्रासद महागाथा । एक में दुःख भोगते मनुष्य का एकान्त बाँसीख है तो दूसरा युद्धकामी मानवों का दुर्धर्ष वाद्यवृन्द । दोनों के केन्द्र में राज्य है । "संशय की एक रात" में राम की दैवीयता की मानवीय सुगंध है तो "महाप्रस्थान" में कृष्ण, जो सर्वमान्य किला पुरुष है उनकी लीलामयता का अंकन है । "शबरी" की कथा निम्नवर्ग की एक साधारण स्त्री के आत्मिक एवं आध्यात्मिक संघर्ष की एक ऐसी कथा है जो रामायण के शीर्षस्थ पात्रों, चरित्रों में भी अपनी पहचान बनाये रखती हैं । जैसे –

थीं तुलग उठीं शबरी में
योगाग्नि पुण्य ज्वालाएँ
था दिव्य तेज इस मुख पर
सूरज की स्वर्ण प्रभाएँ ।[1]

---

1. श्री नरेश महेता – शबरी – पृ0 40